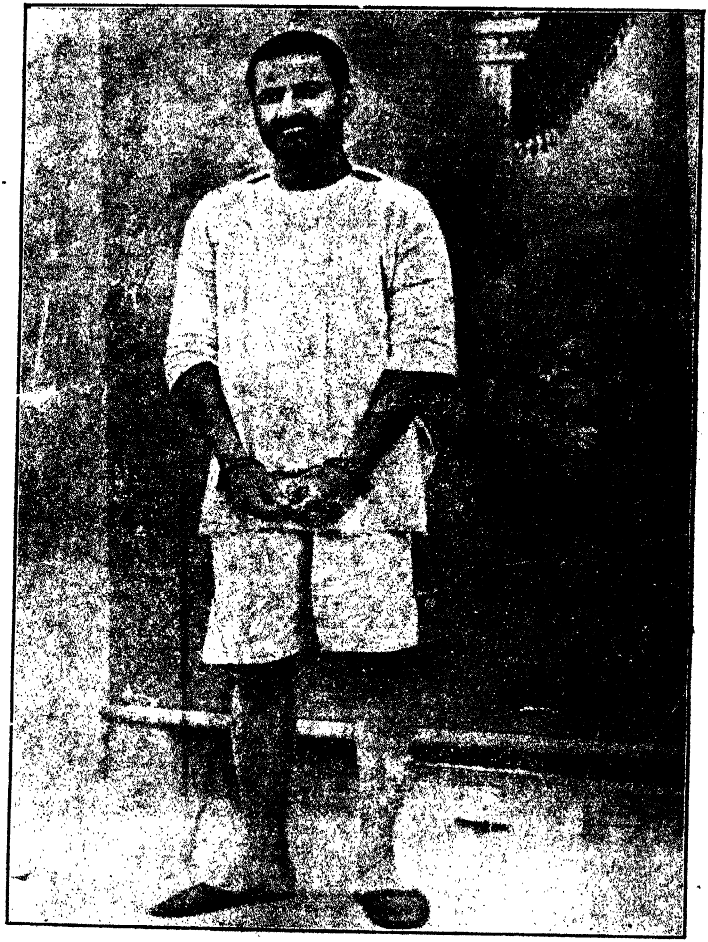
कालेपानी की कारावास कहानी



मूल्य १॥)

भाई परमानन्द एम. ए.

सरस्वती आश्रम ग्रन्थमाला ४९

ओ३म्

कालेपानी की कारावास कहानी

अर्थात्

देवता-स्वरूप भाई परमानन्दजी एम.ए. की

आप बीती ।

जिस में भाई जी ने स्वयं नौलखा की हवालात
से कालेपानी जेल तक का हृदय वेधक
और करुणा-जनक वृत्तान्त लिखा है ।

प्रकाशक

राजपाल—मैनेजर

आर्य्य-पुस्तकालय व सरस्वती आश्रम

लाहौर ।

श्रावण संवत् १९७८ वि०

मुद्रक—एजुकेशनल प्रिंटिङ्ग वर्क्स, लाहौर ।

प्रथमबार १०००] [मूल्य १॥)

भूमिका

बन पर्वत भुवि जांहि, मन माना पक्षि चरे।
कत दुख पंजरे मांहि, वाकी वह क्या गत लखे ॥

कथा कहानियों में, इतिहास लेखक यात्रियों की यात्रा पत्रियों में और उच्छृङ्खलित बादशाही ज़मानों की दास्तानों में, प्रायः यह बातें सुना करते थे, कि किस प्रकार देशों, मनुष्यों और संसार के शुभचिन्तकों को आयुभर के लिये कैद कर दिया जाता था, और उन्हें दुख दे२ कर मार डाला जाता था। इंगलैंड के महां मंत्री ग्लेडस्टोन की उस आवाज़ को भी सुना था, जो उसने महाराज नेपल्ज़ के भयानक जेलखानों के संबंध में उठाई थी।

ज़ार रूस के कैदखाने साइबीरियाके भी करुणामय वृत्तान्त पढ़े थे, परन्तु हमारी यह धारणा कदापि न थी कि हमारे भारत वर्ष के अंदर हमारे हृदय पर शासन करनेवालों, हमारे लिये ही जीवित रहने वालों, और धर्म जाति व देश पर अपने आपको निछावरकर देने वालों के साथ हमारे सामने वही अनुमानिक व्यवहार किये जायंगे जो हम कथा कहानियों में सुना करते थे, और वह सलूक ये निगोड़ी आंखें देखेंगी, यह अभागे कान सुनेंगें, और यह वज्र हृदय इन्हें सहकर चुपके हो रहेंगे।

१९१५ ई० के हत्यारे दिनों में जब भाई परमानन्द जी को गिरिफ़तार किया गया, उन दिनों पंजाबियों पर कुछ ऐसी विभाषिका छागई थी कि कोई चूं तक न कर सकता था: और यदि कोई करता भी था, तो सुनता कौन ?

डार डार और पात पात पर, चुन चुन तोड़े फूल ।
माली का लखि निठुर मन बुलबुल के जिय शूल ॥

जब कभी मैं ऐन्डमान द्वीप का चिन्तन करता हूं तो मेरी आंखों के सामने एक रोमाञ्च कारी, अत्यन्त भयानक भू भाग आ जाता है, जो चारों ओर पानी से घिरा हुआ है, जिसके अंदर घने जंगल हैं, और उनके बीचों बीच एक डरावना भारी पत्थरों का किला बना हुआ है,जिसके अंदर असंख्य कोठड़ियां हैं, जिनकी चिमनियों से अग्नि का नहीं प्रत्युतः दग्ध हुए हृदयों का धूआं निरन्तर निकलता है । और जिनके अंदर उन सुशील नवयुवकों के जीवन नष्ट किये जारहे हैं, जो कदाचित् इस अभागे भारत में जन्म न लेते तो किसी स्वतंत्र देशके महा मंत्री, किसी भारी सेना के कमांडर इनचीफ़ अथवा किसी बड़े शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर होते । परन्तु मेरी लेखनी उस समय कांप उठती है, और हृदय में धड़कन होने लगती है, जब मैं उन निर्दोष निरपराध और भोले भाले कैदियों का खयाल करता हूं जो वहां हाथ पाओं बंधे हुए पड़े २ अपने जीवन के दिन गिन रहे हैं । मैं उनकी विपत्ति का कोई अनुमान नहीं लगा सकता, क्योंकि मैं उस पदवी को प्राप्त करने

से वञ्चित हूं, जिस पदवी पर पहुंच कर उन भोगों को भोगा जा सकता है। भला एक स्वतंत्र मनुष्य एक पिंजरे में फंसे हुए मनुष्य की अवस्था का अनुमान कैसे लगा सकता है।

वन पर्वत भुवि जांहि, मन माना पक्षि चरे।
कत दुख पंजर मांहि, वाकी वह क्या गति लखे॥

पृथिवी पर नर्क।

लंडन की पार्लीमेन्ट के मेम्बर कर्नल वेजवुड भी उस समय कांप उठे, जब आपने भाई परमानन्द जी से सरकार अंगरेज़ी के जेल येन्डेमान के विषय में तड़पा देने वाले वृत्तान्त सुने, और आपने उस निकृष्टतर पापमयी भूमि के सम्बन्ध में डेली हैरल्ड में अपनी पुकार को लिखा कि :—

एक कोमल आवाज़ वाला देवता स्वरूप सफ़ेद पोश लाहौर से मेरे साथ गाड़ी में बैठा, और बैठते ही मुझे बतलाने लगा कि ऐराडेमान कैसा स्थान है, और उसने वहां पांच वर्ष तक किस प्रकार का जीवन व्यतीत किया। वह एक राजनैतिक (पोलीटिकल) कैदी था। और उस से पहले लाहौर यूनिवर्सिटी में हिस्ट्री का प्रोफ़ेसर था। वह गत दिसम्बर में राजकीय दया घोषणा के अनुसार मुक्त किया गया था।

जो कुछ उसने बतलाया वह उस की आवाज़ के धीमा पन और क्रोध की अविद्यमानता के कारण भावुकता का दृष्टि

से सत्य जान पड़ता था । मैं समझता हूं, कि वह अक्षरशः सत्य है, क्योंकि भारत सरकार ने ऐन्डेमान के सम्बन्ध में एक विशेष रिपोर्ट तय्यार करवाई है और वह (सरकार) इस विषय में चिंतित प्रतीत होती है । यह रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की गई है ।

ऐन्डेमान में बारह तेरह हज़ार के लगभग कैदी हैं । कई एक तो चढ़ती जवानी में ही जाते हैं. और जो मजबूत नहीं हैं, अथवा जो चालीस वर्षसे कम हैं, वे वहां नहीं भेजे जाते । वहां की मृत्यु संख्या भारत वर्ष के जेलखानों की अपेक्षा जिन में सब प्रकार के कैदी भेजे जाते हैं, दुगनी है, और कोई भी भारतीय जेलखाना अरोग नहीं कहा जा सकता ।

जब एक बार कैदी मलेरिया व पेचिश से बीमार हो जाते हैं, तो फिर उसी जल वायु में उससे छूट नहीं सकते । परन्तु उसने (मेरे सफेदपोश साथी ने) जलवायु और खुराक की खराबी का ज्यादा ज़िक्र नहीं किया, मानो यह बातें आवश्यकीय हैं, वह मुझ से असली नर्क का वर्णन करना चाहता था ।

इसके पश्चात् कर्नल वेजवुड ने वहां आचार से गिरे हुए कुकर्मों का भयानक चित्र खेंचते हुए बतलाया है कि "वर्मन लड़के रण्डियों के तौर पर बर्ते जाते हैं" और इसी प्रकार की दूसरी आसुरी चेष्टाएं हैं, जो वहां के अधिकारियों को मालूम हैं । फिर कर्नल साहब लिखते हैं :—

इस बातका भी ज़िक्र कर देना चाहिये कि कैदियों को

कुछ उजरत भी मिलती है, जिस से जुआ और कर्ज़ की खराबी इस नर्क के पापों को और भी दुगनी कर देती है। टोलियों के जमादारों और पासबानी की ओर से भारी रिश्वत ली जाती है, और जब एक आदमी अपने आपको सब प्रकार के अपमान के लिये बेच सकता है तो रिश्वत देने की अयोग्यता कोई बड़ा उज्र नहीं है। पेण्डेमान में अभी पचास से अधिक पोलिटिकल कैदी पड़े सड़ रहे हैं, जिन्हें स्वतंत्रता दिलाने में राजकीय दया भी असफल रही है। इस धीमी आवाज़ वाले आदमी ने मुझे बतलाया कि इसने किस किस तरह भूखे रहकर अपने को मारने की चेष्टा की और किस तरह से उस भले मानस स्काटस डाक्टर ने इसे बचाया। इस आदमी की कहानी से मालूम होता है कि इस ने भारतवर्ष का एक इतिहास लिखा था, जिसको सर माईकल ओडवायर की हुकूमत बाग़ियाना समझती थी। इसने मुझे बतलाया कि इसका केवल यही अपराध था। इसका यह अपराध था या न था। यह एक साधारण बात है, अब इस की मुझ से केवल यह विनती थी, कि मैं इसके साथियों को छुड़ाने का यत्न करूं।

हस्पतालों और कैदखानों के डाक्टर सम्पूर्ण कष्टों को कम कर देते हैं, स्वदेश बंधु गणेश सावर कर इस नर्क के दस वर्ष के जीवन के पश्चात् हस्पताल में अपने जीवन की समाप्ति की प्रतीक्षा कर रहा है। इस संसार से छूटकर दूसरे लोक में जाना है, जहां न कोई अत्याचारी है, न कैदखाने हैं, प्रत्युतः

अपने जैसे भद्र पुरुषों की सोसाइटी है जो कि अपने से पहले चले गए हैं।

इस चिट्ठी को पढ़कर श्रीयुत ऐन्ड्रयूज़ भी तड़प उठे और आपने एक ज़बर्दस्त चिट्ठी इस नर्क के विरोध में लिखी।

ऐसी भयानक और रोमाञ्चकारी जेल की कहानी पढ़ने के लिये आप के सामने रखी जाती है, जो देवता स्वरूप भाई परमानन्दजी एम. ए. के पवित्र हाथों ने लिखी है। यह कहानी क्या है, मैं कहूंगा यह भाई जी की साधुता, भोला पन, स्पष्ट वादिता, सच्चाई, सहन शीलता और बलिदान का मुंह बोलता चित्र है और इन गुणों के लिये जो मूल्य उन्हें देना पड़ा, उसका भी वर्णन किया गया है, जैसा कि हर एक जानने वाले को मालूम है, भाई परमानंदजी वैदिक धर्म के सच्चे भक्त है, बचपन से उनको आर्य्य समाज की लगन लगी और यह लगन ऐसी सच्ची सिद्ध हुई कि सहस्रों परिवर्तन और दुःखों के पश्चात् भी इसमें वही लगन, उत्कंठा और वही तड़प है। बचपन से ही आर्य्य समाज और वैदिक धर्मको उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया, उसी के लिये आपने बचपन से निकलकर युवा-वस्था में पाओं रक्खा और अपनी बहुमूल्य जवानी को स्वामी दयानन्द के मिशनको पूर्ण करने के लिये लगा दिया। दयानन्द कालिज लाहौर के जीवनावधि सदस्य (लाईफ मेम्बर) बनने के साथ मिश्नरियोंकी तरह सारे पंजाब, फिर मद्रास, बर्मा और अफ्रीका तक वैदिक धर्म का संदेश पहुंचाया। ऐसे होनहार नवयुवक और साथ ही हृदय को अपनी ओर खेंच लेने वाली

शक्ति रखने वाले नवयुवककी सरगर्मियों को देखकर गवर्नमिंट कांपी और उसने इन सारी सरगर्मियों को बंद करने के लिये यत्न करना शुरू कर दिया। गवर्नमिंट कहती है कि भाई जी को इस लिये गिरिफ़तार किया गया कि उन पर सरकार के विरुद्ध काम करने का संदेह था। परन्तु हमारा विश्वास तो यह है कि गवर्नमिंट ने भाईजी को इस लिये विपत्ति में डाला क्योंकि वे आर्य्य समाज के उद्‌भट प्रचारक थे। उनके इस संग्राम ने, योग्यता ने और कार्य्य क्षमताने ही उन के ऊपर यह विपत्ति ढाही।

अति मधुरी अति सुन्दरी, अति गुण सीता नार।
दश कंधर पाले पड़ी, अति मत दे कर्तार॥

भाई जी अपने गुणों के कारण ही इस घोर विपत्ति में पड़े, यह सत्य है, और इस सच्चाई को भाई जी के मुकद्दमे के सरकारी वकील मिस्टर बीवन पिटमैन साहबने भी स्वीकार किया है। और उन्होंने आवश्यक समझा कि गवर्नमिंट पंजाब को इस मुकद्दमे को उठा लेने की सिफ़ारिश करें और उन्होंनें अपनी अंतिम वक्तृता में स्पष्टतया कह दिया कि भाई जी के विरुद्ध जो मुकद्दमा है, वह बहुत कमज़ोर है।

परन्तु सरकार को इस बात की परवाह नहीं थी कि मुकदमा कमज़ोर है अथवा ज़ोर वाला, उसने तो इस देवता का मंदिर एन्डेमान द्वीप में बनाना था, और वहीं जा बनाया।

आपकी गिरिफ़तारी ने सारे देश के अंदर सनसनी पैदा

करदी। आर्य्य समाजियों पर तो मृत्यु का सा आतंक छागया और मुझे इस अपराध के स्वीकार करने में किंचित्‌मात्र भी हिचकिचाहट नहीं, जो अपराध इस अवसर पर आर्य समाज के हाथों हुआ, जिसने अपने सच्चे प्रचारक और देवता के लिये कोई विशेष दुख दर्द ही प्रगट नहीं किया प्रत्युतः कायरता के अंधकार में सो गई।

आप के देश निर्वासन के दुःखमय दिनों की कथा और आप के परिवार सम्बन्धी करुणामयी और रोमाञ्चकारिणी घटनाएं पत्थर से पत्थर हृदय को भी आंसुओं से नहला देने वाली हैं। वह कौनसा मनुष्य है जिसके हृदय हो और उसके अंदर से अनुभव की शक्ति क्षीण न हो गई हो और वह सत्यव्रती मिस्टर ऐन्ड्रयूज़ की उस चिट्ठी को पढ़े जो उन्होंने भाई जी के परिवार के सम्बन्ध में लिखी थी और फिर भी उसके नेत्रों से आग और गर्म २ आंसु न टपक पड़े।

श्रीयुत ऐन्ड्रयूज़ की उस चिट्ठी की आवश्यक बातें आप को याद दिलाने के लिये लिखी जाती हैं :—

भाई परमानन्दजी के मकान पर।

"लाहौर के गुंजान शहर में बेशुमार तंग गलियां ऐसी हैं, जिनके कमरों में कभी सूरज भगवान की रौशनी नहीं पहुंचती। एक ऐसी तंग गली के एक अंधेरे कमरे में पिछले दिनों एक दिन सवेरे मैंने भाई परमानन्द की स्त्री और उनके दो छोटे बच्चों को देखा।

यह सर्द और अंधेरा कमरा बहुत ही छोटा था और मुझे मालूम हुआ कि बस यही इन बेचारों का घर है। मकान की अवस्था इतनी कंगाली की थी कि मैं वर्णन नहीं कर सकता और इसी में भाई परमानन्द की स्त्री अपने बीमार बच्चे को लिये उसकी टहल कर रही थी। बड़ा बच्चा मां के पास अत्यन्त पीला मुंह व्याकुल और चिन्तित बैठा था।

गोद वाले बच्चे को हलका बुखार आता था और उसकी मां ने बतलाया कि इससे बड़ा बच्चा केवल छ महीने हुए तपदिक (क्षयी रोग) से मर चुका है। मेरे लिये इस प्रकाश रहित अंधेरी कोठड़ी और कुटुम्ब की इस दुखित अवस्था से यह समझ लेना सहज था कि बड़ी लड़की इस तरह ही भयानक रोग में जकड़ी गई होगी, और फिर जब मुझे बताया गया कि गोदी के बच्चे को भी रोज का हलका बुखार रहता है, तो मेरे लिये यह जानना कठिन न था कि तपदिक का भयानक रोग बाकी बच्चों तक भी फैल रहा है।

पूछने पर मालूम हुआ कि भाई परमानन्द की स्त्री केवल १७ रुपया महीने वेतन में निर्वाह करती है, जो उसे आर्य्य समाज की एक हिन्दी पाठशाला में पढ़ाकर मिलता है। वीर रमणियों के समान इस वीराङ्गना ने अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिये संग्राम किया, परन्तु हा शोक! कितना भयंकर संग्राम!! चार वर्ष से अधिक उस ने अपनी कमाई से कुटुम्ब का पालन किया, अपने कुटुंब के लिये आजीविका निमित्त वह प्रतिदिन पाठशाला को आती और इन

बच्चों को अपने साथ ले जाती है, क्योंकि घर में इनकी देख भाल करने वाला कौन है ?

जब भाई परमानंद को सज़ा दी गई, तो उनकी स्त्री से प्रत्येक वस्तु जो उसके पास थी, छीन ली गई थी। घर के छोटे २ बर्तन भी जिन्हें भारतवर्ष की देवियां प्रतिदिन काम में लाती हैं, वे भी लिये गए। कितना कठोर कानून है कि पति व पिता कोई अपराध करे और उसके पोलिटिकल दोषों के लिए उसकी सम्पत्ति छीनकर उसकी स्त्री और बच्चों को भी दुख के गढ़े में गिरा दिया जाए। सर्वस्वहरण "ज़ब्ती आयदाद" की सज़ा आज से एक सौ साल पहले उठ जानी चाहिये थी। यह अन्धकार के समय की निशानी है, और आश्चर्य है कि यह अब तक वैसी की वैसी बनी है। इस सूरत में यह सज़ा निर्दयता से इंतज़ामी सख्ती के साथ काम में लाई गई।

"हां, भाई परमानंद की एक वस्तु उनकी स्त्री के पास है, वे हैं अभ्यर्थना के एड्रेस, जो भाई जी को दक्षिण अफ्रीका जाने पर वहां के भारत निवासियों की ओर से दिये गये थे। वह ज़ब्ती जायदाद के पश्चात् दयानंद कालिज लाहौर की ओर से उनकी स्त्री को दे दिये गए थे। मैंने उन एड्रेसों के पेश होने और उन्हें प्राप्त करने के आनंद का मन में चित्र बांधा। महात्मा गांधी ने मुझे बताया कि भाई परमानंद का वहां जाना कितना उपयोगी सिद्ध हुआ और उनका उस समय का संदेश कितना अच्छा था।

"स्वयं मेरे साथ भाई जी की कभी भेंट नहीं हुई। परन्तु

उनके विषय में जो कुछ मैंने सुना है, उसको सामने रखकर मेरे लिये उनसे मिलना निस्सन्देह गौरव का कारण होगा। मुझे विश्वास है कि किसी तरह के कायरता के अथवा पतित कामों के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं। यदि कभी उनके विचार जो ढीले थे (क्योंकि मेरे सामने सारी शहादत नहीं हैं, इसलिए मैं कह नहीं सकता कि यह बात सिद्ध हुई थी वा नहीं) तो मेरे लिये अब यह बात साफ़ और स्पष्ट है कि उनकी सारी कार्य्यवाही सच्चाई की थी।

उनके पोलिटिकल विचार जो कुछ भी थे, एक तुच्छ व क्षुद्र मनुष्य कैसे नहीं प्रत्युतः एक आदर्श प्रेमी मनुष्य के थे। उनके ऐतिहासिक परिणाम एक विद्वान् पुरुष के से थे, जिन में उनका स्वदेश प्रेम और दृढ़ विश्वास कूट २ कर भरा हुआ था। परन्तु सच्ची और धर्म-सुधी सम्मति रखने वालों को दण्ड देकर ही तो ऐतिहासिक और पोलिटिकल सच्चाईयां प्राप्त नहीं होती।

मैंने भाई जी के वे पत्र जो उन्होंने काले पानी के जेल-खाने से लिखे हैं, देखे उनमें भी एक सच्ची आत्मा का सच्चा सन्देश पाया जाता है। इससे भी बढ़कर वे उच्चतर योग्यता और धर्म के रंग में रंगे हुए दिखाई देते है। सारे पत्रों में क्षुद्रभाव और घृणा का एक भी शब्द नहीं, और न एक भी ऐसा वाक्य है जो वीरता, सच्चाई और उदारता से रहित हो। जेलखाने में भी उनका अंतःकरण शान्त और सन्तुष्ट था, जिसे कैद भी उसे दूषित नहीं कर सकी।

यह पत्र पढ़ते हुए मुझे कई बार खयाल आया कि वर्तमान भारत के एक विद्वान् और उन्नतर योग्यता रखने वाले मनुष्य को नीच कैदियों के साथ जन्मभर के लिए जेल में रखना और उससे चक्की पिसवाना कितना क्षुद्र काम है। परमात्मा ने ऐसी प्रतिभा और मस्तिष्क सम्बन्धि ज्ञान मनुष्यत्व को ऊंचा और ऐश्वर्य शाली बनाने के लिये प्रदान किया है। क्या इसके अतिरिक्त मनुष्य इसे किसी दूसरे काम में नहीं ला सकता।

सरकार ने उनकी सारी सम्पत्ति को छीन कर मानो उनकी स्त्री और छोटे बच्चों द्वारा भी उनको दण्ड दिया है। क्या एक पोलिटिकल आदर्श प्रेमी मनुष्य को कोई रिआयत नहीं की जा सकती थी। बहुत समय हुआ, पुरातन काल के कठोर दण्ड हट चुके हैं, परन्तु क्या हमने अब तक मस्तिष्क सम्बन्धी कष्ट के प्रश्न पर भी विचार किया है, वह कष्ट जो मनुष्य के लिये, जीवित रहना असह्य कर देता है........।

अपने सारे जीवन में आदि से अंत तक भाई परमानंद अपनी भलाई के कारण अपने आपको संदेह से बचाए रखने में उपेक्षा करते रहे, इसलिये अमरीका के गुप्तचर उनको फंसाने में सफल हुए।

वह महा युद्ध जिस के ज़माने में भाई परमानन्द को ज़ब्ती जायदाद सहित आयु भर कैद की सज़ा दी गई थी, अब समाप्त हो गया। मुझे मालूम हुआ है कि बृटिश सरकार ने इजाज़त देदी है कि पंजाब सरकार को शीघ्र ही उन पोलि-

टिकल कैदियों को सज़ाओं के पुनर्विचार (नज़रसानी) कराने का अवसर मिलेगा, जिनको युद्ध के दिनों में सज़ा दी गई थी। ऐसे मनुष्यों में भाई परमानन्द की रिहाई से बढ़कर और किसी की रिहाई लोक व्यापी संतोष का कारण न होगी।

और निस्सन्देह श्रीयुत् ऐन्ड्रयूज़ ने इस सच्चाई को प्रगट करके मानो तीस करोड़ मनुष्यों के हृदयों की बात कह दी और अन्ततः ! सरकार का हृदय पसीजा, और भला पसीजता भी कैसे न, जब कि खामोश आहें लोहे के बलवान् शस्त्रों से अधिक प्रभाव रखती हैं, और फिर वे आहें जो सताये हुए, बर्बाद किये हुए और जलाए हुए दिलों से निकले। इधर यह हृदयों के अंदर हल चल हो रही थी, उधर २ पंजाब के घोर रक्तपात की घटनाओं ने लंडन तक के सिंहासन को हुला दिया, और डायर तथा ओडवायर की भूलों और अत्याचारों की सख्ती को कम करने के लिये पोलिटिकल कैदियों की आम रिहाई की घोषणा करनी पड़ी।

इस घोषणा को पढ़कर सबसे पहले और लोकव्यापी आवाज़ जो ऊंची हुई वह यह थी, कि भारतवर्ष फिर अपने शहीद के दर्शन करेगा। आर्य्य समाज रूपी माता एक बार फिर अपने सच्चे प्रचारक सपूत को अपनी गोद में लेगी, और भाई परमानन्द फिर एक बार दुखी दिलों को शान्त कर सकेंगे।

यह आशा बार २ बंधी और रह २ कर टूटती रही। इस घोषणा से लेकर भाई जी की रिहाई तक भारत के समा-

चार पत्रों, भारतीयों के हृदयों की विचित्र सी अवस्था रही। कभी यह टूटते थे और कभी बनते थे।। अंत में वह शुभ घड़ी आ पहुंची, वह शुभ मुहूर्त आ गया, जब सचमुच यह स्वप्न, ये आकांक्षाएं और यह कामनाएं पूरी हुईं। भाई जीने सन् १९२० ई० को मद्रास के तट पर पांव रखा, लाहौर पहुंचे और सारे देश में एक अलौकिक आनन्द और मस्ती की एक लहर फैल गई। जब हमने इस समाचार को सुना, देर तक भौंचक्के से खड़े रह गये आंखें खुली की खुली रह गईं, और पिछले पांचवर्ष की समस्त घटनाएं एक २ करके थियेटर के समा आंखों के सामने गुज़र गईं।

भारतवर्ष का कोई समाचार पत्र नहीं रहा, जिसमें भाई जी की रिहाई के सम्बन्ध में समाचार प्रकाशित न हुआ हो और जिसने पुलकित नयनों से अपने हृदय के फूल न चढ़ाएं हों।

कवियों ने कविताओं में अपने हार्दिक भावों को प्रगट किया। गद्यलेखकों ने गद्य में अपने मनको उनके सम्मुख रखा, एक आश्चर्य्य जनक दृश्य था, जो उन दिनों देखने में आया। एक कवि ने भाई जी को लक्ष्य करके लिखा :—

याद कर करके तुझे, खूने जिगर रोते थे।
आहो ज़ारी से न दम भर को कभी सोते थे।
जब कि बेचैन बहुत दर्द से हम होते थे।
सर पटकते थे मरे जाते थे जी खोते थे।

तेरे दीवानों ने आराम न पाया पल भर।
दश्तो कुहसार को नालों से उठाया सर पर॥
आज गुलशन पे नया रंग है आया तेरे।
मुल्क का राग हर इक भाई ने गाया तेरे॥
हमने हर दर्द को सीने से लगाया तेरे।
फिर से आराम है बीमार ने पाया तेरे॥
दिल है यह चाहता सीने से लगालूं तुझको।
शौक कहता है कि आंखों में छिपालूं तुझको॥

इससे प्रकट होता है कि जनता को आप से कितनी श्रद्धा और प्रेम है। परन्तु यह श्रद्धा और प्रेम भारतियों तक ही नहीं, प्रत्युतः जब आपकी रिहाई के समाचार अफ्रीका में पहुंचे, तो वहां के यूरोपियन मिस्टर जी विलियम्स का हृदय भी खिल उठा और आप ने स्नेह भरे शब्दों में भाई जी को लिखा—

आपकी कैद से रिहाई पर मुझे अतिशय हर्ष हुआ है। इस दुःख और कष्ट को सहन करके आप अपने प्यारे काम को और भी अच्छी तरह पूरा करने में सर्वथा स्वतंत्र और बलवान् हो गए हैं।

मेरी प्रबल इच्छा है कि जैसे मैंने १६०५ में मटिनर वर्ग में आपके चरणों का दर्शन किया था, वैसे ही अब भी दर्शनार्थ

भारत की यात्रा करूं। आपके विरह में १५ लंबे साल व्यतीत हो गए। यद्यपि मेरे और आपके जीवन में बहुत से उलट फेर हुए, परन्तु जो मार्ग आपने मुझे बताया है, मैं आज तक उस पर चल रहा हूं, क्योंकि मैं आपको अपना गुरु समझता और मानता हूं। इस जन्ममें मैंने जो यह यूरोपिन चोला ग्रहण किया है, मेरे लिये दुःख का कारण है, और कई एक प्रकार से बाधा डालता है। मैं इस जन्म के ऋण को उतार कर आपको बैकुंठ में मिलूंगा, जहां पर सदा के लिये आपके साथ मिलाप होगा।

परन्तु मृत्यु से पूर्व आपके दर्शनों का अभिलाषी हूं। सुतराम आप लिखें कि भारत वर्ष में यूरोपियनों के लिये कौनसा महीना और जहाज समुचित है।

यह संक्षिप्त सी पत्रिका आपको रिहाई पर हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करने के लिये लिखता हूं और आपकी १९०५ की फोटो मेरे सामने रहती है, अफ्रीका के दूसरे भाइयों के भी हर्ष की कोई सीमा न रही।

सचमुच देवता

रिहाई के पश्चात् जब हम पहले ही दिन भाई जी के चरणों में उपस्थित हुए, और अपने चित्त चकोर को उनके दर्शनों से आनन्दित किया, और आपके हृदय विदारक और करुणा जनक वृत्तान्त सुने, तो हम यह देख कर आश्चर्यित

रह गये, कि यद्यपि आप निर्दोष थे और आपको निर्दोषता के बदले भारी विपत्ति के अन्दर डाल दिया गया था, तथापि न ओडवायर के लिये आपके हृदय में कोई घृणा थी, न सरकार के विरुद्ध कोई शिकायत थी। उस समय अनायास हमारे मुख से "ओह! यह आत्मा कितना महान् है, यह देवता कितना उच्च हो चुका है कि काम क्रोध, लोभ और मोह का लेश मात्र भी इसमें नहीं रहा, जो अपने कट्टर वैरी ओडवायर के विरुद्ध भी कोई असद् भाव नहीं रखता, प्रत्युत अंतःकरण में भी अपने शत्रु के लिये प्रेम विद्यमान है। जेल के अन्दर रहते हुए आप उन सीढ़ियों को पार कर चुके हैं, जो सीढ़ियां एक परमात्मा को पहुंचे हुए भक्त के लिये पार करनी आवश्यक हैं।

जेलखाने के अन्दर और फिर इस प्रकार की जेल के अन्दर जिस की मूर्ति इतनी घिनौनी हो, जिस की कल्पना भी न की जा सकती हो, अपने हृदय को दुःख और क्रोध से साफ़ रखना किसी उच्च आत्मा का ही काम है। इस का प्रमाण उन पत्रों से मिलता है, जो भाई जी वर्ष में एक बार लिखा करते थे। सुतराम् इन पत्रों के सम्बन्ध में श्रीयुत् पादरी पेंड्रूज़ महर्षि दयानन्द के विषय में एक लेख लिखते हुए आर्य्य गज़ट की ऋषि-बोध संख्या में लिखते हैं:—

ऐसे समय में जब कि जो कुछ मेरे हृदय में था, मैं लिख चुका था, कि मेरे हाथ में बहुमूल्य पत्रों का एक बंडल

आ गया, जिन को ऐण्डमान द्वीप के जेलखाने से भाई पर-मानन्द ने लिखा था। मुझे विश्वास है कि उन्हें इस जेल-खाने में सर्वथा झूठे दोष पर रखा गया है। यह पत्र एक २ वर्ष के पश्चात् लिखे गये थे, क्योंकि मुझे मालूम है कि इस जेलखाने में यही नियम है कि कैदी अपने प्यारे रिश्तेदारों को वर्ष भर में केवल एक बार ही पत्र लिख सकते हैं। मैं हृदय से चाहता हूं कि ऐण्डमान में यह जेल सर्वथा नष्ट कर दिया जाए, क्योंकि मैंने बहुत से अवसरों पर अत्यन्त दुःख के साथ यह अनुभव किया है कि उन द्वीपों में कैदियों के साथ सर्वथा पाशविक व्यवहार किया जाता है.........।"

भाई परमान्दजी के यह पत्र मेरे लिए बहुमूल्य थे, क्योंकि वे अधिक विचार, शान्ति, ध्यान और एकान्त विचार के पश्चात् लिखे गये थे। वे पत्र काम काज में लगे हुए तथा झगड़े बखेड़ों में फंसे हुए जीवन जैसे कि आज कल हम लोगों को इस संसार में बिताने पड़ते हैं, कुछ एक अवकाश के क्षणों में जल्दी से लिखे हुए नहीं थे। भाई परमानन्दजी ने इन पत्रों में स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा था, वह आपने अपने हृदय के अन्तर्पट पर चित्रित भावों का मनमोहक चित्र खेंचा था। उस से मुझको परम सन्तोष हुआ, और उसने मेरे सामने स्वामी दयानन्द का वही चित्र खेंच दिया, जो मैं खेंचना चाहता था।

एक दिन बात चीत करते हुए आपने कहा, कि अब तो

संसार की किसी घटना से न हर्ष होता है न शोक! हमने आप से पूछा, हमें भी वह तत्त्व बतलाइये, जिससे हम भी शोक और हर्ष से ऊपर हो सकें, तो आपने उत्तर दिया, कि इसके लिये पांच वर्ष एकान्त वास की आवश्यकता है, जब कि एक एक करके समस्त सांसारिक सम्बन्ध और इच्छाओं की जंजीरें तोड़ देनी पड़ती हैं।

एक दिन मृत्यु के सम्बन्ध में बात चीत करते हुए आपने बतलाया कि यह कोई भयानक वस्तु नहीं, प्रत्युत: बड़ी सुहावनी है, विशेषतया नवयुवकों के लिये, जिन्होंने अपने आप को इसके लिये तैयार कर लिया हो।

ऐसे मृत्यु पर विजय पाए हुए देवता की "आप बीती" आज पढ़ने लगे हैं जिसने निर्दोषिता में देश जाती और धर्म के लिये कष्ट उठाए, अपने जीवन का बड़ा भाग या तो देश की सेवा में खर्च किया या उस सेवा को करते हुए जेलखानों में। इन पंक्तियों को पढ़ते हुए स्मरण रखें कि आपने इन से कुछ प्राप्त करना है और इन के अनुसार अपना आचरण बनाना है।

खुशहालचन्द्र खुरसंद

सम्पादक—आर्य्य गज़ट

ओ३म्

आप बीती ।

(मेरी राम-कहानी)

(१) नौलखा थाने में ।

आज मेरी खाना तलाशी हुए चार दिन बीत चुके थे, सांझ का समय था, और मैं अपने एक परम-प्रिय मित्र के साथ किले के पास खुले मैदान में सैर कर रहा था ।

मेरा मित्र कांपते हुए स्वर से मुझे कहने लगा—मुझे बहुत सख्त रंज है, यह आम अफ़वाह तीन चार दिन से उड़ रही है, कि आप गिरिफ्तार कर लिए जायँगे । जहां कहीं आप जाते हैं, सरकारी आदमी आप की पूरी निगहबानी करते हैं । लोग कहते हैं कि आप के मकान का मुहासरा हुआ हुआ है ।

मैंने हंस कर कहा—पकड़ लें, इस में रंज ही क्या है ।

मित्र—आप को चाहे कुछ महसूस न होता हो, पर मेरा दिल तो आवे की तरह बैठा जाता है ।

मैं—पकड़ लेंगे तो क्या करेंगे, मैंने किसी का क्या बिगाड़ा है।

वह—बिगाड़ा चाहे कुछ नहीं, पर गवर्नमेण्ट बहुत नाज़ुक हालत में है। (उन दिनों युद्ध ज़ोरों पर था। प्रतिदिन यहां समाचार आते थे कि जर्मन फ्रांस की ओर बढ़ रहा है, और पैरिस चन्द दिनों में ले लेगा) तुम को वे बहुत ख़तरनाक समझते हैं, बड़ी सख्त सज़ा देंगे।

मैं—क्या मौत से बढ़ कर भी कोई सज़ा है? आदमी मरता तो एक ही बार है, फिर डरना क्या?

मेरे मित्र की आंखों में आंसु डबडबा आए, कहने लगे "क्यों दिल पर छुरियां चलाते हो, हमारा दिल इस बात को सह नहीं सकता, कि तुम हमसे जुदा हो जाओ, फिर भला तुम्हारे दर्शन कहां मिलेंगे?"

मैं—तो फिर क्या कर सकता हूं।

वह—डिप्टी कमिश्नर व किसी बड़े अफ़सर से मिल कर ग़लत फ़हमी दूर कर लेनी चाहिये।

मैं—भला मैं किस बहानों से जाकर मिलूं। मुझे तो अफ़सरों से मिलने की बिलकुल आदत नहीं है, और मैं जाकर कहूंगा भी क्या?

वह—नहीं ज़रूर मिलो।

मैं—अच्छा देखा जायगा।

गिरिफ्तारी का पहला दिन।

दूसरे दिन सवेरे मैं अपने मकान पर बैठा था। दो नवयुवक दोस्त मुझे मिलने आए, और आते ही कहने लगे आप यहां से भाग चलें। हम तीन चार आपके साथ होंगे और सेवा करेंगे।

मैंने पूछा—क्यों भाग काहे को जाऊं और भाग कर जाऊं कहां? भागते हुए जीवन बिताने से मृत्यु को स्वीकार करना सहस्र गुना अच्छा है। भागा हुआ जहां कहीं जाऊंगा, हर एक नए मनुष्य को जब देखूगा तो यही ख़याल आएगा कि यह मनुष्य कहीं पता लगाने न आया हो। हर एक मनुष्य से डरते रहने से डर का मुक़ाबला करना ही अच्छा है।

वे निराश होकर उठकर चले गए। दस बजे का समय होगा। मैं भोजन करने बैठा था, कि मेरी स्त्री ने मेरी ओर देखकर कहा—आज आपका चहरा उदास मालूम होता है, क्या बात है? आप बोलते नहीं?

मैंने कहा—बस यह तुम्हारे हाथ का आख़री खाना मालूम होता है।

वह कहने लगी—क्यों क्या हुआ?

मैं—बस, हो गया जो होना था।

वह हैरानसी हो गई। मुझे भी कुछ मालूम न था कि क्या होने वाला है। भोजन खाकर मैं नीचे आया और कमरे

में बैठा ही था, कि बाहर से एक टांगा आया। मैं बाहर निकला। टांगे से मेरे एक मित्र उतरे। वे वकील थे। मेरे पुराने जमायती थे। बड़े प्रेम से बहुत समय के पश्चात् मिले। उनका बिस्तरा अंदर रखा और उन्होंने बात शुरू की ही थी कि इतने में एक और टांगा आया। दो बड़े सर्दार और एक और आदमी उनके साथ था। मुझसे कहने लगे, कि आप हमारे साथ चलें और जो कुछ घर में कहना हो कह दीजिए। मैंने कहा कुछ कहना नहीं, केवल नमस्ते कहनी है। मैं ऊपर गया, नमस्ते कह दी, और उनके साथ टांगे में बैठ गया। टांगा बहुत जल्दी रेलकी सड़क पर जा रहा था, ताकि कोई देख न सके।

हवालात की अंधेरी कोठड़ी के अंदर।

हम नौलखा थाने के अंदर दाखल हुए। मेरे अंगूठे का निशान लेकर मुझे एक कोठड़ी में बंदकर दिया गया। थाने के मकान में दाखल होते ही बाईं ओर एक कोठी थी। बाहर एक की जगह दो पहरेदार संगीन उठाये खड़े थे।

कोठड़ी में एक चटाई पड़ी थी। कहीं से रौशनी दाखल होने की जगह न थी। दरवाज़े को बहुत मज़बूत ताला लगा हुआ था। अंदर केवल एक चीज़ रखी हुई थी। वह थी एक कोने के अंदर एक टूटीसी पुरानी बाटी जिसमें मुझे पेशाब पाखाने बैठने की इजाज़त दी गई।

क्यों मैं वहां बंदकर दिया गया, यह मुझे मालूम न था;

और न ही मैंने किसी से पूछा। सांझ के समय दो रोटियां और थोड़ीसी दाल मुझे खाने को दी गई। मैं खाकर लेट गया।

रात्रि बीत गई। सवेरा हुआ। सूरज खासा चढ़ आया था, पर कोठड़ी में अंधेरा हो रहा था। आज भी उसी तरह अंदर ही मुझे खाना पहुंचा दिया गया। ऐसी दशा में मनुष्य के हृदय में क्या २ विचार उठते हैं, यह मनुष्य के हृदय की अवस्था पर निर्भर है। दुर्बल हृदय रखने वाले अपने अंदर से अंधेरे में भूत और चुड़ैल पैदा करके उनसे डर २ कर आत्मा को भय भीत कर लेते हैं, बलवान् हृदय वाले क्रोध में प्रतिकार लेने की इच्छा पैदा करते होंगे। मेरे मन में इस अंधेरी कोठड़ी में रात दिन अकेले पड़े हुए न कभी भय उत्पन्न हुआ और न क्रोध। इतनी चिन्ता किसी २ समय अवश्य होती थी कि वे मेरे विरुद्ध क्या सबूत पैदा करके मुकदमा बनाएंगे। निस्सन्देह अमरीका से आए हुए आदमी मुझे मिले ज़रूर थे, पर मैंने उनके किसी काम में भाग न लिया और न जानने की इच्छा की, और न उस समय तक मुझे कुछ पता था कि उन्होंने क्या किया था। मैं दिन रात संसार के दुख व सुख से बे पर्वा होकर मस्त पड़ा रहा। सात दिन के बाद पोलीस का एक अंगरेज़ अफ़सर आकर मुझ से पूछने लगा "अच्छे हो? मैंने उत्तर दिया "हां, अच्छा हूं" वह चला गया। इसी तरह उस चटाई पर कभी लेटे कभी बैठे और कभी मेहरे की दुकान की रोटियां खाते समय व्यतीत होता था।

मेरे सामने की ओर एक और कोठी थी। उसमें और हवालाती कभी २ रहा करते थे। एक आध दिन रहकर इधर उधर चले जाते थे। मैं उन से बात न कर सकता था। पर उनकी बातें कभी २ सुनाई देती थीं। इनमें से बहुत से तो उस कोठड़ी में भी अमरीका और चीन आदिक से वापस आये हुए कोई न कोई सिख भाई होते थे। जिनको कि पोलीस तहकीकात के लिये स्थान २ पर फिराती थी। किसी २ रात को शराबी पकड़े हुए २४ घंटे तक वहां बंद रखे जाते थे। मुझे याद है कि एक रात एक जाट सिख वहां लाकर बंद किया गया। सवेरे उठकर उसने बहुतसा पानी पिया। रात के दस बजे पोलीस उसको वहां से निकालना चाहती थी, कारण यह था कि २४ घंटे से अधिक वे थाने में न रख सकते थे, पर वह आदमी वहां से न निकलना चाहता था। वह कहता था, मेरा गांओं दूर है मैं इस वक्त कहां जाऊं, मुझे क्यों उठा लाए थे। अंत में उसे बिस्तरा दिया गया और वह बाहर थाने में सो रहा।

पड़ोसियों की कुछ बातें।

एक दिन एक नौ जवान लड़की औरतों की जेल से कैद काट कर वापस देहली को पहुंचाने के लिये वहां लाई गई। उसकी देहको ढांपने वाले कपड़े सैंकड़ों चीथड़ों से बने हुए थे। उससे सिपाही पूछते थे कि तू क्यों कैद हुई। वह अपना

किस्सा सुनाती थी, कि उसने एक नाजायज़ दोस्ती पैदा करके अपने खाविन्द को नुक्सान पहुंचाने की कोशिश की थी, जिस पर उसे तीन साल कैद की सज़ा हुई। इतने में एक और बूढ़ी नाइन पकड़ी हुई आई। उस पर यह अपराध लगा था कि वह एक भलेमानस पड़ौसी के घर जाया करती थी। उसकी लड़की को बहका कर ले गई और उसके ज़ेवर उतार कर उस लड़की को एक कूंए में फेंक दिया। उसने पोलीस को बताया कि उसका खाविन्द भी इस काम में उसका साथी था। वह भी पकड़ा हुआ लाया गया। वह अपनी बूढ़ी औरत को गुस्से होता और कभी खुशामद करता था कि उस का नाम न ले। वह कहती थी। क्यों, तुम मेरे पीछे और शादी करना चाहते हो।

एक दिन बाग़वानपुरा में एक बदमाश पकड़ा हुआ आया। उस ने रात को एक घर में ताला तोड़ कर चोरी की थी। पोलीस वाले उसे मारते और धमकी देते थे। उन के सामने तो कहता था कि उसे कुछ पता नहीं, हवालात की कोठड़ी में आकर अपनी बहादुरी की डींगें मारता था। इसी प्रकार के दृष्य थे, जो कि दिन रात मेरी आंखों के सामने गुज़रते थे। मुझे किसी से बात करने का अवसर न था। मैं चुपचाप बैठा हुआ यह बातें सुना करता था। जो कोई नया पकड़ा हुआ आता था, वह एक दूसरे से मेरी ओर इशारे करके जानना चाहता था कि इसे क्यों पकड़ा है?

कई रात एक मलङ्ग फ़कीर की रौनक रही । वह भूख से किसी अंगरेज़ की कोठी के अहाते में चला गया । उस को पोलीस के हवाले कर दिया गया कि वह भी गुप्त षड्यन्त्र में सम्मिलित था, जो कि नुक्सान पहुंचाने के इरादे से कोठी में दाखल हुआ था । वह कभी रोता था, कभी गाता था, कभी अंगरेज़ों को गालियां देता था । और कई साधु भी आवारागर्दी में पकड़े गये ।

[२] डिस्ट्रिक्ट जेल में ।

कई दिन हवालात की इस अन्धेरी कोटड़ी में बीत गये, कि अचानक एक दिन मुझे एक सिख अफ़सर पोलीस मिलने आए और कहने लगे कि—"भाई साहब आप यूं ही बेसूद तकलीफ़ में पड़े हैं, क्यों सब हाल बता नहीं देते"।

मैंने उत्तर दिया, आज पहली बार मुझ से यह ज़िक्र किया गया है । कौन किस प्रकार का हाल मुझ से जानना चाहते हैं । वह कहने लगा—" देर हुई, लुधियाने में एक आदमी ने तुम्हारी बाबत सब कुछ बता रखा है, कि तुम बड़े लीडर हो । तुम ने देखा होगा, करतारसिंह भी पकड़ा गया है " इस से एक दो दिन पहले रात के समय थाने में बड़ा कोलाहल मचा था । रेलवे स्टेशन से तीन आदमी गिरिफ़्तार हुए हुए थाने में लाए गए थे । अङ्गरेज़ पोलीस अफ़सर उन के साथ थे । थाने के सिपाही कहते थे, कि

डिप्टीइंस्पैक्टर जनरल टामकिन खुद वहां मौजूद था, बड़े खतरनाक आदमी पकड़े गए थे। खतरनाक ज़रूर थे, क्योंकि वह पहली रात थी, जब कि मुझे अपनी कोठड़ी से निकाल कर दूसरी कोठड़ी में और आदमियों के साथ रख दिया गया, और उन तीनों को मेरे वाली कोठड़ी में डाल दिया गया। वे प्रसन्न थे। हंसते थे, और एक उन में से टामकिन को खाली नाम लेकर बुलाता था। वह अठारह वर्ष का नवयुवक था। उन तीनों को हथकड़ियों के अतिरिक्त पाओं में बड़ी २ ज़ंजीर डाल कर दरवाज़े से बाहर बांध दिए गए। आधी रात बीत गई। सब लोग सोए पड़े थे। पहरेदार भी विश्राम के लिए बैठ गये। मैंने उठ कर देखा, वह "करतार सिंह" था। उसे मैंने एक बार अमरीका में देखा था।

अब मुझे वह सिख अफ़सर कहने लगा कि—एकबार एक गीदड़ जाल में फंस गया। गीदड़ बड़ा चालाक होता है उस ने पकड़ने वाले से कहा—अगर तुम मेरी एक बात नहीं सुनोगे तो प्रलय आजायगी। उस ने कहा—बताओ वह बात क्या है। गीदड़ ने चीख कर कहा—"उस वक्त बताऊंगा, जब मुझे छोड़ कर तुम फ़ासले पर खड़े होजाओगे अन्त में कुछ सोच विचार कर वह राज़ी हो गया। गीदड़ थोड़ी दूर गया और "आप मरे जुग परलो" कहता हुआ भाग गया। जिस तरह हो सके जान बचा लेना ज़रूरी अमर है, आप इतने आलिम और दाना हैं।

मैंने यह सरमन सुनी और संक्षिप्त सा उत्तर दिया—अफ़सोस है, कि मैं गीदड़ नहीं हूं।

एक महीना पूरी घबराहट में रखने के पश्चात् जान से मार डालने का भय और जान बचा देने का लालच दिया गया।

दूसरे दिन सवेरे कोठड़ी का ताला खोल दिया गया और दो सिपाही मुझे हथकड़ी डाल कर थाने के दफ़तर में ले गए। वहां एक मुसलमान अफ़सर विद्यमान थे। देखते ही उन्होंने सिपाहियों को धमकी देनी शुरु की "हथकड़ी क्यों डाली है, फौरन निकाल दो।

मैं अन्दर दाख़ल हुआ। उन्होंने कुर्सी मेरे आगे कर दी और मुझे उस पर बैठने के लिए मज़बूर किया। मैं बैठ गया, तो कहने लगे। आप से दो चार बातें दरयाफ्त करनी हैं, उम्मेद है आप बता देंगे।

मैंने पूछा—किस हैसियत से, अगर मैं आज़ादी की हालत में हूं तो जो आप दरयाफ्त करेंगे, मैं दुरुस्त जवाब देता जाऊंगा, और अगर मैं मुलज़म हूं तो मेरे बरखिलाफ़ इलज़ाम लगाइये, मैं अदालत में बयान दे दूंगा।

इस पर उन्होंने काग़ज़ क़लम रख दिया, और कहा—अच्छा नहा धो लेने दो, जेल ले जाना होगा। मुझे एक हाथ में हथकड़ी डाल कर नलके के ऊपर ले जाकर कहा गया, अच्छा कपड़े धो लो और नहा लो। महीने के बाद कपड़े

उतार कर मैंने उन को पानी से निकाल लिया, और बदन पर भी पानी डाल लिया । अभी कपड़े अच्छी तरह सूखे नहीं थे कि गारद और बन्द गाड़ी आ गई । उस में बैठा दिया गया, और एक दो हिन्दु सब इंस्पैक्टर या सार्जन्ट अन्दर बैठे । बाक़ी पोलीस मैन ऊपर बैठ गए, और गाड़ी जेल की ओर रवाना हुई । मैं गाड़ी के दरीचे से गुज़रते हुए आदमियों, दरख़्तों और सड़कों की तरफ़ देखता जाता था, जिन को कि मैं कदाचित् अन्तिम वार देख रहा था । चक्कर खाते और घूमते हुए गाड़ी जेल के फाटक पर पहुंची । इस से पहले जेल की बाबत सुना बहुत था, परन्तु पहली बार लोह के फाटक देख कर हैरानी सी हुई !

फांसी देने वाली कोठड़ी ।

अन्दर दाख़ल हुए । फाटक के अन्दर एक कमरे में ले जाकर जेल के किसी नायब दारोगेने कपड़े, बूट, जुराब उतरवा कर अच्छी तरह तालाशी ली । और फिर अन्दर ले जा कर कोठड़ियों की लाइन के अन्दर एक कोठड़ी में बन्द कर दिया । इस लाइन में फांसी की सज़ा वालों को बन्द किया जाता था । बाक़ी कोठड़ियों के अन्दर मेरे ही मुकदमे वाले कई आदमी थे, जिन में एक दो ने मुझे पहचान लिया । कोठड़ी नियमानुसार कुछ फ़िट लम्बी और कुछ फ़िट चौड़ी होती है । इस में मिट्टी का एक थड़ा सा लेटने के लिए होता

है। इसे "खड्डी" कहा जाता है। इस खड्डी पर दो रद्दी से कम्बल पड़े थे। एक कोनेमें टट्टीके लिए एक गमला रक्खा था, एक जगह मिट्टी के दो प्याले पड़े थे, जिन में कि हमें खाना दिया जाता था। जेल का एक सिपाही लाइन के साथ घूमता था। भोलखा की कोठड़ी से किसी अंश में यह अच्छी थी। उस में पड़े हुए अन्दर से शोर करके आदमी दूसरी कोठड़ी वालों से बात चीत कर सकता था। यद्यपि वह सिपाही हर वक्त रोकता था और कभी २ उससे लड़ाई होने लगती थी। क्योंकि पन्द्रह सोलह आदमी कोठड़ियों में बंद थे, वह एक के साथ झगड़ा करता था तो दूसरे शोर करते थे। उसे इधर जाना पड़ता था, आखिर तंग आकर यह कहता था, बात धीरे २ करो, ताकि दूर से कोई जेलका अफ़सर सुन न सके।

सांझ होने वाली थी जब कि एक सिक्ख साहब जो कि दारोगा थे, मुझे देखने आए, और कहने लगे कि केवल दूसरे आदमी के हैं, नये कंबल लो। उनके साथ कई आदमी थे, वे दो और कंबल दे गए और पहले कंबल ले गए।

जेलकी रोटी और कपड़े।

थोड़ी देर में दो क़ैदी और कुछ सिपाही खाना लाए। एक प्याले में पानी और दूसरे में दाल और रोटी हाथ में देकर अगली कोठड़ी में रवाना हो गए। रोटी जौ की बनी

हुई थी उसमें अधिकांश रेत मिली हुई थी। दाल सड़ी हुई और मालूम नहीं हो सकता था कि किस अनाज की है। एक ही ग्रास रोटी का मुंह में डाला, दूसरा डालना असम्भव हो गया। पानी से मुंह साफ़ कर लिया और बैठ रहा अंधेरा हो गया। भूखे पेट रात काटने की चिन्ता थी, अभी कंबल बिछाकर लेटा ही था कि सारे शरीर के साथ जूएं चिमट गई। दोनों कम्बल जूओं से लिपटे हुए थे। रात के समय इसका क्या प्रबन्ध हो सकता था, हां कंबल उठा कर परे फेंक दिये और सड़ी के ऊपर लेट रहा। फिर भी जूएं बहुतसी चिमट गई थीं। पहली रात जलका यह अनुभव हुआ कि उसके पश्चात् जितने भी कष्ट हुए, उनके सामने तुच्छ जान पड़ते थे। समय में एक ही गुण है, प्रतीक्षा नहीं करता, परन्तु संतोष इतना ही है कि गुज़र जाता है। वहां कोई दो तीन सप्ताह तक हम रहे। वही खाना और वही कंबल, दिन रात गुज़रते गए। प्रातःकाल हवालदार भंगी को साथ लिये आते थे। टट्टी का गमला साफ़ करते थे। एक २ कोठड़ी को खोलते थे, ताकि एक दूसरे की शक्ल नज़र न आ सके। दोनों समय साधारण भोजन के अतिरिक्त जिस में से कुछ खाया न जाता था, दोपहर के समय छटांक भर चने के आटे की रोटी मिला करती थी। इसमें भुस और रेत मिला हुआ न था। वह एक पदार्थ था जिसकी दिन में खुशी से इतज़ार रहती थी। दिन में कंबल से जूएं निकालना एक जी

पदचाता था । इस अंतर में हमारा एक कोठड़ी में बंद रहने से दूसरे कैदियों से भेंट करने का कोई अवसर न था, और सिवा इस अपनी दुर्दशा के जेल के दूसरे जीवन का कुछ ज्ञान न हुआ ।

(३) सन्ट्रल जेल ।

जेल में एक बात का बड़ा ध्यान रखा जाता है कि, जो कुछ हो ऐसा अचानक कि कैदी को इसकी पहले कोई खबर न हो सके । अचानक करना ही उसके हृदय पर बड़ा प्रभाव डालना होता है । अभी एक महीना डिस्ट्रिक्ट जेल में हमें न गुज़रा था कि एक दिन पोलीस की गार्ड हथकड़ियां लिये सामने आ खड़ी हुई । एक २ को निकाल कर हाथों में हथकड़ियां डाल दी गईं । कोठड़ियों से निकाल कर फाटक के अंदर आ दाखल किया । वहां पर सबकी नियम पूर्वक गिनती होकर हमारा चार्ज जेल वालों ने पोलीस को दिया । हमारी संख्या बीस के लगभग थी । कतार बांधकर हमें खड़ा कर दिया । हमारे दाएं बाएं आगे पीछे पोलीस संगीनें निकाले चलती थी । थोड़ी दूर चलकर हम सन्ट्रल जेल के फाटक में दाखल किये गए । इसे लाहौर में पक्का जेल कहा जाता है । बड़े २ लोहे के सलाखदार फाटक खुल गए । दाखल होकर ड्योढ़ी में हम खड़े हो गए । वहां पर हमारा चार्ज पोलीस ने फिर जेल को दे दिया ।

जेल की नई सृष्टि में व नर्क में।

अंदर लेजाकर हमको १४ नंबर की कोठड़ियों में बंद किया गया। इस जेल में दो अहाते हैं। एक २ अहाते में आठ २ नंबर हैं। एक २ नंबर में कई २ लाइनें हैं। १४ नंबर के लाइनों में कई २ अलहदा कोठड़ियां हैं। हमें उन कोठड़ियों में रखा गया।

१४ नंबर जेल में फांसी के अभियुक्तों और बड़े सख्त बदमाशों की जगह है। इसके अंदर एक लाइन है, जिसमें खास बदमाश रखे जाते हैं और इसका नाम ही बदमाश लाइन है। इसमें आठ के लगभग कोठड़ियां हैं। उनमें से एक कोठड़ी में मुझे रखा गया। हमारे साथ इर्द गिर्द की कोठड़ियों में और कैदी रहते थे, जिनको जेल में बड़ा बदमाश समझा जाता था। वहां रहने से मैंने अनुभव किया कि अब हम एक नई सृष्टि में दाखल हुए हैं। पोलीस हवालात और कच्चे जेल के हवालात के दो महीने एक प्रकार की मध्य की सीढ़ी के समान थे जिनमें से होते हुए नर्क में प्रवेश हुआ। यद्यपि यह नर्क था, पर इसमें थोड़ीसी स्वतंत्रता मिलने लगी। वह स्वतंत्रता नर्क वासियों की शक्ल देखने और उनकी बात चीत सुनने का अवसर था।

पोलीस की हवालात अंधकार और अंधकार में अकेले समय बिताना था। कच्चे जेल में जेल के अफ़सरों और कर्म-

चारियों की शक्लें दिखाई देती थीं। वे कोठड़ी की सफ़ाई कराने और खाना दिलाने आया करते थे। उनसे बात चीत का कोई अवसर न मिल सकता था। अब उनके साथ रहने का संयोग हुआ, जो कि जेल अफ़सरों के शत्रु थे। और जिनका काम दिन रात जेल वालों को तथा एक दूसरों को गालियां देना था। इनमें एक गुण था और वह यह कि उनके अंदर थोड़ा बहुत अतिथि सेवा का भाव विद्यमान था। हम लोगों को वे जेल में नए आए हुए समझकर अथवा हमारा अभियोग सरकारी समझकर हमारा थोड़ा बहुत सम्मान करते थे। ऐसा जान पड़ता था कि उनको पंजाब में शोर शराबा का बड़ा बढ़ा चढ़ा कर हाल किसी प्रकार से पहुंच जाता था। वे जानते थे कि अंगरेज़ों को एक बड़े भयानक शत्रु "जर्मन" से पाला पड़ा है। और इसी कारण देश में कुछ लोगों ने अशान्ति पैदा करने की चेष्टा की है, जिनको सरकार पकड़ २ कर जेल भर रही है, स्वभावतः उनकी सहानुभूति उन लोगों के साथ थी।

यद्यपि यह लोग सरकार अंगरेज़ी को और जेलके अफ़सरों को गालियां देते थे, परन्तु विचार करने पर प्रतीत होता था कि यह सब उन का नित का व्यवहार था। उस गाली गलोज का उन के मन की अवस्था के साथ कोई विशेष सम्बन्ध न था। उन का जीवन ही निराले ढंग का था। वे अपने नित के काम काज को जीवन के साधारण कर्त्तव्य ही समझते थे। जैसे हम अपने सांसारिक धन्धों को कभी यह

विचार मन में नहीं लाते कि यह सब क्षणिक है और इस लिये हमें उस समय का ध्यान रखना चाहिये जब कि हमारी इस सांसारिक बंधन से मुक्ति हो जायगी. वे कभी अपने छुटकारे के समय का ख़याल ही नहीं करते। कारण यह कि उन लोगों की क़ैद की अवधि प्रायः लंबी होती है। और कई उनमें से ऐसे होते हैं जो कि जानते हैं कि छुटकारा होने के पश्चात् फिर शीघ्र ही वे वहीं आ जायेंगे। उनका घर जेल ही है, उनका संसार ही वही होता है। हम इसे नर्क कहें, उनके लिये वही संसार है। ऐसा ही हमारे इस संसार को, यदि कोई शक्ति ऊपर से देखने वाली हो तो कुछ इस प्रकार का नाम देते होंगे। कोठड़ी के अंदर एक ऊंची सी खड्डी लेटने के लिये बनी होती है। एक ओर एक पत्थर की चक्की लगी होती है, जिसमें खड़े होकर आटा पीसा जाता है। उसी के एक कोने में दो लोहे के बर्तन होते हैं, और एक और कोने में मिट्टी का गमला पड़ा होता है, जिसमें टट्टी पेशाब किया जाता है। सवेरे उठते ही शौचादि करते ही लांगरी आ जाते हैं। दो चने की कच्ची व जली हुई रोटी देते हैं और एक चमचा तरकारी का होता है, जो कि प्रायः पत्तों पौधों और टहनियों की बनी होती है। इस नंबर को छोड़कर दूसरे नंबरों में बारकें होती हैं, जिनमें साठ सत्तर मनुष्यों के सोने का स्थान बना होता है। उनकी टट्टियां पृथक् होती हैं, और सवेरे उठते ही पांच सात मिंट के अंदर इन टट्टियों में

शौचादि करना पड़ता है। इन सब क़ैदियों को अहाते के अंदर क़तार में बैठा कर रोटी बांटी जाती है।

जेलका जीवन।

इन बारकों में एक २ क़ैदी लैम्प लिये तीन घन्टे तक पहरा देता है। चौदह नंबरका पहरा अजीब ढंगका है। हर तीन घन्टा नया नंबरदार बदलकर पहरा देने आता है और हर एक कोठड़ी के सामने खड़ा होकर पुकारता है "बोलो जवान" यदि अंदर क़ैदी सो गया हो और उत्तर न दे, तो दूसरी बार ज़ोर से गाली देकर पुकारता है। फिर भी उत्तर न देने पर और उपाय करता है, जिस से क़ैदी को जगाकर वह यह देखना चाहता है कि वह जीता है, मर तो नहीं गया, क्योंकि उसे थोड़ी २ देर बाद रिपोर्ट देनी पड़ती है "सब अच्छा अर्थात् आल वैल" हम लोगों के ऊपर ख़ास २ पठान पहरेदारों का पहरा लगाया जाता था, जो कि अपने कर्तव्य को पूरा करने में अति कठोर हों। परिणाम यह होता है कि प्रत्येक रात्रि किसी न किसी अभियुक्त के साथ गाली गलौच और फ़साद तक की नौबत पहुंचती थी। हर तीसरे घन्टे रात को जगाकर हमारे जाने की चौकसी की जाती थी।

सवेरे खाना खा चुके हों या न खा चुके हों, गेहूं की बोरियां तयार होती थीं। प्रत्येक कैदी लकड़ी का पीपा लिये जाता और अपना गेहूं १८ सेर वज़न कराके ले आता था,

और पीसना शुरू कर देता था। यह दिनभर की सरकारी मुशक्कत थी, जो कि उन्हें तीन बजे तक देनी पड़ती थी। कई बलवान् मनुष्य इस मुशक्कत को तीन चार घंटे के अंदर समाप्त कर लेते थे। बाकी दुबले और कमज़ोर सारा दिन लगे रहते थे। अपनी २ कोठड़ी में चक्की पीसते थे, गीत गाते थे, साथ की कोठड़ी वालों से मख़ौल करते थे, एक दूसरे को गालियां देते थे। बहुतेरे ऐसे थे जिनका दो रोटी से पेट न भरता था और आटा साथ २ खाते जाते थे। उसके स्थान में उसमें रेत मिला देते थे। कई कैदियों का आटा कम हो जाता था और उस के लिये उनकी पेशी सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास होती थी और दण्ड पाते थे।

कैदियों के खेल तमाशे।

मुशक्कत से छुट्टी पाई, अब उनका आपस में जूआ शुरू हुआ। उनकी सम्पत्ति कुछ आने २ कुछ रुपये होती है और इस सम्पत्ति को संभाल कर रखने का खज़ाना उनका गला होता है। गले में पैसे रुपये रखने को एक खोज बना होता है। उसके बनाने के लिये एक सिक्के की गोली लेकर उसके साथ धागा बांधकर गले में डाल दिया जाता है। धागा मुंह में व दांतों में रखना पड़ता है, ताकि सिक्का अंदर न चला जाय। कई दिनों के अभ्यास से यह खाना बन जाता है। हमारे कई आदमियों ने इस तरह से यह खोज बना लिया था

क्योंकि यह अति लाभदायक समझा जाता है। इसके बनाने में खतरा भी होता है। हमारे एक आदमी ने "सिक्के की गोली" रखना शुरू की। वह गोली पेट में चली गई। उसे सिक्के का विष चढ़ गया। दो महीने से अधिक समय तक उसने रोग का ज़िक्र न किया, अन्त में दुखी होकर उसे हस्पताल जाना पड़ा, वहां भी बहुत समय तक लाचार पड़ा रहा पर हठके मारे उसने असली कारण न बताया। चौथे महीने पता लगा कि वह गोली की प्रेक्टिस कर रहा था। डाक्टर ने पूछा तो उसने इनकार कर दिया। जुलाब दिये, कुछ लाभ न हुआ। जब डाक्टर को विषका विश्वास हो गया तो उसने छाती के बल लिटा कर खबटा लगाया, जिससे गोली बाहर निकल पड़ी। उस समय वह बहुत दुर्बल हो चुका था, और उस विषके प्रभाव से उसकी मृत्यु हो गई। यह मुंह का खोल है, इसी खोल द्वारा प्राय: मदारी लोग गोले उगलने का तमाशा दिखाया करते हैं। एक दो छोटी गोलियां वे गले के अंदर रख सकते हैं और तमाशा करने समय उन्हें निकालते हैं, पीछे एक हाथ से गोला ऊपर ले जाते हैं और मुंह से निकलता हुआ दिखाते हैं। जूआ खेलने वाले पैसों से जूआ खेलते हैं, कैदियों के कपड़ों से खेलते हैं और जो रोटियां उनको मिलती हैं उनका दाओ लगाकर जूआ खेलते हैं। इस प्रकार कैदी कई दिनों तक केवल चनों पर निर्वाह करते हैं, जो कि दोपहरके समय प्रति दिन मिलते हैं, और अपनी रोटियां

हारते रहते हैं। सांझ को फिर रोटी देकर कोठड़ियों का ताला बंद कर दिया जाता है। अंदर पड़े हुए वे आधी रात तक गाते और एक दूसरे से बातें करते और प्रायः गंदे शब्दों में गालियां देते रहते हैं। यही उनके खेल और जीवन का आनन्द होता है। सप्ताह में एक बार प्रातःकाल सारी जेल में सुपरिन्टैन्डैन्ट चक्कर लगाता है। जिसे परेड लगाना कहते हैं।

घन्टा भर पहले कैदी नम्बरदार आता है "तय्यार हो जाओ, परेड लगाओ" इसके पश्चात् सिपाही आता है "परेड लगाओ, अभी तक क्या करते हो" दो चार मिंट के अंदर जेल का कर्क आता है और वही शब्द दोहराता है। कोठड़ी अहाते की सफ़ाई देखता है। अभी नाइब दारोग़ा आता है, जिसके पश्चात् सुपरिन्टैन्डैन्ट कैदियों की, कर्मचारियों की एक भीड़ साथ लिये आता है। उसके साथ दारोग़ा आगे २ चलता है। प्रत्येक कैदी कोठड़ी के दरवाज़े के सामने सलाख़ों के पीछे अपना टिकट हाथ में लिये खड़ा हो जाता है, और यदि किसी को शिकायत होती है तो वह सलाम करके अपनी "नालिश" करता है। सुपरिन्टैन्डैन्ट एक सेकिन्ड ठहर कर उसका उत्तर देकर आगे चल पड़ता है। रास्ते में दारोग़ा सबके विषय में रिपोर्ट करता जाता है। यह एक बड़ा ड्रामा सा प्रति सप्ताह जेल में होता है, ताकि कैदी अपनी शिकायत व ज़रूरत को सुपरिन्टैन्डैन्ट के कान तक पहुंचा सकें। अब

कभी किसी को चिट्ठी लिखनी होती है तो वह सुपरिन्टैन्डैन्ट से नालिश करके चिट्ठी की आज्ञा प्राप्त करता है ।

(४) जेल में कमरा अदालत

नौलखा जेल में, डिस्ट्रिक्ट जेल और सेंट्रल जेल भी बहुत समय बीत गया । परन्तु मुझे अब तक यह भी मालूम न हो सका कि किस अपराध में मुझे पकड़ा गया है अथवा कौनसा अपराध मुझ से हो गया है जिसके आधार पर अभियोग चलाया जाना था । अंत में एक दिन यहां लाला रघुनाथ सहाय बतौर वकील मुलाकात करने आए, उन्होंने मुझे बताया कि हमारे लिये एक नया कानून बनाया जारहा था जिसका नाम "डिफ़ेन्स आफ़ इन्डिया एक्ट" (Defence of India act) था । इस कानून के अनुसार हम लोगों पर अभियोग बनाकर जेल में ही चलाया जायगा । तीन कमिश्नरों का एक खास कमीशन अदालत के रूप में नियत होगा, जिस के फ़ैसले के पश्चात् कोई अपील न हो सकेगी ।

अमरीका के हिन्दोस्तानी हिन्दोस्तान में ।

युद्ध आरम्भ होने पर अमरीका देश के अंदर काम करने वाले सिख और दूसरे लोग कई जहाज़ों पर सवार होकर भारत को आए ताकि अपने देशको युद्ध में भाग लेने

अथवा इंगलैंड की सहायता करने से रोकें। और इस अवसर को अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने में लगाएं। इन लोगों की एक बड़ी संख्या जहाज़ से उतरते ही गिरफ्तार करके जेलों में नज़र बंद कर दी गई थी। कुछ मुलतान जेल में थे। कुछ मीयांवाली जेल में। कई महीने तक जेलों में बंद रहने पर भी उन्होंने पोलीस के दबाओ से किसी प्रकार का कोई बयान न दिया, जिससे उन पर अभियोग चलाया जासके। परंतु इन लोगों में से कुछ बहाना करके अथवा भेस और नाम बदल कर गिरफ्तारी से बच गए, अथवा गिरफ्तार हो कर छोड़ दिये गए। इन्होंने इधर उधर घूमना और उपद्रव करना आरंभ किया। जब वे पकड़े जाने शुरू हुए तो उनमें से कई वादा माफ़ बन गए। इनमें से सबसे पहला आदमी नवाब नामक था। यह एक ही मुसलमान अमरीका से इनके साथ आया। इसका सारा खर्च उन लोगों ने अपनी गिरह से दिया। अमरीका में यह आदमी मुखबरी का काम कर चुका था। यह वहां से खास इरादे के साथ उनके साथ आया था, ऐसा प्रतीत होता है। उसने रास्ते की सब बातें और वार याद रखीं, और आते ही अफ़सरों से मिलकर सब हाल बताना शुरू कर दिया। और साथ ही मुसलमान होने के कारण बतौर एक लीडर के उनके साथ काम करता था।

पोलीस का मुखबर नवाब ।

इस नवाब द्वारा पोलीस को उन लोगों के सब हाल मालूम हो गए। और खास आदमियों के गिरफ्तार होने पर उनकी सब गुप्त बातों को बताकर घबरा देते थे। गुप्त षड्यंत्र रचने में और गुप्त उपायों में एक ही बड़ा खतरा है, जो कि उन सबको बेकार कर देता है। वह यह कि गुप्त बातें करते हुए दलेर और कायर सच्चे और छल छिद्र मेम्बर का पता नहीं लगाया जा सकता। हर एक अपनी वीरता की डींगें मारता है, और अपने आपको सर्वथा सुरक्षित समझ करें सब कुछ कहने और करने पर तय्यार होता है। परन्तु ज्यों ही उसे पता लगता है कि उनके सारे गुप्त षड्यन्त्र का ज्ञान पोलीस को है तो उसका चित्त घबरा जाता है, और एकाएक अपने जीवन को संशय में देखकर, जिसकी कि उसको कभी कल्पना भी नहीं हुई थी, अपने प्राण बचाने की चिन्ता में हो जाता है, जिसका परिणाम वादा माफ़ी लेकर अपने आप को बचाकर अपने साथियों को फंसाना होता है। आप फंसकर छुटकारा पाने का केवल यही उपाय समझ कर वह अपने प्राण इस प्रकार बचा सकता है।

कैदियों का ट्रेनिंग स्कूल ।

सैन्ट्रल जेल में हमको एक २ दो २ अलहदा २ पंद्रह मिंट सवेरे बाहर निकल कर फिरने की आज्ञा दी जाती

थी। जेल का हैडवार्डर साथ पहरे पर रहता था। अब मुझे मालूम हुआ कि पंजाब के बहुत से जेलों में बंद किये हुए कई आदमियों को लाहौर जेल में लाया जारहा था। हैडवार्डर हमें तंग करने और जेल के अपमान सहने का अभ्यास डालने में यत्न करता रहता था। वह कहता था, मैं तुम्हें जेलकी ज़िन्दगी के लिये ट्रेन (शिक्षा) कर रहा हूं। उसने अपनी आयु छुटपन से जेल की नौकरी में गुज़ारी थी। यद्यपि इसका स्वभाव बुरा था, पर फिर भी कभी २ हमें साफ़ २ सच बता देता था। एक बार उसने मुझे बताया कि जेल में कैदी को तंग करने का उपाय एक ही है। वह यह कि जो कुछ कैदी का जी करे उसे वह न करने देना और उसके विरुद्ध कराना। यदि वह खड़ा हो, उसे तत्काल धमका देना कि बैठ जाओ क्यों खड़े हो। जो बैठा हो, धमकी देना, खड़े क्यों नहीं होते हो। ऊपर देखे तो कहना, नीचे देखो, उधर क्या देखते हो।

माफीदारों से हमारी पहचान।

कुछ दिन बीत गए। हमको हथकड़ियां लगाई। कोठड़ी से बाहर निकाला। एक घास वाली जगह पर सबको लेगए और बैठा दिया। हम हैरान थे कि यह क्या होने लगा है। इतने में देखते हैं कि फाटक खुला और पोलीस कमान और दूसरे देसी अफ़सर अंदर दाखल हुए और हमारी ओर आए। उनके साथ एक और आदमी था जो कि उन लोगों के साथ

रह चुका था। वह सिर झुकाए और शरम के चेहरा मुर्झाए और झुकाए हुए था। हम सबको खड़ा होने का हुक्म हो गया। और हमें मालूम हुआ कि वह आदमी सरकारी गवाह के रूप में हम लोगों की पहचान के लिये लाया गया है। वह हर एक के सामने खड़ा होकर बताता था कि वह उसे पहचानता है वा नहीं। किसी२ को उसने पहचाना, और बताया अमुक २ ठिकाने पर वह उसके साथ था। यह पहली वार था कि हम लोगों को इकट्ठे मिलकर एक दूसरे को देखने का प्रसंग हुआ। यहां मैंने तो तीन ऐसे आदमियों को देखा जिन, को मैंने अमरीका में एक दो वार देखा था। उनमें से एक पण्डित जगत राम था, जो किसी काल में दयानन्द कालिज का विद्यार्थी रह चुका था। लाहौर में मेरे पास आया था और मुझे कुछ सोने के अमरीका के सिक्के दिये थे, जिनको मैंने सराफ़ से बदलवा कर नोट उसको या अमरसिंह को दिये थे। वह पेशावर में अवारागर्दी के जुर्म में गिरिफ्तार किया गया। उसने नोट के विषय में पूछने पर बता दिया कि यह मेरे द्वारा प्राप्त किये गये थे। उसे इस जुर्म में तीन वर्ष का कठोर दण्ड दिया गया और पेशावर में कई महीने चक्की पीसने के पश्चात् लाहौर में लाया गया, जहां कि वह कैदी की दशा में वही मुशक्कत करता था।

हमारी पहचान हर दूसरे तीसरे दिन होने लगी, और हमें मालूम हुआ कि वादा माफों की संख्या दर्जन से ऊपर

चली गई थी । यह पहचान भी विचित्र ढंग से होती थी । हम सब खड़े हो जाते थे । वादामाफ़ आगे २ चलता था । उसके पीछे २ पोलीस और जेल के अफ़सर साथ २ चलते थे । जब वह किसी को जानता था, वह उसके विषय में नोट करा देता था । अमरसिंह वादामाफ ने मुझे पहचान लिया । और बताया कि उसने मुझ से रुपये या नोट लिये थे । और जगतराम के मुकद्दमे के विषय में पूछा था ।

यह तो सच था, पर एक दिन मूलासिंह पहचान के लिये लाया गया । वह हर एक को देखता हुआ मेरे पास से गुज़र गया । आठ दस और आदमियों से आगे चला गया । अचानक उसने लौट कर मेरी ओर देखा और बोला, मैं उस आदमी को भी जानता हूं । शोर सा हुआ, फिर क्यों नहीं बताया ?

वह वापस आया और कहने लगा कि यह भाई परमानन्द है । मैंने तुरंत ही मिस्टर पैट न गवर्नमिन्ट एडवोकेट का ध्यान दिलाया, कि इस आदमी को मेरी तर्फ़ इशारा किया गया है । सुपरिन्टन्डेन्ट धमकी देने लगा, शोर मत करो ।

मैंने कहा, यह अजीब बात है, यह आदमी अभी जाता है और नहीं पहचानता । और इतनी देर बाद दूसरों को देखते हुए अचानक उसे मेरा खयाल कैसे आ सकता है ।

सुपरिन्टैन्डैन्ट कहने लगा—यह सब तुम्हारी चालाकी है, ऐसा ही होगा । मैंने केवल इतना कहा, मेरा प्रोटेस्ट नोट कर लिया जावे ।

एक और दिन पोलीस का सिपाही कृपालसिंह पहचान के लिये आया। एक वार वह सबको देखकर चला गया, और मेरे विषय में कुछ न कहा। उसे फिर दूसरी वार दिखाने के लिये लाया गया, और वह बोला कि उसने मुझे देखा है। मैंने पूछा, कहां पर ? तो कहने लगा, तुम्हारे मकान पर। दोनों का बयान मेरे विषय में झूठा था, यदि वे सचमुच जानते होते तो पहली बार ही उनको शक पड़ जाता।

सम्बन्धियों से भेंट।

यह तो प्रारम्भिक बातें थीं। हमको पता लगना शुरू हुआ कि १४ नंबर के साथ का १५ नंबर अहाते को तोड़कर अदालत बनाई जारही है। कमिश्नरों के लिये चबूतरा बनाया गया है। हमारे लिये एक जंगला तैयार किया गया है। बिजली लाने का प्रबन्ध किया गया है ताकि अदालत के कमरे में बिजली के पंखे लगाए जा सकें। इस अवसर में हम लोगों के भाई बन्धु जेल में भेंट करने के लिये आते थे। वे प्रातःकाल आकर अर्ज़ी डाल देते थे। दस ग्यारह बजे सुपरिन्टैन्डैन्ट आता था। हममें से जिस किसी को लेजाना होता था, नंबरदार कैदी आते थे और एक २ करके वहां ले जाते थे। हमें बरामदे में लोहे के जंगले के पीछे खड़ा कर दिया जाता था। रिश्ते नाते के स्त्री, पुरुष, लड़के, लड़कियां बाहर खड़े होकर बातें करते थे। पांच मिंट के अंदर जल्दी २ जो कहना होता

था, दोनों ओर से कह दिया जाता था । मुलाकात समाप्त हुई । दोनों ओर से संतप्त हुए हृदय, कुछ कहने की शक्ति न रखते हुए एक दूसरे की आंखों से पृथक् किये जाते थे । प्रतिदिन किसी न किसी से भेंट हुआ करती थी । और वह वापस आकर कोई घरकी या गांव की अथवा कोई और बात एक दूसरे को सुनाता था । वही बात एक कोठड़ी के अंदर से दूसरी में, दूसरी से, तीसरी में और आगे गुज़ार दी जाती थी । और इसी पर चर्चा सी होती रहती थी, चाहे वह बात कितनी ही निकम्मी और निरर्थक हो । उस समय मालूम होता था कि किस प्रकार मनुष्य एक सामाजिक जीव है। हमें अपना दिन काटने के लिये दूसरों के सम्बन्ध में बातें सुनने और करने का स्वभाव पड़ जाता है । वही हमारी प्रकृति हो जाता है । हमारे जीवन के सुखका आधार दूसरों के सम्बन्धी वृत्तान्त जानने और उन पर अपनी सम्मति देने पर हो जाता है ।

अदालत के कमरे में पहला दिन ।

इसी तरह हमारा समय जेलकी घटनाएं सुनने और बाहर से आई हुई जेलकी सलाखों की छलनी से गुज़रती हुई बातों पर अपनी बुद्धि लड़ाने में कटता था । एक दिन अचानक पोलीस के साठ सिपाही हथकड़ियां लिये हमारी

कोठड़ियों के दरवाज़ों पर आधमके। दस बजे से कुछ देर पहले कोठड़ियों से निकाल कर एक २ को हथकड़ी लगादी, और गिनती करके अदालत के कमरे में लेगए। अदालत के जंगले के अंदर हमें उपस्थित किया गया। पोलीस दरवाज़ों पर हमारे चारों तर्फ़ खड़ी हो गई। अदालत में वकीलों की एक विशेष संख्या विद्यमान थी। कुछ तो सरकारी वकील थे, दूसरे कोई आधे दर्जन गैर सरकारी वकील थे, जिनको सरकार ने इसलिए नियत किया था कि अभियुक्तों की ओर से पैरवी करें।

इसका प्रयोजन यह था कि मुकदमा क्योंकि जेलके अंदर होना था और बाहर से किसी को अंदर आने की इजाज़त न थी, सामयिक सरकार ने आवश्यक समझा कि अभियुक्तों की ओर से वकील अपनी ओर से करें, ताकि किसी प्रकार के अन्याय व अत्याचार की आशंका न हो। लाला रघुनाथ सहाय मेरी ओर से वकील थे। चौंसठ के लगभग अभियुक्तों के नाम सूचि में थे, जिनमें से चार पांच पकड़े नहीं जासके, जिनके पकड़े जाने की आशा होगी। दो मुकदमे के आरम्भ में गिरिफ्तार होकर आगए, और उनके लिये फिर उनके विरुद्ध गवाहों के बयान कराए गए।

भारी षड्यंत्र का नेता।

इतने में तीन कमिश्नर आगए। दो अंगरेज़ थे, तीसरे

लाहौर के पण्डित शिवनारायण वकील थे, सरकारी वकील ने दो तीन दिन तक़रीर की और मुक़दमे के सब वृत्तान्त गवर्नमिंट की ओर से बयान किये। इस तक़रीर में मुझे सब से अधिक भयानक और हरदयालु की अनुपस्थिति में गवर्नमिंट के विरुद्ध एक भारी षड्यंत्र का नेता बताया गया। जिसकी नींव उस समय डाली गई जब कि मैं अमरीका में विद्यमान था। और फिर यहां आकर मैंने उसके संबंध में सब प्रबन्ध किया। इसके पश्चात् बड़े २ वादामाफ़ों अमरसिंह, मूलासिंह, ज्वालासिंह नवाब खान बड़े २ लंबे चौड़े सविस्तर बयान लिये गये, जो कि छपे हुए फुलस्कैप काग़ज़ों के दस्तों पर पुस्तकाकार में मौजूद थे।

मेरे विरुद्ध १९१० ई० के मुक़दमे की सारी फ़ाइल फिर अदालत में पेश की गई। लाला रघुनाथ सहाय ने एतराज़ किया कि यह मुक़दमा एक बार हो चुका है, दो बारा नहीं पेश हो सकता, परन्तु उसके विरुद्ध फ़ैसला दे दिया गया।

मेरे विरुद्ध "तवारीख हिन्द" का छापना एक बड़ा अपराध था। यह दावा था कि यह तवारीख भी षड्यंत्र में सम्मिलित होकर लिखी और छापी गई। दस बजे से लेकर ४ बजे तक अदालत होती थी। एक मास के अंदर कोई चार पांच सौ गवाह सरकार की ओर से हमारे विरुद्ध भुगताये गए, हमारे बहुत से आदमी मुक़दमे की ओर से उदासीन थे, यद्यपि देखने वाले जानते थे कि उनकी दशा पशुवध वाला

में जमा हुई भेड़ों के समान है, जिनके जीवन के दिन थोड़े ही शेष है, पर फिर भी यह हमारे जीवन के सांसारिक दृष्टि से बहुत प्रसन्न और आनन्द थे, हम सबको इकट्ठा बैठकर मिलने और बातचीत करने की आज्ञा थी, कई तो दिनभर बातें करते रहते थे और अदालत को दबा कर चुप कराने की आवश्यकता पड़ती थी। कई दिनभर गर्मी के कारण सोए रहते थे, कोई २ मुकदमे की ओर भी ध्यान रखते थे. बारह बजे के पश्चात् भूने हुए चनों की एक डिबिया सबको मिलती थी। जो कि हमारी सबसे बढ़िया खुराक और टिफ़न (तीसरे पहर का भोजन) था। हमारी गंदी रोटी की अपेक्षा यह चने दूध और मिठाई के टिफन से कहीं अच्छे और स्वादिष्ट थे।

फर्द जुर्म और न्याय की निराशा।

हमारी ओर के सरकारी वकील गवाहों पर जिरह के प्रश्न किया करते थे। और कभी गवाहों की मूर्खता पर प्रायः सभी हँस पड़ते थे। महीने के पश्चात् पंद्रह दिनों के लिये अदालत में छुट्टियां दी गई। और चार पांच को छोड़कर शेष अभियुक्तों पर फ़र्द जुर्म लगाया गया।

मेरे विरुद्ध फ़र्द जुर्म लगाना छुट्टियों के बाद तक स्थगित कर दिया गया, वापसी पर हमारे ओर के गवाह लिए गए, एक और घटना उल्लेखनीय है, एक सरकारी गवाह जेल में पहचान कर रहा था, सरकारी वकील ने उसमें हस्तक्षेप

किया। हम में से भाई ज्वालासिंह ने ज़ोर से कहा, "तुम्हारा क्या काम है, तुम क्यों दखल देते हो?"

अदालत ने इसे अपमान समझा और सार्येंट्स को लेजाकर भाई ज्वालासिंह को जेल का दण्ड तीस बेंत लगा दिये गए। रात को यह हाल मालूम हुआ, दूसरे दिन हम सब ने वकीलों को बंद कर दिया कि वे मुकदमे में कोई भाग न लेवें, न्याय की कोई आशा न थी। अब कुछ अध्यायों में अपने प्रारम्भिक जीवन की घटनाएं लिखने के पश्चात् मैं फिर इसी सिलसिले का शुरू करूंगा। प्रारम्भिक बातें सारे मामले को साफ़ करने में सहायता देंगी।

५—मेरे विचार।

होश आते ही आर्य्य समाज में।

प्राचीन समय में इस देश में आठ दस वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत पहनाया जाता था। इस विचार से कि बालक ने इस समय से होश संभाल लिया होता है, और वह उसका दूसरा जन्म होता है। मुझे तो अपनी आयु के चौदहवें वर्ष के अंदर होश आया मालूम होता है, जब कि मैं चकवाल स्कूल के अंदर दूसरी मिडल में पढ़ता था। इस से कुछ काल पश्चात् मुझे मोहरके तप की बीमारी हुई और यह एक ही बीमारी मुझे अपने सारे जीवन में याद है। कई मास तक मैं निर्बल रहा। उस समय मेरी माता का प्रसूत अवस्था में

देहान्त हो गया। मुझे विवश होकर उसकी मृत्यु के पश्चात् क्रिया कर्म करना पड़ा, जिन से मेरा दुर्बल हृदय अत्यन्त व्याकुल हो उठा। अच्छा होने पर मैंने आर्य्य समाज के विचार सुने और मुझे ठीक प्रतीत हुए। मेरे हृदय पर इतना अमिट प्रभाव पड़ा कि जब दूसरे विद्यार्थी अपनी पुस्तकें पढ़ा करते और परीक्षाओं की तैयारी करते थे, मैं सत्यार्थ प्रकाश और पण्डित लेखराम रचित पुस्तकें पढ़ा करता था। मैंने लाला हंसराज जी को पत्र लिखा कि वे वहां उपदेशक भेजें। अगले वर्ष वहां समाज स्थापित हुई। मेरी श्रेणी के लगभग सारे के सारे विद्यार्थी और २ बोर्डिंग हौस के मुसलमान बोर्डर तक भी समाज में जाते और चंदा दिया करते थे।

मेरी पढ़ाई का विषय आर्य्य समाज हो गया।

पढ़ाई में हैडमास्टर मुझे सब से अच्छा समझते थे। परन्तु समाज ने मेरे हृदय की अवस्था बदल दी और आर्य्य समाज ही मेरी पढ़ाई का विषय हो गया, मिडिल की परीक्षा के पश्चात् मैं लाहौर डी० ए० वी० स्कूल में प्रविष्ट हुआ। इसी समय कालिज के साथ एक उपदेशक क्लास अष्टाध्यायी और वेद पढ़ाने के लिये खोली गई। मैं स्कूल में पढ़ता रहूं। यह मुझे अच्छा मालूम न हुआ। अपने घर वालों की सम्मति के बिना मैं उसमें दाखल हो गया। मेरी प्रारब्ध ऐसी अच्छी न थी। उसी वर्ष समाज में फूट का बीज बोया गया। वह

क्लास कालिज से हटा दी गई, और कुछ समय चलकर बंद हो गई। मैं न इधर का रहा न उधर का। अस्तु, ऐन्ट्रेन्स में एक दो मास शेष थे। मैंने परीक्षा देदी और पास हो गया।

जीवन कालिज की भेंट।

अगले वर्ष मेरा विचार हुआ कि मैडिकल कालिज में प्रविष्ट होकर मिश्नरी के रूप में समाज की सेवा करूं। इसी वर्ष आर्य्य समाज के दो दल हो गए। लाला हंसराज को काम करने वालों की बड़ी आवश्यकता थी। दयानन्द कालेज को खतरा था। मैं दो वर्ष तक इधर उधर फिर कर अथवा दूसरे प्रकार से स्कूलों में जाकर कालिज के पक्ष में बातचीत करता रहा। एफ़० ए० की परीक्षा पास करने के पश्चात् एक वर्ष जोधपुर में रहकर राजपूत स्कूल स्थापन किया, परन्तु वहां रियासत की दल बंदी से दुखी होकर वह छोड़ना पड़ा। इतने में बी० ए० की परीक्षा निकट आगई। और उसमें सम्मिलित हो गया। बी० ए० के पश्चात् विवाह का प्रश्न आया। देर तक मैं सोचता रहा, मैं इसी परिणाम पर पहुंचा कि एक नवयुवक के लिये कुँवारा रहकर काम करने में गिरने का बहुत भय है, इस कारण विवाह कर लिया। तत्पश्चात् ऐबटाबाद ऐंगलो संस्कृत स्कूल की हेडमास्टरी में दो वर्ष व्यतीत किये। वहां से एम० ए० करने की इच्छा हुई और कलकत्ते में एक वर्ष पढ़ाई की, परन्तु केवल पंजाब की एम०

ए० में १९०२ में सफलता हुई। इसके पश्चात् दयानन्द कालिज लाहौर में प्रोफ़ेसर रूप में सम्मिलित हुआ।

अफरीका प्रस्थान।

अभी तीन वर्ष काम करते न व्यतीत हुए थे, कि अफ़रीका निवासी भारतीयों के पत्र एक प्रचारक के लिए आए। इन तीन वर्षों के अंदर छुट्टियों में और दूसरी प्रकार से पंजाब का कोई बड़ा कस्बा न रहा जहां कि जाकर लेक्चर न दिया हो। लाला हंसराज बैठे हुए कहने लगे, कि केवल एक ही पुरुष जा सकता है। मैंने स्वीकार कर लिया, उसी समय तार दी गई और मैं जाने पर तैयार हो गया, बंबई समाज में मैंने जाते हुए अंगरेज़ी में व्याख्यान दिया। समाज ने बड़े सत्कार से विदा किया, और जहाज़ पर सवार हुआ। भारत सागर मई के महीने में बहुत ही खराब होता है। पहले कुछ घण्टे तो मैं होश में रहा, पश्चात् कैबिन के अंदर जाकर लेट रहा। जी इतना घबराया कि सुधबुध जाती रही, अपने आप का कुछ ज्ञान न रहा।

अफरीका में

कु दिन के पश्चात् जहाज़ बंदरगाह पर लगा और मैं उठा। इतना समय भूखे प्यासे रहकर चलने की शक्ति न रही थी। परमेश्वर का धन्यवाद किया, पृथिवी दिखाई दी। जहाज़ से उतर कर हबशियों का एक कस्बा देखा। अंदर जाकर

डाकखाने की ओर गया, वहां का पोस्टमास्टर एक मित्र निकल आया। उसने भोजनादिक का प्रबन्ध किया। दूसरे दिन मुंबासे पहुंचा। वहां के आर्य्य समाजी भाई जहाज़ पर आगए और उतार लिया। मुंबासे में समाज के सम्बन्ध में व्याख्यान दिये। वहां से तीन सौ मील की लम्बी रेलवे लाइन नैरोबी को जाती थी। वहां से कुछ दिन के लिये नैरोबी गया और समाज में लैक्चर दिये।

अगले जहाज़ में रवाना होकर तीन सप्ताह के पश्चात् डरबिन पहुंचा। कई मास पर्य्यन्त नेटाल ट्रांसवाल और केप कालोनी के प्रसिद्ध स्थानों का चक्कर लगाया और लैक्चर दिये। इन लैक्चरों में गोरे लोगों की भी एक भारी संख्या होती थी। अपने आदमियों ने बड़े प्रेम से स्थान २ पर स्वागत किया। और दयानन्द कालिज को चंदा देने के लिये सात आठ हज़ार रुपया चंदा एकत्र करके भेज दिया। काम समाप्त करने के पश्चात् मेरी यह इच्छा हुई कि इंगलैंड होकर वापस स्वदेश को लौटूं।

महात्मा गांधी के दर्शन।

डरबिन के व्याख्यानों के अंदर मुझे महात्मा गांधी जी के दर्शन हुए। मेरे एक व्याख्यान के अवसर पर उन्होंने प्रधान का काम किया। जौंसबर्ग (ट्रांसवाल) नगर में उनके मकान पर लगभग एक मास ठहरा। उनके सरल जीवन और तप का उस समय भी मेरे हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ा था। श्याम

जी कृष्ण वर्मा उनके मित्र थे, और दो और अंगरेज़ उनके मित्र थे, जिनकी ओर उन्होंने पत्र लिख दिये। केप टाऊन से जहाज़ में सवार होकर तीन सप्ताह के अंदर इंगलैंड की भूमि पर पांव रखा।

इंगलैंड की स्वतंत्र भूमि पर।

इंगलैंड की भूमि स्वतंत्रता की भूमि होने के कारण बड़ी पवित्र है। और वहां जाकर सचमुच मनुष्य समझता है कि उसने एक पवित्र और स्वतंत्र भूमि पर पांव रक्खा है। इंगलैंड की अवस्था और सोसाइटी की चाल ढाल में स्वतंत्रता की तरङ्ग पाई जाती है। कोई ही मनुष्य होगा जिस पर इस बात का एक वार प्रभाव न पड़ जाए। यह वह समय था, जब कि लार्ड कर्ज़न के शासन काल में भारत में जागृति सी उत्पन्न हुई थी। इस जागृति के अन्दर रूस और जापान का युद्ध और जापान की विजय थी। इस जागृति का प्रभाव इंगलैंड के भारतीय विद्यार्थियों पर बहुत पड़ा। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने एक "इण्डिया हौस" खोलकर नियम पूर्वक प्रचार का काम आरम्भ कर दिया। सावरकर और हरदयालु इस नये विचार के बड़े प्रचारक थे।

भारतवर्ष का सच्चा इतिहास।

कुछ काल मैं इण्डिया हौस में रहा। कुछ दिन आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज में व्यतीत किये। सोचते २ मैंने यह विचार

किया कि लण्डन में साल छ महीने ठहरकर भारत के इतिहास का स्वाध्याय बृटिशम्यूज़ियम की प्रसिद्ध लायब्रेरी में करूं। प्रारम्भिक और वास्तविक घटना को पढ़ करके मेरे मन में एक बात प्रगट हुई कि भारतवर्ष के सब के सब इतिहास एक विशेष उद्देश्य को सामने रखकर लिखे गये हैं। इन सब में भारत वासियों को तो तुच्छ समझा गया है। उनकी अवस्था उनकी उन्नति व अवनति के कारणों को जान बूझ कर दृष्टि से ओझल कर दिया गया है, और केवल विजय करनेवाले लोगों के चरित्र और वीरता कोटिको भारत के इतिहास का नाम दिया गया है। सवेरे बृटिश म्यूज़ियम में जाकर सांझ को वहां से वापस आता था, डेढ़ वर्ष के परिश्रम के पश्चात् भारतवर्ष के इतिहास की सामग्री इकट्ठी की, और लण्डन यूनिवर्सिटी के सामने एम. ए. की डिगरी के वास्ते एक प्रस्ताव "Thesies" "भारत में बृटिश राज्य का अभ्युदय" के विषय पर लिखकर दिया। किंग कालिज का प्रोफ़ेसर इसे देखता रहा, परन्तु इस प्रस्ताव को देखने के लिये यूनिवर्सिटी ने दो ऐंगलो इन्डियन परीक्षक नियत कर दिये। उन्होंने इसे स्वीकार न किया।

इंगलैंड वालों को राज्य विप्लव के स्वप्न।

इस समय १६०८ ई० शुरू हो गया था। १६०७ की मई में ५७ के राज्य विप्लव को पचास वर्ष होने लगे। लण्डन के

कई समाचार पत्रों ने देश में फैलते हुए आन्दोलन को देखकर इशारे करने आरम्भ कर दिये कि जैसे पलासी के युद्ध के सौ वर्ष पीछे राज्य विप्लव हुआ था, ऐसा ही अब यह पचास वर्ष विप्लव के पश्चात् कुछ न कुछ हलचल होगी। बंगाल से स्वदेशी और बायकाट की तरङ्ग चलती हुई पञ्जाब में पहुंची। वहां पर भूमि और नहर के लगान के सम्बन्ध में गवर्नमिंट ने नया कानून बनाया, जिससे पञ्जाब के कई ज़िलों में अशान्ति फैल गई। गवर्नमिंट को पहले से ही मई की ११ तारीख़ से खतरा लग रहा था। उन्होंने इस समय लाला लाजपतराय और सर्दार अजीतसिंह को चुपके से पकड़कर बर्मा में नज़रबन्द कर दिया। इसका प्रभाव भारत के लोगों पर भी पड़ा, परन्तु इंगलैंड में पढ़ने वाले नवयुवकों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। मेरे साथ लाला लाजपतराय का निज का सम्बन्ध था। वे मुझे कभी २ देश की अवस्था की सूचना देते रहते थे। मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। लण्डन में कई जलसे किये गए, जिन में मैंने भी व्याख्यान दिये।

गुप्त समितियां।

बङ्गाल पर विशेष प्रभाव यह हुआ कि वहां यह समझा गया कि खुली एजिटेशन गवर्नमिंट सहन नहीं करती, और आवश्यकता पड़ने पर बिना किसी कानून और मामला चलाने के देश निकाला देने पर उद्यत हो जाती है। इस अन्याय का मुकाबला करने के लिये हमारे पास कोई शस्त्र होना चाहिये।

रूसके क्रान्तिकारी दलने बम्ब का प्रयोग किया था, बङ्गाल ने बम्ब की शरण ली और एक साहब लगडन इसलिये पहुंचे कि बम्ब सीखने का प्रबन्ध करें। वहां पर भी इन विचारों का एक दल विद्यमान था। उनकी आपस में भेंट हुई और रूसी लोगों से बम्ब बनाने की विधि सीखी गई।

इस गुप्त गोदना से मेरा कोई सम्बन्ध न था।

मुझे इतना ज्ञान अवश्य था कि इस प्रकार के विचार लगडन व पैरिस में पाए जाते हैं, यद्यपि इगिडया आफिस के सज्जनों की ओर से मुझे इशारे दिए गए कि मैं ऐसे लोगों के साथ कभी मिला न करूं।

मेरे मन में कभी इतना भय व कायरता उत्पन्न नहीं हुई कि मैं लगडन में रहता हुआ किसी भारतीय के साथ मिलने से घबराऊं। इनके साथ मिलने से यद्यपि मुझे प्रत्यक्ष रूप से कोई संकोच न था, परन्तु फिर भी मेरे अपने जीवन का उद्देश्य नियत था, मैंने दयानन्द कालिज में काम करने का संकल्प किया था। इंगलैंड में रहते हुए भी मुझे कालिज की ओर से सहायता मिलती थी, मैं अपने लिये यह असम्भव समझता था, कि मैं किसी ऐसे क्रान्तिकारक पोलीटिकल काम में भाग लूं, जिस से कि मैं समाज में काम करने के अयोग्य हो जाऊं।

अंगरेजों की शिक्षा शैली विनाश के लिये है।

हां मेरे ऐतिहासिक विज्ञान में मेरे विचारों के अन्दर एक

परिवर्त्तन अवश्य हो गया था, और वह यह कि अंगरेज़ों की शिक्षा प्रणालि हमारी जाति को जातीयत्व से गिराने के लिये रची गई है, लार्ड विलियम बैन्टिंग की तालीमी कमेटी की युक्तियां पढ़कर मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि जिस प्रकार विजयिनी जातियां रोमन और अर्ब लोग अपने विजित प्रदेशोंमें अपनी भाषा और साहित्य का प्रचार करके विजित जातियों को उनका जातीयत्व नष्ट करके अपने साथ बांधना चाहते थे, ठीक वैसे ही उन्हीं कारणों से अंगरेज़ी सरकार ने भारत में अंगरेज़ी भाषा और साहित्य को प्रचलित किया। आक्सफ़ोर्ड में लाला हरदयालु पढ़ा करते थे। उनका मेरे साथ कभी २ इकट्ठे रहने का संयोग हो जाता था। वे मेरे लाहौर के परिचित थे। लण्डन जाकर उनके साथ कुछ समय मैं रहा था। मैंने उनके सामने अपने विचार प्रकट किये, वे भी मेरे विचार से सहमत थे। वे इन पर अधिक विचार करने के पश्चात् दूसरी सीमा पर चले गए। उनकी स्त्री वहां साथ थी। यद्यपि उनके सिर पर खर्च का बहुतसा बोझ था, परन्तु फिर भी भारत सरकार का वज़ीफ़ा लेना अस्वीकार कर दिया और यूनिवर्सिटी के सबके सब वज़ीफ़ छोड़ दिये। मैं उन्हें कहता रहा कि उन्हें इस अवस्था में अपनी शिक्षा को पूरा कर लेना चाहिये। उनके प्रोफ़ेसर भी यही कहते थे, परन्तु उनकी एक बार की की हुई नां फिर कभी हां में नहीं बदली। वे कहने लगे कि यह डिग्री हमारे लिये ऐसी है जैसे

अफ़गानिस्तान को हम जीत लें और अफ़गानों को बनारस में शिक्षा देकर पण्डित की डिग्री प्रदान करें। वे सब कुछ त्याग कर वापस भारत को चले आए और लाहौर पहुंचकर अपने विचारों के प्रचार करने का एक मठ बनाना चाहा। विद्यार्थियों को कालिज छोड़ने और वकीलों को वकालत छोड़ने का उपदेश होने लगा। कुछ समय पीछे मैं भी वापस भारत चला आया और आते ही सीधा अपने काम पर चला गया। हृदय पर जो थोड़े बहुत पोलिटिकल विचारों के संस्कार बैठ गए थे, उन्हें एक तरह से भुलाने का प्रयत्न किया, ताकि बिना रोक टोक अपनी शक्ति समाज के प्रचार में लगा सकूं। एक बात मेरे अन्दर थी, मैं कभी भी किसी मनुष्य के साथ मिलने अथवा बातचीत करने से नहीं डरा। इसका प्रभाव गवर्नमेंट की दृष्टि में मेरे विरुद्ध पड़ता था।

अंगरेज़ भली मानस जाति है।

इंगलैंड के सम्बन्ध में मेरी सम्मति बहुत अच्छी थी। मैं समझता था और अब भी समझता हूं कि अंगरेज़ जाति का व्यक्ति गत कैरेक्टर और बर्ताव संसार की कदाचित् समस्त जातियों से बढ़कर भलमंसी का है। दूसरे देशों में से इंगलैंड में जिस स्वतंत्रता और सुख से हम रह सकते हैं वह हमें किसी दूसरे स्थान पर प्राप्त नहीं हो सकते। मैं इस में अपना एक दुर्भाग्य समझता हूं कि एक ऐसी भद्र जाति के

साथ हमारे पबलिक सम्बन्ध इस प्रकार के अस्वाभाविक हैं कि एक दूसरे को, हम सदा ग़लत समझते हैं और ग़लत समझते रहेंगे। परन्तु यह किसी अंगरेज़ का दोष नहीं। अंगरेज़ जाति अपने प्राचीन काल के इतिहास और वृत्तान्त की वैसी ही दास है, जैसी कि हमारी। वे भी उड़ कर इस अवस्था से ऊपर नहीं जा सकते। अंगरेज़ लड़के लड़कियां सब से बढ़कर सभ्यता और आचारों को जानती हैं। मुझे एक लड़की की बात कभी नहीं भूल सकती। लण्डन में पहुंचे हुए दूसरे दिन मैं उठ कर बाहर जाने लगा। मैंने अभी अंगरेज़ी टोपी खरीद नहीं की थी। मेरे सिर पर साफ़ा बंधा था। एक दस वर्ष की लड़की स्कूल को जा रही थी। वह मुझे देखकर खुश सी हुई और खड़ी हो गई। मेरे आगे जाने पर अपना हाथ आगे करके कहने लगी "क्या तुम मेरे साथ हाथ मिलाना पसंद करोगे ?" मैंने हंसकर कहा "बड़ी खुशी से" मेरे साथ हाथ मिलाया और बड़ी खुशी से हंसती हुई चली गई।

इंगलैंड को बाहर के लोग कई कारणों से याद करते हैं, मेरे हृदय पर एक ही प्रभाव रहा, कि वहां के सोशियल व्यवहार इतने सभ्य हैं कि वहां मनुष्य सबसे अधिक सुख से रह सकता है॥

इंगलैंड से वापसी और काम ।

वापस आने पर मैंने पहले की तरह समाज का काम आरम्भ कर दिया । यद्यपि यह मेरी इच्छा थी कि दयानन्द कालिज यूनिवर्सिटी से स्वतंत्र होकर अपनी शिक्षा प्रणालि को बदल डाले । विशेषतः इस बात में कि हमारी शिक्षा का माध्यम हमारी अपनी भाषा होना चाहिये । इसके लिये तो समय की प्रतीक्षा करनी थी, इसलिये मैंने यह यत्न किया, कि कालिज का आयुर्वेदिक विभाग स्वतंत्र होने के कारण अधिक उन्नति करने का अधिकारी है । १६०८ की छुट्टियां मैंने बर्मा में गुज़ारीं ताकि प्रचार के साथ इस विभाग के लिये विशेषतया चंदा एकत्र करूं । उसमें बहुतेरी सफलता हुई, कोई आठ नौ हज़ार रुपया चंदा प्राप्त हुआ, वापस आने पर मेरे मकान में एक चोरी हुई जिसमें मेरा असबाब और सबके सब कागज़ जो कि इतिहास की सामग्री के रूप में एकत्र किये थे, चुरा लिये गए । इसका मुझे इतना दुःख हुआ कि गिरिफ़-तारी और सज़ा भी का नहीं हुआ था । मेरा केवल परिश्रम ही व्यर्थ नहीं चला गया और न केवल रुपये की क्षति हुई प्रत्युतः इस सामग्री का फिर हाथ लगना असम्भव था । मनुष्य का जीवन विचित्र है, विचार कुछ होते हैं, होता कुछ है ।

८—तलाशी और गिरिफतारी।

बम्ब की पहली दुर्घटना।

१९०८ में ही कलकत्ते में बम्ब गिराने की पहली दुर्घटना हुई। इस षड्यंत्र का सारा सूराग़ मिल गया, और कई आदमी गिरिफ़तार हुए, इस समय तक बङ्गाल का जोश बढ़ता गया था। बङ्गाल में अनेक प्रकार की सम्मितियां बन चुकी थीं, जिनके द्वारा क्रान्ति कारक विचारों का प्रचार होता रहा। इस मामले की बड़ी घटना तो गोसाईं वादामाफ़ का जेलके अन्दर पिस्तौल से मारा जाना था, जिस के लिए कन्हाई लालदत्त और सत्येन्द्रनाथ बोस का नाम याद रहेगा। जिन्हों ने प्राणों को हथेली पर रखकर उस दिन दिहाड़े उसे जेलके हस्पताल में मार डाला। पंजाब की गवर्नमेंट अधिक चौकसी हो गई और लाला हरदयालु यहां से हमेशा के लिए चल दिए और पैरिस व लण्डन में जा अड्डा जमाया।

मद्रास का दौरा।

लाहौर में मुझे एक मकान के अन्दर रहते हुए एक वर्ष से अधिक हो गया था। १९०९ की कालिज की छुट्टियां आने पर मैंने वह मकान छोड़ दिया। मेरा विचार मद्रास में प्रचार के लिए जाने का था और छुट्टियों के पश्चात् भी ठहरने का

था । मैंने अहमदाबाद में लेक्चर दिया । वहां से पूना और बङ्गलौर होता हुआ शीघ्रम से नियम पूर्वक दौरा आरम्भ कर दिया । आठ दस दिन प्रत्येक बड़े गांव में ठहरता हुआ मद्रास के सम्पूर्ण बड़े २ कस्बों में धार्मिक व्याख्यान देता रहा । मद्रास में १५ दिन से अधिक ठहरा और कई लेक्चर दिये । समाज भी वहां स्थापित किया गया, परन्तु वहां से खुले तौर पर पोलीस साथ लग गई । मछली पटाम राज मन्दरी और हैदराबाद होता हुआ पांच मास के पश्चात् नवम्बर की पहली तारीख के लगभग लाहौर पहुंचा ।

मेरे मकान की तलाशी ।

मेरे वाला मकान खाली होने पर सर्दार किशनसिंह और अजीतसिंह ने उसे किराये पर ले लिया । और इसे "भारत माता" का हैड कार्टर बनाया । कुछ देर इस मकान में रहने पर सर्दार अजीतसिंह को मालूम हुआ कि सरकार उनके आन्दोलन को पसन्द नहीं करती । और गिरिफ़तार कर लेगी । वे और उनके साथी सूफ़ी अम्बाप्रसाद लाहौर छोड़ कर कराची के रास्ते ईरान की ओर भाग गए, उनको गए हुए कोई एक मास से अधिक हो चुका था । सर्दार किशन-सिंह उस मकान में रहना नहीं चाहते थे, पोलीस उस मकान का नीरीक्षण करती होगी ।

लौटने पर मुझे मकान की आवश्यकता थी । सर्दार

किशनसिंह ने खबर दी कि वे मकान छोड़ देंगे, मैं उसे ले सकता हूं। मैंने मकान की चाबी दूसरी तारीख ही को मंगा ली, और अपना असबाब उस मकान में ले आना शुरू कर दिया। सर्दार किशनसिंह दो दिन के लिये बाहर चले गए और अपना सामान वहां से न निकाला। पोलीस सर्दार अजीतसिंह की घात में बैठी थी। उन्होंने मुझे वहां आते जाते देखकर एक और शिकार फंसता देखा, और ५ नवम्बर को मैं कालिज में था कि मकान के आस पास पोलीस की गार्द बैठ गई, और मकान बन्द कर दिया। मैं कालिज से गया और हालत देखी। सुपरिन्टैन्डैन्ट पोलीस को मिलकर स्वाभाविकतया पहला प्रयत्न यह किया, कि मकान की दरबन्दी अनुचित थी। परन्तु पोलीस अफ़सरों ने बहुत चतुराई की थी। उन्हों ने मालिक मकान से इकरारनामा ले लिया। जो कि सर्दार अजीतसिंह के नाम था। मैंने कहा, मैंने उनसे मकान ले लिया है। अब प्रश्न यह था कि उनका सामान वहां पर था या नहीं। सामान था, इसलिये मकान की तलाशी अवश्य होगी।

तलाशी से निकले हुए कागज़।

दो तीन दिन के अंदर सर्दार किशन सिंह वापस आगए। तलाशी होनी शुरू हुई, जहां कि मेरा असबाब पड़ा हुआ था। मेरे असबाब में अधिकांश वस्तुएं लंडन की थीं, जिनमें वहां की आई हुई चिट्ठियां भी पड़ी थीं। उन चिट्ठियों

के साथ कोई २ टुकड़े काग़ज़ के थे, जिन पर वहां पर कभी कोई ख़याल मेरे मन में बारबार आता था, मैं उसे लिख लेता था। कुछ चिट्ठियां आदि मेरी अनुपस्थिति में आई हुई मुझे वापसी पर मिलीं। उनमें एक लैथो पर छपा रसाला था, देखने पर मुझे संदेह हुआ कि बंब बनाने के सम्बन्ध में था। मैंने उसे यूं ही उपेक्षा से रख दिया। मैं सोचता था कि जब इसके विषय में पूछा जायगा तो मुझे क्या कहना चाहिये। मैंने निश्चय किया था कि जो सच २ है वह बता दूंगा। परन्तु तलाशी होते हुए मुझे हैरानी हुई कि मेरे डैस्क से ऐसी चिट्ठियां और काग़ज़ निकलने शुरू हुए जो कि सर्दार अजीत सिंह के नाम के उनके मित्रों की ओर से लिखे थे। उनके हस्त लिखित मांडले के निर्वासन के काग़ज़ थे। मैंने स्वभावतः उनको मिला देने का दोष पोलीस के सिर लगा दिया। जब कोई ऐसी मिली हुई वस्तु निकलती थी, मैं कह देता था कि मैं नहीं जानता, कहां से आई है। जब वह रसालासा निकला, तो भी मैंने वैसा ही कह दिया। यद्यपि मैं समझता था कि वह झूठ है, परन्तु यदि अकेला वही होता तो मैं कभी ऐसा करने पर प्रस्तुत न होता।

इसके अतिरिक्त लाला लाजपतराय के कुछ पत्र मेरे नाम थे, जो कि उन्होंने भारत वर्ष से मुझे वहां लिखे थे। काग़ज़ के टुकड़ों पर जो ख़यालात लिखे थे, वे मोटे २ दो विषयों पर थे। एक तो यह कि "भारत वर्ष का भविष्य में कांस्टीच्यूशन क्या होना चाहिये" इसमें मैंने लिखा था कि

गवर्नमिन्ट की राजधानी देहली और शिमला हों। रियासतों के लिये एक अलहदा "हौस आफ़ लार्डस" की तरह चेम्बर हो, जिसका प्रेज़िडेन्ट नेपाल जैसी रियासत का राजा हो। दूसरा प्रश्न हिन्दु मुसलमान का था। उस समय में इस वर्तमान एकता का विचार नहीं कर सका। मेरा विचार था कि सिन्ध पार का इलाका अफ़ग़ानिस्तान और सीमा प्रदेश से मिला कर एक बड़ी मुसलमान सल्तनत होनी चाहिए। वहां से सब हिन्दु इधर चले आए और हिन्दुस्तान के मुसलमान उनकी जगह उस सलतनत में चले आयें।

कालिज समाज वालों की परीक्षा।

मैं कालिज से उस दिन अन्तिम विदा लेकर घर चला गया। कालिज दल के आर्य्य समाजियों पर दूसरी बार विपत्ति आई। पहली बार सन् १९०७ ई० में लाला लाजपत राय के देश निकाले पर उनमें खलबली पड़ गई। वह उनके आत्मिक बल की परीक्षा थी। लाला लाजपतराय के पोलीटीकल काम से उनका कोई सम्पर्क न था, यह सब संसार जानता था। इनके अपने मनका भय था, जिससे वे दौड़े गये, और ताक़त के पाओं पर जा गिरे। गुरुओं की परीक्षा हुई थी, पंजाब के खत्री उस समय आध्यात्मिक बल अधिक रखते थे। इस समय आत्म बल ने भयभीत होकर शारीरिक बल के आगे सिर झुका दिया। वह आध्यात्मिक शक्ति ही

न रही। दूसरी घटना मेरे १९१० के मुकदमे की थी। इस समय गवर्नमिंट की ओर से दूसरी डिमान्ड हुई। "जो हमारे साथ नहीं, वह हमारे ख़िलाफ़ हैं" समाज ने यह फ़ैसला किया कि "हम गवर्नमिन्ट के साथ रहेंगे" मुकद्दमा शुरू होने से पहिले मुझे मौक़ूफ़ कर दिया गया।

मेरी गिरिफतारी।

एक मास पर्य्यन्त मैं घर रहा। इसी वर्ष कांग्रेस लाहौर में होनी थी। जब कांग्रेस हो चुकी, तो मुझे गांव में मालूम हुआ, कि कोई आदमी मेरी बाबत पूछ ताछ करने वहां आया था। मैं लाहौर चला आया। लाहौर स्टेशन पर पहुंचते ही मैंने देखा कि पोलीस की गार्द वहां खड़ी थी। मैं बाहर निकल आया और टांगे की ओर जा रहा था कि इतने में कोतवाल रहमत उल्ला मेरे पास आए, और कहा कि आप मेरे साथ गाड़ी में आजांय, आप हमारी हरासत में हैं। मैंने कहा बहुत अच्छा, टांगे का किराया तो बच गया। मैं उनके साथ हो गया, पोलीस आगे पीछे हो गई और हम देहली दरवाज़े की कोतवाली में पहुंच गये। रास्ते में उसने मुझे बताया, कि मुझे ज़ेर दफ़ा ११० गिरिफ़्तार किया गया है। मैंने हैरानी से पूछा, उनको मेरे आने की कैसे खबर होगई थी? जो मालूम होता है, वह आदमी गांव से मेरे पीछे चला आया, और लियूके से तार दे दी। कोतवाली में मैंने स्नान किया, भोजन खाया,

फिर अदालत के सामने आए। लाला रघुनाथ सहाय वकील को मैंने सूचना दी। वह आगए और ज़मानत की दरख्वास्त दी। पंद्रह हज़ार रुपया की पांच आदमियों की ज़मानत मांगी गई। ज़मानत का प्रबन्ध होगया, मुझे रिहाई होगई मोरी दरवाज़े एक होटल में सात आठ रुपया महीना देकर मैंने एक कोठड़ी में रहना शुरू किया।

तीन साल के लिये जमानत।

तीन मास से ऊपर मुक़द्दमे में खर्च हुए। एक खास मैजिस्ट्रेट सरकारी मुक़द्दमों के लिये हुआ था। गवर्नमिन्ट का विचार था कि मैं शुरू से ही गवर्नमिन्ट के विरुद्ध था, और न केवल बर्मा और मद्रास में वरन् अफ्रीका में गवर्नमिन्ट के विरुद्ध काम करता रहा। इसलिये आवश्यक हुआ कि उन सब स्थानों में उन आदमियों के बयानात कलम बंद करके मंगाए जाएं, जिनसे मैं मिला था और जिन्हों ने मेरे व्याख्यानों को सुना था। लाला रघुनाथ सहाय ने बड़े परिश्रम से काम किया। तत्पश्चात् लाला दुर्गादास जी उनकी सहायता के लिये आए। निर्णय हुआ, कि तीन साल के लिये शान्ति रक्षा की ज़मानत दूं, अन्यथा सख्त क़ैद में गुज़ारूं। मेरी अपनी सम्मति थी कि प्रत्येक पब्लिक काम करने वाले के लिए इस देश में जेल में जाना न केवल लाभदायक वरन् आवश्यक था। मेरी सम्मति थी कि मैं ज़मानत देना नहीं चाहता। एक तो मजिस्ट्रेट ने आग्रह

किया, और दूसरे कई सुहृद मित्रों ने यही उचित समझा, और मुझे अपना विचार छोड़ना पड़ा। यदि मैं उस समय जेल में चला जाता तो कदाचित् दूसरी बार जाने से बच जाता। आदमी हालात का पुतला है, समझना है कि करने वाला मैं हूं, एक विचित्र भ्रमजाल है, सब समय करवाता है, और वह स्वयम् करता हुआ प्रतीत होता है।

मुकद्में के पश्चात् चार मास गांव में।

मुकद्दमा हो जाने के पश्चात् मुझे चार मास तक गांओं में रहने का संयोग हुआ। कोई बीस वर्ष के जीवन के पश्चात् यह पहला अवसर था। जबकि मैं इतना समय निरंतर गाओं में रहा। वहां मैं कुछ काम न करता था, और गांओं के लोगों की सोसायटी थी। वहां पर बिरादरी की ज़ातों में परस्पर भेद भाव और समानता के विचारों पर चर्चा रहती थी। पहले २ तो मैं उनको बहुत कुछ बातें समझता रहा, परन्तु शनैः २ दिन रात इनका ज़िक्र सुनने से मेरे हृदय पर गहरा असर होगया, और मैंने एक दल की सहायता करनी आरम्भ करदी, जिसको मैं सच्चा समझता था। कुछ काल ऐसा होता रहा। एक दिन दूसरे दल के एक मनुष्य ने मुझ से कहा, हम तो आपको देश हितैषी और धर्मात्मा समझते थे, आप इन झगड़ों में बहुत दिल चस्पी लेने लग गए हैं। उसके इस रिमार्क ने मुझे अपने २

पुराने जीवन पर दृष्टि डालने का ध्यान रख था। इससे मुझे इस सिद्धान्त का तत्त्व मालूम हुआ कि मनुष्य स्वयं कोई बड़ा नहीं है, बड़े और छोटे हालात उसे बड़ा छोटा बना देते हैं, जो जहां पर रहता है, बंदी का बनके रहता है।

तवारीख़ हिन्द का मामला।

मैं एक बात लिखनी भूल गया। मेरी चोरी के बाद बहुत देर तक तो मुझे अपने तवारीख़ी मसाले के गुम हो जाने का शोक रहा। अन्त में मेरे मित्रों ने मुझे सलाह दी कि जो कुछ मुझे कंठ याद था, साधारण पुस्तकों की सहायता से उर्दू भाषा में एक तारीख़ लिख देना उचित है। मैंने लिखना प्रारम्भ किया, और कुछ छोटी २ प्रतियां इस विषय पर लिखीं। उन में से कुछ मैंने संशोधन के लिये एक मित्र को दे दीं, और दो तीन मेरे पास लिखी पड़ी थीं। जब यह तलाशी हुई, पोलीस उन प्रतियों को भी ले गई। इस कहानी को समाप्त कर देने के लिये इतना और बता देना आवश्यक है, कि अमरीका से वापस होते हुए मैं कुछ काल लंडन ठहरा। वहां से कुछ वस्तुएं ख़रीदनी थीं। अवकाश समय में मैंने अपने बाकी उल्लेखनीय विषय को लिख डाला। वापस आने पर लाला पिण्डी दास मुझ से दो प्रतियां ले गये। ताकि एक क्रम में लाकर पुस्तकार में छपवावें। उर्दू पुस्तक कातिब लिखते हैं; इस लिये लिखाई और छपाई में बहुत सा समय लग गया। इतने में युद्ध छिड़ गया।

सरकार ने यह केस बनाना चाहा कि युद्ध में षड़यंत्र रचने के प्रयोजन से छापी गई है। यह बात सर्वथा निर्मूल है, इस में सरकार के विरुद्ध कोई बात नहीं पाई जाती मेरा उद्देश्य लोगों के जीवन का इतिहास लिखना था इस लिये शासकों का ज़िक्र ही बहुत थोड़ा किया गया है, लोगों के सम्बन्ध में घटनाएं अधिक वर्णन की गई हैं।

७–मार्टीनीक की कोठड़ी।

अमरीका की यात्रा।

गांव में रहते २ मेरा मन उकता गया। अब आर्य समाज का अथवा दूसरा पबलिक काम मेरे लिये कठिन हो गया था। इस समय न केवल गवर्नमिन्ट की ओर से सन्देह होता प्रत्युत लोग ही इतने भयभीत थे कि मिलना जुलना पसंद न करते थे। स्वदेशी का इन दिनों भी ज़ोर था। मैंने विचार किया कि इन्डस्ट्रियल लाइन में जाकर अपने आपको उपयोगी बनाया जावे। अनेक इन्डस्ट्रीयों में से मैंने फ़ारमेसी को (पश्चिमी तरीके पर औषधियां बनाना) चुना यह इन्डस्ट्री केवल अमरीका में ही अच्छी तरह सिखाई जाती थी, इस कारण अमरीका जाने का विचार किया।

बम्बई से फ्रेञ्च कंपनी के जहाज़ के तीसरे दरजे में तैयार हो कर मार्सेल्ज़ और वहां से पैरिस पहुंचा। फ्रान्स से अमरीका जाने का विचार था, वहां पर मुझे मालूम हुआ कि लाला हरदयाल पेरिस में रहकर पोलिटिकल काम से निराश हो गए थे कुछ काल अलजीरिया (अफ्रीका) में जाकर रहे, ताकि ग़रीबों का सा जीवन व्यतीत करें और अपना जीवन तप में गुज़ारें। वहां उनको मुसलमानी सोसायटी बहुत भयानक प्रतीत हुई। वापस पेरिस आए और फिर उसी लक्ष्य को सम्मुख रख कर पश्चिमी घाट के फ्रेञ्च टापू मार्टीनीक में जाकर रहे।

मैं अपने विचार के अनुसार एक डच जहाज़ "ऐमस्टर्डेम" दूसरे दरजे में न्यूयार्क को रवाना हुआ। अमरीका और यूरुप के मध्य में चलने वाले जहाज़ों में चहल पहल होती है, और उनमें सब प्रकार की सुख सामग्री हुआ करती थी। दूसरे दर्जे में कई सौ यात्री थे। खाने के कमरे में दो तीन सौ कुर्सी और मेज़ लगे थे। खाने से पहिले हाल में नियम पूर्वक बैंड (बाजा) बजाया जाता था। तरह २ के खेलों के सामान मौजूद थे। एक २ दर्जे में कोई हज़ार २ यात्री दूसरे दिन ही एक दूसरे से परिचित हो गए। और खेलों के लिये तो टूर्नेमैन्ट शुरू कर दिए गए। बहुतेरे स्त्री पुरुष और बालक जर्मन, आस्ट्रियन और डच और फ्रेञ्च थे, जो कि अंग्रेज़ी बोलना नहीं जानते थे, इसलिए

इन सब को अंग्रेज़ी सीखने का चाव था और जहाज़ में ही अंग्रेज़ी शब्द सीखने और बोलने का प्रयत्न करने लगते थे। बहुतेरे धनाढ्य लोग अमरीका और यूरुप के बीच की यात्रा आमोद प्रमोद और स्वास्थ्य के लिये करते थे, यही कारण है कि इसे यथा शक्ति मनोरञ्जक बनाने का यत्न किया जाता है।

न्यूयार्क में

सातवें दिन सायंकाल जहाज़ न्यूयार्क पहुंचा। वहां पर भी बग्गी चलाने वाले बहुत से ढंग होते हैं, जो कि खास होटल वालों से मिले होते हैं। मैं निकट ही किसी होटल में रात काटना चाहता था। वह मुझे कई मील दूर एक होटल में लेगया, इस कारण किराये आदिक खर्च बहुत देना पड़ा। एक नया यात्री झगड़े फ़साद से घबराता है और वे दुष्ट नये आदमी को पहचान लेते हैं। मैं अक्टूबर में देर करके पहुंचा था। मैं सीधा फ़िलाडैल्फ़िया गया। वहां की पढ़ाई दो महीने हुए आरम्भ हो चुकी थी। मैं वापस न्यूयार्क आया। वहां के फार्मेसी कालिज में दाख़ल होने का यत्न किया। वहां भी देरी हो चुकी थी। कोलंबा यूनिवर्सिटी के चर्च का पादरी मुझे मिला। उसने मुझे खाने पर बुलाया। उसकी स्त्री ने भी डिग्री प्राप्त की हुई थी। उन्हों ने फार्मेसी के दुकानदारों को लिखकर मुझे साल भर काम दिलाने का यत्न किया। उनकी सहायता का प्रयोजन मज़हबी मालूम

होता था, मेरे हृदय ने यह स्वीकार न किया कि इस सहायता के बदले में उनका ऋणी रहूं ।

अमरीका वालों का शील ।

न्यूयार्क में कुछ दिन ठहरने से मेरा अनुभव हुआ कि, सामाजिक बर्ताव को देखा जाय तो "रंग वाले" लोगों के लिये अमरीका कोई मनोहर स्थान नहीं है । मकान ढूंढने में अतिकष्ट हुआ । यद्यपि मेरा रंग काला न था, पर फिर भी शक्ल देखते ही गृह स्वामिनी घबरा जाती थी, और बाहर फट्टा लगा रहने पर भी कि रहने के लिये कमरा खाली, कमरा न देने के लिये बहाना ढूंढती प्रतीत होती थी । जो कमरा इंगलैण्ड के किसी गांव व कस्बे में कुछ मिन्ट की तलाश पर मिल सकता था, अमरीका में उसके पाने के लिये दिन भर भी ढूंढना काफ़ी नहीं है । होटलों में खाने के "रैस्टोरैन्ट" में भी रंग के विरुद्ध घृणा साफ़ झलकती है । इंगलैण्ड की सोसायटी हृदय में दो भाव रखती हो, ऐसा हो सकता है, परन्तु इंगलैण्ड की सुशीलता उन्हें उसको प्रगट नहीं करने देती ।

अमरीका में एक और दल ।

इसके मुकाबले पर अमरीका के नर नारियों के अन्दर एक ऐसा दल मिलता है, जो कि थियासोफ़ी की अथवा स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा के कारण बहुत ही उदार है,

और हिन्दु धर्म्म तथा फ़िलासफ़ी के प्रेमी होने के कारण न केवल हमारे विरुद्ध घृणा नहीं रखते, वरन् हार्दिक प्रेम और आदर प्रगट करते हैं। यह दल अमरीका में बहुत बल पकड़ जाता और बढ़ जाता, यदि स्वामी विवेकानन्द के पश्चात् उसके काम को जारी रखने वाले अपने अंदर करैक्टर और त्याग का भाव रखते। परन्तु अब उसके विपरीत यह दशा है कि मैं वेदान्त सोसायटी के मकान पर गया, वहां मुझे पता लगा, कि स्वामी लोग भारतीयों से मिलना पसंद नहीं करते।

बृटिश गायना की सैर।

मेरा विचार हुआ कि मैं इस खोए हुए साल को बृटिश गायना आदि प्रान्तों में जाकर खर्च करूं। अफ्रीका में मुझे मालूम हुआ था कि भारतीय कुलियों की एक भारी संख्या दक्षिण अमरीका की ओर भी लेजाई जाती थी। न्यूयार्क से मैंने बृटिश गायना का टिकट लिया। और जहाज़ पर उस ओर रवाना हुआ। यह जहाज़ जज़ायर गरबुल हिंद के साथ ठहरता हुआ नीचे जाता था। यह द्वीप मैं रास्ते में देखता गया। इन में प्रायः उन हबशी गुलामों की सन्तान बस्ती थी, जो कि अफरीका से पशुओं के समान भर कर वहां व्यापार के लिये लाये गये थे। इन द्वीपों की वास्तविक जाति जिन्हें "रैड इन्डियन" कहा जाता है, प्रायः नष्ट हो चुकी है। अथवा जहां पर पुर्तगालियों और

स्पेन वालों का अधिकार था, गोरे और काले आबादी के मेल से दोगली जाति उत्पन्न होगई थी। जिनको "क्रीरोल" अथवा "मलारु" कहा जाता है।

लाला हरदयाल से भेंट।

छठे दिन जहाज़ मार्टीनीक द्वीप के नगर "पोर्ट दी फ्रांस" पर जा लगा। वहां पर जहाज़ एक दिन ठहरा। लाला हर दयाल वहां हैं, यह मैं जानता था। मेरी इच्छा उनका मिलने की थी। मैं नगर में गया, और उनका पता लगाना आरम्भ किया। कई घन्टे सारे नगर में घूम फिर कर एक हबशी कुली लड़का जो कि टूटी फूटी अंग्रेज़ी बोल सकता था, मुझे एक हबशी स्त्री के पास लेगया, जो कि अकेली रहती थी, और अपने ऊपर का छोटा सा कमरा लाला हरदयाल को रहने के लिये दिया था।

लाला हरदयाल वहां पर उस समय न थे। साथ वाली पहाड़ी में तप करने गये थे। वह लड़का जानता था कि वे कहां जाते हैं। वह उनको बुलाने चला गया। लाला हरदयाल बड़े घबराए हुए कमरे के अन्दर आए कि मुझे कोई ढूंढने आया है। मुझे देखते ही उनका रंग बदल गया। एक इतने दूर दराज मुकाम में जहां पर किसी भारत वासी का आना असम्भव था, अपने एक मित्र को देखकर उनके हृदय पर एक विशेष अवस्था छागई।

जहाज ने चला जाना था। पहला काम तो उन्हों ने यह किया कि जहाज़ पर जाकर मेरा सब सामान ले आए, और मुझे वहां दूसरे जहाज़ के आने तक कोई एक महीना और ठहरना पड़ा।

लाला हरदयाल एक नवीन धर्म स्थापन करना चाहते थे, इस ओर के सारे द्वीपों का जल वायु गर्म है। यहां कपड़े की अधिक आवश्यकता नहीं, अधिक खाने की आवश्यकता नहीं। मकान का किराया बहुत ही सस्ता था। फल नारियल आदिक बहुत सस्ते थे। फल खाकर भी मनुष्य निर्वाह कर सकता था। ऐसी जगह थीं जहां पर मनुष्य पांच दस रुपये के अन्दर निर्वाह चला सकता था। लाला हरदयाल इस से बहुत कम खर्च करते थे। सचमुच उनका जीवन इस समय तप का जीवन था। नंगी भूमि पर सोना, कोई अनाज अथवा आलु उबाल कर खाना और दिन भर थोड़ा समय पढ़ने के अतिरिक्त ध्यान में व्यतीत करना। मैंने जब पूछा तो उन्होंने बताया कि मैं संसार में "बुद्ध" के समान एक नया धर्म संस्थापन करना चाहता हूं। उसके लिये इस प्रकार का जीवन व्यतीत करके अपने आप को तैयार कर रहा हूं। मैं भी उसी प्रकार रहने लगा। हम यूं ही नीचे सो जाते थे और उसी प्रकार का खाना खा लेते थे। मैंने केवल इतना और किया कि उस में लोन मिर्च डालना आरम्भ किया, जिस पर वे कहने लगे कि आप मुझ से अच्छा खाना बनाना जानते हैं।

मैं सम्पूर्ण मत मतान्तरों को मनुष्यों के लिए एक प्रकार की ठगी समझता हूं। जर्मनी बादशाह फ्रेड्रिक तीन बड़े पैग़म्बरों का नाम लेकर कहा करता था कि संसार को उन्होंने धोखे में डाल दिया है। मैंने इस बात पर ज़ोर लगाया कि एक और ठगी संसार में नई चलाने से आगे के असंख्य मतों में एक की अधिकता हो जायगी। इस से तो यह कहीं अच्छा था कि वे अमरीका में जाकर पुरानी आर्य्य सभ्यता को फैलावें। स्वामी विवेकानन्द के कार्य्य का अत्युत्तम प्रभाव हुआ था, जो कि दिन पर दिन क्षीण हो रहा था। बहुत दिनों के बाद विवाद के पश्चात् वे सहमत हो गए कि हार्वर्ड-यूनिवर्सिटी में जाकर एक दो वर्ष रहकर उसे नये काम का केन्द्र बनाएंगे। वे वेदान्त आदिक सिद्धान्तों को मानने पर तैयार न थे। मैंने कहा, वेदान्त नहीं तो सांख्य सही, किसी प्रकार आर्य्य फ़िलासफ़ी का गौरव तो लोगों के हृदय में बैठाइये और प्राचीन आर्य्य ब्राह्मण व सन्यासी के त्याग और बलिदान का उदारण तो दिखाना उपयोगी होगा।

मैं तो अगले जहाज़ में बृटिश गायना रवाना हुआ। और वे कुछ समय पश्चात् हार्वड जा पहुंचे। हार्वड में कुछ समय ठहरे। वहां शीत अधिक था। और उनकी प्रकृति गर्म जल वायु में रहने की बन गई थी। सर्दार तेजासिंह ने जो कि पहले कैलिफ़ोर्निया में रह आए थे और वहां डिग्री प्राप्त करने के लिये ठहरे थे, उनको बताया कि कैलिफ़ोर्निया उनकी प्रकृति

के अनुकूल होगा। वहां कुछ महीने ठहर कर फिर पुराना विचार उनके हृदय में जागृत हो उठा, और वे उसी उद्देश्य को सामने रखकर "होनो टोलो" द्वीप में चले गए और तप करना आरम्भ किया। और मुझे पत्र में अपने परिवर्तन की सूचना बृटिश गायना में दी। एक दिन छोड़कर दूसरे दिन मेरा जहाज़ "जार्ज टाऊन" में जा लगा। यह नगर बृटिश गायना की राजधानी था।

बृटिश गायना की भूमि पर।

असबाब जहाज़ से बाहर निकाला। अमरीका के समान यहां भी महसूल के लिए असबाब की तलाशी बड़ी कठोरता से होती थी। तलाशी हुई। यहां पर मेरा कोई परिचित पुरुष न था। मुझे मालूम न था कि कहां जाऊं। सड़क थी, उस पर ट्रामवेकार जाती थी, परन्तु जाने के लिये कोई मुकाम न था, तो ट्रैमका क्या लाभ। एक हबशी पादरी से मैंने पूछा, यहां भारतीय लोग किधर रहते हैं? उसने कहा, मैं उसी तर्फ जाऊंगा, चलो ट्राम पर बैठ जाएं, मैं तुमको वहां पहुंचा दूंगा। बिस्तरा उठा कर हम ट्राम पर बैठ गए। उसका अभिप्राय मुझे केवल इतना मालूम हुआ कि उसका किराया भी मैं देदूं। मैंने किराया दे दिया। नगर में से होकर एक दो मील बाहर जाकर हम ट्रैम से उतर गए। कुछ दूर पैदल जा कर एक लाइन में गए, जो कि कच्चे मकानों की बनी हुई थी,

बीच में नहर थी। नहर के दोनों ओर मकान और झोंपड़ियां थीं। उसने बताया कि इस कार्टर में हिन्दु रहते हैं। उनका एक छोटासा मन्दिर है। वह मुझे उस मन्दिर में ले गया। एक अहाते में एक बड़ा कमरासा था। आधे भाग में मूर्ति सी पड़ी थी और बाकी में दो तीन चटाइयां बिछीं थीं। रात हो गई थी। मैंने वहां पहुंच कर अपना बैग रख दिया। एक लम्बे बाल रखे हुए भारतीय पुजारी आया, और मुझ से पूछा, कि कहां से आप हो? कौन हो?

मैंने बताया, ब्राह्मण हूं, देश से आया हूं। उस ने कहा क्या कुलियों में भर्ती होकर आये हो? क्या नया जहाज़ आ गया है?

मैंने बताया, नहीं, मैं ऐसे ही आया हूं।

उसने कहा, ऐसे तो आज तक देस से कोई आदमी इधर नहीं आया। उसकी इच्छा नहीं थी कि मैं वहां रहूं। मैं जाता तो कहां जाता, मैं रातको भूखा ही सो रहा। सवेरे अंगरेज़ी टोपी और पतलून उतार कर धोती और पगड़ी पहन ली। एक दो ग़रीब से आदमी आए और मेरे साथ बातें करने लगे। उनमें से एक कुछ समझदार था, बम्बई का वेंकटेश्वर समाचार पढ़ा करता था। उस ने भोजन के समय मुझे कुछ चावल ला दिये, जो कि मैंने प्रसन्न होकर खाए। चार पांच दिन तक मैं उसी स्थान में चटाई पर सो जाता था और दाल भात खा लेता था। वे लोग दिन भर मज़दूरी कर

के सांझ को वापस आते थे। और मेरे साथ बात चीत करते थे। वह स्वतन्त्र कुलियोंके क्वार्टर थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या कोई पढ़ा लिखा व प्रतिष्ठित भारतवासी भी यहां हैं? उन्हों ने कहा—"हां हैं, डाक्टर हैं, बड़े पादरी बने हैं, सौदागर भी हैं, परन्तु बहुत करके ईसाई हैं" मैंने कहा— कोई हिन्दु भी है? उत्तर मिला हां, एक हिन्दु की अच्छी दुकान थी। मैं उसे मिलने गया और उसे कहा कि मैं यहां लैक्चर देना चाहता हूं, तुम कुछ प्रबन्ध करो। उसने कहा, मैं कैसे विश्वास करूं कि तुम लैक्चर दे सकते हो। अंगरेज़ी में बातचीत तो वह भी कर सकता था, पर किसी भारतीय को लैक्चर देते उसने कभी न देखा था। उसका जन्म वहीं हुआ था, और मेरे काले पानी के समय में वह भारत में आया और मेरे घर वालों को मिल गया। वह मुझे साथ लेकर ईसाइयों के पास गया, और उनसे मेरा उद्देश्य कहा। उनमें एक डाक्टर भी था, जो कि लगडन में रह आया था, वह बड़ा प्रसन्न हुआ और लैक्चर दिलाने पर तैय्यार हो गया।

बृटिश गायना में मेरे लैक्चर।

उन्हों ने कोई बीस डालर खर्च करके एक रात के लिए "टौनहाल" किराये पर लिया और समाचार पत्रों में नोटिस दिया कि देश से एक पण्डित आया है, उसका लैक्चर होगा दूर २ के गांवों से भारतीय लोग सहस्रों की संख्या में इकट्ठे

हो गए। गोरे भी बहुत थे। लैक्चर के पश्चात् यह हुआ कि वह आदमी मुझे अपने मकान पर लेगया। और सारे इलाके में जाकर मैंने लैक्चर दिए। ईसाइयों के अन्दर बड़ी खलबली पड़ गई। मैंने खास बात नोट यह की, कि अफ्रीका में चाहे पोलिटिकल शिकायतें थीं, परन्तु क्योंकि स्वतन्त्र व्यापारी हिन्दु मुसलमान वहां पहुंचते रहे, लोग प्रायः अपने धर्म पर खड़े थे। बृटिश गायनां में पोलिटिकल शिकायतें थोड़ी थीं, परन्तु पढ़े लिखे लोग सबके सब ईसाई हो गए थे, प्रारम्भिक शिक्षा लड़कों और लड़कियों के लिए आवश्यकथी और शिक्षा का चार्ज पादरियों के हाथ में था और सारे स्कूल गिर्जों के अन्दर लगते थे। मैंने इसे रोकने के लिये एक हिन्दु स्कूल खोला। इधर उधर फिर कर हज़ार डालर के लगभग उसके लिए चन्दा किया। एक ब्राह्मण ने अपना मकान मुफत दियां, यह आदमी कुली भर्ती होकर गया और बड़ा धनवान् हो गया था।

लोग कहते थे कि मैं वहां ही रहूं। दूसरा वर्ष आरम्भ होने वाला था। लाला हरदयालु ने मुझे लिखा था कि कैलिफोर्नियां यूनिवर्सिटी में फीस नहीं है, तथा भारतीय लोग भी इधर बहुत हैं। मैं वहां से ट्रैमंडाड गया। कुछ काल वहां लैक्चर दिये। इन दोनों टापुओं में भारतीय बस्ती असली मालिक है। उनकी संख्या कोई लाख डेढ़ लाख तक जा पहुंची है। और गोरे और हबशी उनसे आधे होंगे। जमैका और डच गायना में भी बीस २ हज़ार के लगभग भारतवासी पाए

जाते हैं, यदि वे हमारे धर्म में रहें तो हमारे अन्यथा हम से कोसों दूर।

८–सानफ्रांसिस्कों से लाहौर तक।

सानफ्रांसिस्कों को।

जिस प्रदेश का मैं ऊपर वर्णन कर आया हूं, वहां के लोग मुझे सदा के लिए वहीं रहने के लिये कहते थे। परन्तु मैं कैसे रह सकता था। इसलिये मैंने उनसे कहा कि मैंने आप लोगों को रास्ता बतला दिया है, अब आप स्वयं चलाएं, दूसरे साथ ही मैंने लण्डन पत्र लिखा था। वहां से एक हिन्दु डाक्टर पहुंच गए थे। मेरे वहां रहते हुए उनकी प्रैक्टिस बहुत अच्छा चल पड़ी, और उनका आचरण भी बहुत अच्छा रहा। वहां का सब काम उनके हाथ सौंपकर मैं अमरीका वापस आया, और न्यूयार्क से सीधा फ्रांसिस्कों पहुंचा चार दिन रात का रेल का सफर है। फार्मेसी कालिज का पता मैं जानता था। मैं ट्रैमकार पर चढ़कर उस ओर जा रहा था, ट्रैमकार में स्थान न था, मैं खड़ा था। मुझे देखकर एक साहब अपने स्थान से उठकर खड़े हुए, और मुझे बैठ जानेके के लिए कहा। पहिले तो मैंने ना करदी, परन्तु उनके आग्रह पर मैं बैठ गया। वे मुझ से पूछने लगे, क्या मैं स्वामी हूं? मैंने

कहा, हूं तो मैं धर्मोपदेशक, परन्तु मैं स्वामी नहीं हूं। उन्होंने मुझे अपना कार्ड और पता दिया, और कहा कि मैं उनसे अवश्य मिलूं। सानफ्रांसिस्कों में इस प्रकार एक डाक्टर के साथ मेरा परिचय हुआ, जो कि हिन्दु फिलास्फी के बड़े प्रेमी थे।

मैं कालिज में दाखल होगया। उन्हों ने एक मकान का पता दिया, जहां कि सुख पूर्वक रहने का स्थान मिल गया। यूनाइटिड स्टेटस में कैलिफ़ोर्निया बहुत ही सुन्दर रियासत है। वहां का जल वायु न ठंडा है न गर्म। सानफ्रांसिस्कों में थर्मामिटर ७० और ७२ के मध्य में साल भर रहता है। सब प्रकार के अनाज और फल वहां उपजते हैं। भूमि बड़ी ही श्यामला है। इस जल वायु में बच्चों का पालन पोषण बहुत जल्दी होता है। एक वर्ष की आयु में बच्चा चलने फिरने लगता है और कई तो बातें भी करने लगते हैं। दूसरे देशों की अपेक्षा यहां पर शारीरिक उन्नति अधिक और शीघ्र होती है।

सानफ्रांसिस्को में शिक्षा के प्रेम।

लड़के लड़कियां शुरू में बड़े बुद्धिमान् और प्रतिभाशाली होते हैं। परन्तु कुछ समय पश्चात् डालर कमाने का ख्याल उनकी प्रतिभा को नष्ट कर देता है। स्कूलों का शौक अमरीका में बहुत है। जो कस्बे अभी आबाद नहीं हुए, वहां के नकशों के अन्दर स्कूलों के लिए स्थान पहले ही से

नियत कर दिया गया है। यूरुप में जो दर्जा गिर्जों का है, अमरीका में वह स्कूलों का है। न केवल स्कूलों की पढ़ाई मुफ़्त होती है, वरन् पुस्तकादि सामग्री भी बालक और बालिकाओं को सरकारी मिलती है। कैलीफोर्नियां में बालक और बालिकाएं स्कूलों में इकट्ठे पढ़ते हैं। पश्चिमी अमरीका की यूनिवर्सिटियों में "आर्ट" के विषय के पढ़ने में फ़ीस नहीं ली जाती। कन्याओं की संख्या यूनिवर्सिटियों में बालकों से अधिक नहीं तो उनके लगभग अवश्य होती है। स्कूलों और यूनिवर्सिटियों में विद्यार्थी के अन्दर एक आश्चर्य जनक शौक यह पाया जाता है कि पढ़ाई के समय में ही वे अपना खर्च आप चलाना चाहते हैं, और अपने माता पिता पर बोझ डालना नहीं चाहते। अभी अबादी अधिक नहीं बढ़ी, इस लिये लड़कों और लड़कियों को दुकानों में घरों में, कारखानों में, दो २ तीन २ घन्टे के लिये काम करने पर बहुतेरी मज़दूरी मिल जाती है, जिस से वह अपना निर्वाह कर लेते हैं। भारतीय अथवा दूसरे किसी अन्य देशीय विद्यार्थी को काम मिलने में इतनी सुगमता नहीं होती। कैलिफोर्निया की सरकारी यूनिवर्सिटी बर्कले के अन्दर है। सानफ्रांसिस्को और बर्कले के मध्य में एक खाड़ी है, जिस पर दो २ मिन्ट के पश्चात् जहाज़ आते जाते रहते हैं।

समता की लहर।

यूं तो सब जगह अमरीका में मानवी समता का भाव ज़ोरों पर पाया जाता है। अमरीका की रेलों में एक ही दर्जा है, और प्रत्येक गाड़ी में मखमल के तकियों वाली कुर्सियां लगी हैं। एक कुर्सी एक मनुष्य के लिये है। स्थान पाने के लिये तू २ मैं २ नहीं होती, परन्तु पश्चिमी रियासतों में तो यह समता अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गई है। कालिजों के चपड़ासियों का वेतन प्रायः उतना ही होता है, जिस से कि प्रोफेसर शुरू करते हैं। अन्तर यह है कि प्रोफैसरों को शिक्षा के बदले में प्रतिष्ठा मिल जाती है। यूं देखें तो लड़के अध्यापकों को कोई विशेष आदर नहीं करते। हाज़री बोलते समय "सर" कहने की चाल नहीं है। केवल "Yes" काफी समझा जाता है। चिट्ठी पत्री पर पता लिखते हुए मिस्टर व स्क्वायर डालना समय और स्याही गवाना समझा जाता है। नाम भी प्रायः आधा लिखा जाता है। चाहे रंगके विरुद्ध घृणा का भाव विद्यमान है, परन्तु पूर्वी अमरीका से थोड़ा है। मुझे कुछ दिन के लिये एक "हाई कोर्ट" में अनुवादक के रूप में जाना पड़ा। एक भारतीय मज़दूर रेलवे लाइन पर काम करते हुए ट्रेन के नीचे आकर मर गया। उसके भाईयों ने उसकी स्त्री की क्षति-पूर्ति के लिये कई हज़ार डालर का दावा कंपनी पर किया था। उनके बयानात

का अनुवाद करने के लिये मैं जाया करता था। बहुत समय बीत गया। एक दिन मैं सड़क पर जा रहा था। मैं हैरान इधर उधर देख रहा था कि एक मकान के ऊपर से वह जज साहिब उतरे और मुझे अपने मकान पर ले गये ~~और मुझे अपने मकान पर ले गये~~ और बहुत देर तक बातें करते रहे।

सानफ्रांसिस्को में भारतवासियों की संख्या।

यह इस प्रकार का देश था, जहां कोई आठ दस हज़ार पंजाबी सिख, हिन्दु और मुसलमान मज़दूर काम के लिये चले गये। यह लोग पहिले पलटन व पोलीस में भर्ती होकर चीन में गये। वहां से कोई संयोग वश अमरीका जा पहुंचा, उसने चिट्ठियां लिखी; और कई वर्षों से उनकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। प्रायः उन लोगों को गांव के अन्दर खेतों में काम मिलता था, परन्तु दिन रात इनका व्यवहार गोरों से रहता था, जिनको वे अपने बराबर समझा करते थे। अमरीका में कुछ काल रहने से इन मज़दूरों के मन से भारतवर्ष की ना बराबरी का विचार उड़ जाता था। और वे भी दूसरे मनुष्यों की तरह अपने आपको सम्मान की दृष्टि से देखने लगे जाते थे। यह लोग शहरों में बहुत कम रहते थे। भारतीय विद्यार्थियों को जब कभी अवसर मिलता था, इन्हीं लोगों के पास काम करने के लिये चले जाते थे और कुछ रुपया बचा लाते थे। मैं भी छुट्टियों के दिनों में

एक पार्टी के साथ फूल तोड़ने के काम पर गया। हमें अढ़ाई डालर ७½) दैनिक मिला करते थे। वह काम केवल एक मास तक रहा, दूसरा काम अधिक कठिन था, मैं वापस चला आया।

ड्रगस्टोर की कोठी।

कुछ काल पश्चात् मैं उस डाक्टर से जाकर मिला। उन्हों ने अपने मित्र स्त्री पुरुषों के साथ दिन निर्धारितकिया फिर मुझे बुलाया और धार्मिक बात चीत करते रहे। फार्मेसी कालिज में प्रायः सबके सब विद्यार्थी १२ बजे तक कालिज में रहने के पश्चात् दिन और रात "ड्रगस्टोर" मैडिकल दुकानों में काम करते थे। मेरे परिचित डाक्टर केवल प्रैक्टिस करते थे। उनके एक मित्र डाक्टर थे, जिनकी दो दुकानें थीं। उन्हों ने उनको कहकर मुझे उनकी दुकान में काम ले दिया। मुझे काम करने का पहले अभ्यास न था। मैं दुकान के अंदर एक कोठड़ी में रहता था। खाने के अतिरिक्त दस डालर पाकट खर्च के तौर पर मिलते थे।

लाला हरदयाल हिन्दु ऋषि के रूप में।

मेरे सानफ्रांसिस्को जाने के कुछ महीने बाद लाला हरदयालु "हानोलोनो" से वापस आए। फिर मैंने प्रयत्न किया कि उनको वहमों से हटाकर किसी अमली काम की तर्फ लगाया जावे। उन्हीं डाक्टर के द्वारा एक हाल किराए

पर लेकर हिन्दु फिलासफी पर उनके लेक्चर कराए। जिस के पश्चात् बर्कले यूनिवर्सिटी के भारतीय विद्यार्थियों ने यूनिवर्सिटी में इन विषयों पर उनके लेक्चर कराए। और उनकी भाषा, वक्तृत्व शक्ति और योग्यता आश्चर्य्य जनक थी, उनकी कीर्ति यहां तक फैलने लगी कि बर्कले यूनिवर्सिटी का संस्कृत प्रोफैसर उनका भक्त बन गया, और उसने पास की एक यूनिवर्सिटी (स्टैन्फोर्ड) में लाला हरदयालु की सिफारिश की, कि उनको वहां संस्कृत और हिन्दु फिलासफी का प्रोफ़ैसर नियत किया जाय। लाला हरदयालु प्रेसिडेन्ट यूनिवर्सिटी से मिले। क्योंकि उन्हों ने कहा कि बिना किसी वेतन के काम करेंगे, उसने तुरन्त ही एक प्रोफैसरशिप स्वीकार कर ली। और वे स्टैमफोर्ड में रहकर काम करने लग गए।

लाला हरदयालु के विचारों से मेरा मत भेद।

स्टैम्फोर्ड सानफ्रांसिस्को से पचास मील दूर है। इस लिये उनके साथ मुलाकात कम होती थी। परन्तु इतना मुझे मालूम होगया कि थोड़े ही समय के अन्दर अपनी योग्यता सादगी, और त्याग की शक्ति से लाला हरदयालु ने यूनिवर्सिटी में और कैलिफोर्निया के समाचार पत्रों की दृष्टि में एक विशेष सम्मान प्राप्त कर लिया। समाचार पत्र उनको हिन्दु ऋषि (Saint) के नाम से लिखते थे। यहां रहते हुए उनके विचारों में फिर परिवर्तन होने लगा। अब यह

परिवर्तन सोशियलिजम और कम्यूनिज़म की ओर थी। लाला हरदयालु कभी मध्यम अवस्था में न रहते थे। वे सदैव एक किनारे से दूसरे किनारे पर चले जाते थे। तुरन्त ही कम्यूनिज़म से अनार्किज़म पर जा पहुंचे। यूनिवर्सिटी में और उस से बाहर शादी जायदाद, गवर्नमिन्ट के विरुद्ध खुला प्रचार आरम्भ कर दिया। उनकी क्लास में कन्याओं की संख्या अधिक थी। प्रेज़िडैन्ट के पास इस मामले की शिकायत हुई। लाला हरदयालु मुझ से मिले। मेरी सम्मति थी, कि वे अनार्किज़म के विचारों का केवल अपने हृदय में ही रखें, और यदि आवश्यक समझें, जो कुछ वर्ष विचार करके इस विषय पर एक पुस्तक लिखें। परन्तु उन्हों ने कहा कि वे तो अपने विचारों को कभी दबा कर न रखेंगे। और यूनिवर्सिटी छोड़ देंगे।

उन्हों ने खुलम खुला अनार्किज़म का प्रचार आरम्भ किया। यूनिवर्सिटी को छोड़ कर सानफ्रांसिस्को चले आए। मेरे और उनके विचार नहीं मिलते थे। इसलिये मैंने उसके पश्चात् उनके काम में कोई दिल चस्पी न ली। अपना काम भारतीय विद्यार्थियों को उन्हों ने अपने साथ कर लिया। और फिर सिख लोगों के साथ भी मेल जोल आरम्भ किया।

मेरी वापसी।

मई १९१३ में मुझे यूनिवर्सिटी की डिग्री मिल गई। मैंने वापस आने का विचार किया। लाला हरदयाल मुझे

मिले, और कहा कि, कुछ हिन्दुस्तानी पोर्ट लैंड (स्टेट जान) में एक कमेटी करके यह निश्चय करना चाहते हैं कि वह किस तरह देश के काम में सहायता कर सकते हैं, मैं उधर से होता हुआ वापस चला जा सकता हूं। मैं उनके साथ वहां गया। दो दिन और एक रात वहां ठहरा। मेरी सम्मति थी कि रुपया एकत्र करके दो तीन यूनिवर्सिटियों के साथ मकान लेकर भारतीय विद्यार्थियों के लिये फ्री बोर्डिङ्ग का प्रबन्ध करना चाहिये, और हर साल एक विशेष संख्या विद्यार्थियों की शिक्षा के लिये अमरीका में मंगवानी चाहिये। लाला हरदयालु का विचार था कि एक छापा खाना और समाचार पत्र जारी करके पोलिटिकल प्रचार का काम आवश्यक है। मेरा मत भेद था, परंतु इसकी कोई बात न थी, क्योंकि मैंने वहां ठहरना ही न था। मैं न्यूयार्क को चला आया और वहां से इंगलैण्ड आ पहुंचा।

इंगलैण्ड में मेरी निगरानी।

इस के पश्चात् मुझे अदालत में जाने से पहिले कुछ ज्ञान न हुआ कि वे वहां पर क्या काम करते हैं। यद्यपि मुझे ज्ञान न था, परन्तु वहां बृटिश गवर्नमिन्ट की कौंसिल को सब समाचार मिलते थे। सुतराम् उनको यह भी पता था कि मैं वहां से होकर आगे गया हूं। मेरे विरुद्ध संदेह पहिले ही था। मैं लण्डन में ही था कि सानफ्रांसिस्को में ग़दर

नामक समाचार पत्र निकलना आरंभ होगया। मेरा विचार था कि लाहौर पहुंचकर पश्चिमी विधि से औषधियां बनाने का एक कारखाना खोला जावे। उसकी प्रारम्भिक आवश्यकताओं के लिये कुछ सामग्री और मशीनें आदिक लेने की आवश्यकता थी, जो कि मैंने लंडन में खरीद करली थी। मुझे कुछ महीने लंडन ठहरना पड़ा, और खुफ़िया पोलिस से थोड़ा बहुत कष्ट भी हुआ।

जिनोवा में सर्दार अजीत सिंह के दर्शन।

पहली बार मैं इटली के जहाज़ पर आया था। इसलिये इटली के प्रसिद्ध बंदरगाह जिनोवा और नेपलस देखने का संयोग हुआ था। इस बार मैंने स्विटज़रलैण्ड का प्रसिद्ध और यूरुप का अत्यन्त सुन्दर नगर जिनोवा देखा। वहां सर्दार अजीत सिंह के दर्शन हुए। उन्हों ने फ्रांसीसी भाषा का पूरा २ अभ्यास कर लिया था। अंगरेज़ी वे जानते थे, इसलिये ट्यूटर का काम करके अपना निर्वाह करते थे। पेरिस से होता हुआ फ्रेञ्च जहाज़ में दिसम्बर १६१२ के अंत में बम्बई वापस पहुंचा। हमारा जहाज़ बंदर से कई मील की दूरी पर रहा। एक छोटा जहाज़ हमको उतार कर ले जाने के लिये आया। अपने जहाज़ पर ही एक बड़ा पोलीस अफ़सर और कुछ खुफिया सिपाही मैंने देखे। अफ़सर ने मेरे साथ इधर उधर की बात करनी शुरू की। हम छोटे जहाज़ से किनारे पर पहुंचे।

बम्बई की बंदरगाह पर।

बम्बई की बंदरगाह पर कुछ पंजाबी सिपाही फूलों के हार लेकर मुझे लेने आए थे। उन्हों ने बता दिया कि यह पोलीस के अफसर हैं। कस्टम हौस में सामान की पड़ताल होनी थी। कस्टम अफसर ने मेरा सामान देखकर पास कर दिया। उसके पास और मुसाफिर खड़ा था। जो असबाब मेरे निकट पड़ा था, उसे बड़ी सावधानी से खोलकर देखना आरम्भ किया। उसका मालिक आगया तो कस्टम इन्स्पैक्टर घबरा कर बोला, क्या यह तुम्हारा असबाब है, उसने कहा हां, तब तो उसके तोते उड़ गये, और मेरी ओर मुंह करके पूछा, आपका असबाब कहां है? मैंने बताया, वह पास हो गया है। वह और घबराया, और आतुर सा होकर कहने लगा, मुझ पर बड़ी सख्ती होगी, मुझ से गलती हो गई है, आपका असबाब खास तौर पर देखना था। मैंने कहा, रंज मत करो, तुम बाहर आकर उसे फिर अच्छी तरह देख लो। दो घन्टे तक वह बैग और टरंक देखता रहा। पोलीस अफसरों को तसल्ली की रिपोर्ट पहुंच गई।

पोलीस की हेरा फेरी।

जब मैं और मेरे मित्र गाड़ी लेकर रवाना हुए, पीछे ही पोलीस गाड़ी में बैठकर चलदी। मैंने कहा इनको निकल जाने दो। हमारी गाड़ी तनिक धीमी हो गई, उनकी आगे

चली गई । मैंने उस गाड़ी को छोड़ दिया । एक और गाड़ी लेकर मकान पर न जाकर एक होटल में चला गया । यह रात्रि का समय था । दूसरे दिन सवेरे पोलीस के अफसर पूछ ताछ के लिये आ मौजूद हुए । मुझे मिलने पर उन्होंने साफ़ बता दिया कि आपने सारी रात हमको हैरान कर दिया है । इस समय से बकायदा पोलीस का पहरा लग गया । दो दिन ठहर कर मैं पंजाब को रवाना हुआ । रास्ते में नियमानुसार पोलीस के सिपाही साथ की गाड़ी में में पहरा देते चले आए, और थोड़े २ फ़ासले पर गार्द बदल जाती थी । बड़े स्टेशनों पर सुपरिन्टैन्डैन्ट पोलीस आप आकर देख जाते थे । एक स्टेशन पर एक मरहट्टा सी० आई० डी० सब इन्सपैक्टर गाड़ी में आ बैठे । मेरे साथ वालों ने उस पर बहुत मखौल और अपमान किया, जिस पर मैंने शोक प्रगट किया ।

लाहौर के स्टेशन पर ।

देहली से खास सब इन्सपैक्टर लाहौर तक आए । लाहौर में स्टेशन पर कुछ मित्र गये हुए थे, उतर कर मैंने उनको कहा, कि ये साहब मेरी अर्दली में हैं । उसने हाथ जोड़ लिये और कहा कि आपके कारण हम दो रात स्टेशन पर जागते रहे । मैं आपको कहता हूं कि आप लाट साहब से मिल लें, तो बेहतर होगा । मैंने उसे केवल इतना उत्तर दिया, मेरा लाट साहब से कोई प्रयोजन नहीं, यदि उन्हें

आवश्यकता होगी तो मुझे याद कर लेंगे, मैं हाज़िर हो जाऊंगा, सम्भव है यह बात रिपोर्ट होगई हो।

९—अमरीकन हिन्दुओं में जोश।

क्या सब हिन्दु मुसल्मान होते हैं।

केवल अमरीका में हिन्दु शब्द का उचित प्रयोग होता है। अमरीकन लोग हिन्दु सिख और मुसलमान में कोई भेद भाव नहीं रखते। वे सब को एक ही नाम "हिन्दु" से बुलाते हैं। यह नाम है जो कि इस देश के रहने वालों को विदेशी जातियों ईरानियों, यूनानियों आदिक ने दिया, और जिसका प्रयोग अमरीका में अब तक पाया जाता है। एक बार मेरे एक अमरीकन मित्र ने कहा क्या सब हिन्दु मुसलमान होते हैं? उसने एक दो मुसलमानों से धर्म के विषय में कुछ पूछा था, जिस पर उन्हों ने उसे अपना मज़हब मुसल्मान बताया। और उसे यह संदेह हुआ कि कदाचित् सब हिन्दु मुसल्मान होते हैं।

कामागाटा मारु की प्रसिद्ध घटना।

अमरीका में काम करने वाले भारतवासियों की नाड़ी को लाला हरदयालु ने ठीक पहचाना। जब उसने छापाखाना

बनाकर "गदर" नामक समाचार पत्र उर्दू और हिन्दी में निकालना आरम्भ किया और उस में मनुष्य की समता और सरकार अङ्गरेज़ी के विरुद्ध लेख लिखने आरम्भ किये, तो उस खुले प्रचार ने लोगों के हृदयों पर गहरा प्रभाव डाला। कई नवयुवक उसके पास काम करने के लिए आगए, लोगों ने सहस्र २ डालर सहायता में भेजने आरम्भ कर दिये। यह आन्दोलन उनके अन्दर हो रहा था जब कि "कामागाटा मारु" जहाज़ की प्रसिद्ध घटना हुई।

कैनाडा की बृटिश कालोनी में कई वर्षों से हिन्दु मज़दूरों के विरुद्ध भाव उत्पन्न हो रहा था, परन्तु क्योंकि एशिया के दूसरे देशों, जापान और चीन के मज़दूरों को वे उन देशों की सरकारों के डर से रोकना न चाहते थे, हिन्दुओं को रोकने का उन्हें कोई उपाय न सूझता था। अंत में उनको एक उपाय सूझा। जो लोग भारत से अमरीका को जाते थे, वह सब हांग कांग में अमरीका का जहाज़ लेते थे। कलकत्ते से सीधा कोई जहाज़ अमरीका न जाता था। कैनाडा वालों ने यह कानून बनाया, कि कैनाडा में उतरने के लिये अपने देश से सीधा एक ही जहाज़ में वहां आना चाहिये। बहुतेरे हिन्दुओं ने कैनाडा जाने का प्रयत्न किया, पर इस नये कानून के अनुसार वहां से वापस कर दिये गये। ऐसे लोगों की भारी संख्या हांग कांग में इकट्ठी होगई, जो कि कैनाडा जाना चाहते थे, परन्तु उन्हें वहां उतरने का

का कोई उपाय न मिला। उनमें से कई अपनी ज़मीन बेचकर इस विचार से बाहर निकले थे। इन सब की कठिनाई दूर करने का उपाय एक सर्दार गुरदित्त सिंह को सूझा। उसने सब लोगों को राज़ी किया और एक जापानी जहाज़ किराये पर लिया। पहले सबको कलकत्ते लाया और फिर वहां से सीधा वैङ्कोवार (कैनाडा) को रवानः हुआ। कैनाडा वाले कई सौ इकट्ठे हिन्दु आते देखकर घबरा गए और जहाज़ को बंदर के पास आने से रोक दिया। वहां पर कई दिन झगड़ा होता रहा। वे लोग कैनाडा में उतरना चाहते थे। कैनाडा वाले उनको उतरने न देते थे। पोलीस उनको रोकने के लिए गई। लोगों ने ऊपर से पत्थर के कोयले मारे, जिसमें उन के कई आदमी घायल हुए। अब उन्हों ने तोप लाकर जहाज़ उड़ा देने की धमकी दी, परन्तु वैङ्कोवार और इर्द गिर्द के रहने वाले भारतीय लोग नगर को लूटने पर तय्यार होगए। कैनाडा में सेना नहीं है, जो कि उन लोगों की रक्षा के लिए आजाती। अंत में तंग आकर जहाज़ वाले लोग वापस जाने पर तय्यार होगए। उनके पास खान पान की सामग्री समाप्त हो चुकी थी। यदि कैनाडा की गवर्नमिन्ट उनको आने जाने का खर्च और सारी क्षति पूर्ति करदे तो वे चले जांयगे। गवर्नमिन्ट राज़ी होगई। जो कुछ उन्हों ने मांगा दे दिया गया। परन्तु उनके साथ एक बृटिश कालोनी ने यह वर्ताव किया,

जिस से उनके दिलों पर ज़ख़म होगए जिन पर अंगूर आना सहज नहीं था। जहाज़ वापस कलकत्ते आया और बजबज के मुकाम पर लंगर डाले गये। यहां पर सब लोग उतरे। पोलीस इस अभिप्राय से वहां गई थी कि उनको कलकत्ते जाने से रोके और ट्रेन में लाकर पंजाब वापस करदें। उनके हृदय में संदेह हुआ, उनके हृदय आगे ही जले हुए थे। उन्हों ने चलने से इन्कार किया, इतने में फौज आगई। और वहां फसाद होगया। जिस में दोनों ओर के आदमी मर गये। और कई घायल हुए। बहुतेरे लोग भाग गए और बंगाल के गांव में दूर २ तक आश्रय ढूंढते फिरे, कई पकड़े गए।

इस घटना का प्रभाव अमरीका के भारतीयों पर।

इस घटना के समाचार ने अमरीका के सिख लोगों पर बिशेष प्रभाव डाला। इसके साथ अमरीकन सरकार ने लाला हरदयालु को गिरिफ्तार करने का यत्न किया। वह वहां से भाग कर यूरुप में चला गया, परन्तु उनके साथी काम करने वालों के तन पर लगी हुई थी, इसलिये अपने काम में उनका जोश और भी बढ़ गया। इतने में यूरुप का महा युद्ध छिड़ गया, यद्यपि हमें यहां मालूम न हुआ था, तथापि अमरीकन पत्रों में निकल गया कि बृटिश गवर्नमिन्ट

भारतीय सेना को रण क्षेत्र में लड़ने के लिये लायगी। "गदर" अखबार ने तुरन्त ही आंदोलन करना आरम्भ कर दिया, "भारत में जाओ, सेनाओं को बाहर जाने से रोको" यह लोग थे जो इस विचार को लेकर जहाज़ों में चढ़कर दलों के दल भारत को रवाना हो पड़े। उनमें बूढ़े थे, जिन्हों ने सहस्रों डालरों का सम्पत्ति इकट्ठी की थी, वह सब दूसरों को सौंप दी। उन में ऐसे "जैक" थे, जिनका काम वहां कमाना और शराब पीना था। उनके पास एक पैसा न था। उन्हों ने अपना भोग विलास छोड़ दिया। और देश भक्ति में जहाज़ पर सवार हो गए। रास्ते में हांग कांग, सिंगापुर, रंगून में, जहां कहीं जहाज़ ठहरता था, वे फ़ौजों में जाते और उनको सरकार के विरुद्ध उकसाते थे। सिंगापुर की एक पल्टन पर बड़ा गहरा असर हुआ। उनका युद्ध में भेजा जाना था, उनके अफसरों ने इन्कार कर दिया, और फ़साद बढ़ कर बलवा बन गया। जिस में सैंकड़ों मनुष्यों का रक्त गिरा, जिनमें गोरे भी थे, अंत में जापानी सिपाहियों की सहायता से बलवा मिटाया गया।

पंजाब गवर्नमिन्ट का अधूरा काम।

मुझे इन सब हालात को दौरान मुकदमे में पढ़कर कई बार उस बच्चे की बात याद आती थी, जिस ने अपनी मां से कहा "मां मारता २ दिल्ली चला जाऊं, और जीत लूं,

जो मेरा हाथ कोई न रोके" सरकार को "ग़दर" अखबार मिलता था। उनको अपने जरियों से संबन्धी सब बातों का पता था। उन बातों की जानकारी के आधार पर सरकार ने यह निश्चय किया कि जो कोई अमरीका से आवे उसे जहाज़ से पकड़ कर नज़रबंद कर लिया जावे। मैं समझता हूं कि केवल यही एक शस्त्र था जो कि पंजाब सरकार इस आन्दोलन को पूर्ण रूप से रोकने के लिये काम में ला सकती थी। ऐसा करने से निस्सन्देह पञ्जाब सर्वथा शान्त पड़ा रहता। न गवर्नमिन्ट को घबराहट होती और न इतने मनुष्यों की हत्या होती। जो कि जो कुछ कर रहे थे केवल अंधे जोश में कर रहे थे।

मुझे यदि हैरानी है तो यही कि वह गवर्नमिंट जो अपने आपको इतना सावधान, समझदार और सतर्क बतलाने में अभिमान करती हो, आरम्भ में इतना सा भी प्रबन्ध न कर सकी। बुद्धिमत्ता का काम था। निस्सन्देह बहुत से आदमी गिरिफ्तार कर लिए, परन्तु कलकत्ते के जहाज़ों में से कई आदमी मामूलीसा बहाना बनाकर निकल आए, और बहुतेरे लङ्का आदि की ओर से बिना रोक टोक के उतर आए। जब वे पञ्जाब में पहुंच गए तो खुले तौर पर पञ्जाब में फिरने लगे। उनको मेरा नाम मालूम था, यह मैं मानता हूं, और उनमें से दो चार ने यह फ़ैसला किया कि वे लाहौर में मुझे अपना निशान बता देंगे, ताकि दूसरे मुझ से मालूम कर सकें। पर

मुझे यह समझ नहीं आ सकती, कि मैं इसे किस तरह रोक सकता था। अथवा जब कोई स्वतन्त्र पुरुष मेरे पास इतनी प्रार्थना करता है, मैं उसे क्यों कर अस्वीकार कर सकता था, ऐसा करने में मुझे कानूनी दृष्टि से अथवा व्यवहारिक दृष्टि से अपना कोई दोष दिखाई नहीं दिया। निस्सन्देह उन्होंने मेरे द्वारा अमरीकन सोने को बदलवाया, मैं इसे एक साधारण सेवा समझता हूं जो कि एक परदेसी के लिए की जा सकती है।

प्रसिद्ध राश बिहारी पंजाब में।

इन में से एक मिस्टर पिङ्गले नामी मरहटा नवयुवक जो कि अमरीका से आये थे, पहले बङ्गाल की गुप्त समितियों के साथ जानकारी रखते थे। वे बनारस में जाकर प्रसिद्ध राश बिहारी बोस को मिले। और उसे पञ्जाब में ले आए। एक वर्ष पहले उसे देहली के षड्यंत्र के अभियोग का मुखिया बताया गया था, और वह गिरिफ़तार न हुआ था। उसकी गिरिफ़तारी के लिए बड़ी भारी रकम इनाम के तौर पर रखी गई थी। उसने साल भर इधर उधर काटा और आश्चर्य जनक साहस करते हुए वह फिर पञ्जाब में आ गया।

डाके डालने की विनाशकारी गलत पालिसी।

उन लोगों के मुखिया मेम्बरों ने लुधियाने के छोटे २ रेलवे स्टेशनों के पास अपनी कमेटियां कीं। उनमें कभी तो

छावनियों पर धावा करके फ़ौजों को साथ मिलाने की तज-वीज़ हुई, कभी सरकारी खज़ानों को लूटने की। परन्तु उनमें कुछ सफ़लता न होने पर बङ्गाल का कार्य्य क्रम लोगों पर डाका मार कर रुपया इकट्ठा करना आरम्भ किया। ताकि अपने खर्च का गुज़ारा निकालें और गदर की तय्यारी का सामान इकट्ठा करें। मुझे देश के नाम पर डाका डालने की पालिसी कभी समझ में नहीं आई। बहुत बेहतर हो कि वे नवयुवक सब से पहले अपने घरों पर डाका डालें अथवा रुपये की आवश्यकता हो तो उसके लिये स्वयम् काम करें, दूसरों से रुपयों मांगें जिन लोगों पर आप डाका डालते हो उस कस्बे अथवा गांव को देश भक्ति की क्या शिक्षा मिलती है। मैंने जेलखाने में बङ्गाल के डाकटर की पार्टी को कई बार यह पूछा, उत्तर में कहा गया, सेवा जी डाके डाला करता था, क्या यह झूठ बात है। सेवा जी किले और शाही खज़ाने लूटता था, यदि उसने कोई भूल की भी हो तो हम क्यों ऐसा करें। डाकों के कारण तो उसे सफलता नहीं हुई। मैं तो डाकों की तय में नामधारी लीडरों का स्वार्थ और पाप देखता हूं जो कि नवयुवकों को फंसा कर आप रुपया नष्ट करना चाहते थे।

इधर पोलीस को इन सबके नाम गाम और ज़िलों के पते मालूम थे। पोलीस जहां तहां इनके पीछे थी। वे अपने गांव में जाते, पर पोलीस के डरसे वहां रात भर भी न ठहरते

थे। इधर उधर फिरने में किराया व खुराक के लिए खर्च चाहिये था। इसलिए जब उन्होंने डाके डालने शुरू किये, इधर उधर फिरते हुए उनके साथी पकड़े जाने लगे। पेशावर में जगतराम पकड़ा गया, अम्बाले में पृथ्वीसिंह पकड़ा गया। फिरोजपुर से टाङ्गे पर जाते हुए सात आदमी एक गाओं के पास उनके लिबास से पहचान लिये कि वे अमरीका से आए हैं। उनको ठहरा कर उनकी तलाशी करनी चाही। उनके पास पिस्तौल थे, उन्होंने पिस्तौल का फ़ायर कर दिया और थानेदार एक आध सिपाही मारे गए। यह लोग जङ्गल में भाग गए। पोलीस ने गाओं वालों को लेकर घेरा डाल दिया निरुपाय होकर पकड़े गए और मुकदमा होकर फांसी पर लटकाये गए। उनमें से एक पण्डित काशीराम था जिसकी चालीस की अपनी सम्पत्ति थी, वह सब गवर्नमिंट को प्राप्त हुई। लाहौर शहर में तीन आदमी एक टाङ्गे पर जा रहे थे। एक सार्जेन्ट पोलीस ने उन्हें पकड़ना चाहा। उन्होंने पिस्तौल से फ़ायर किया। सार्जेन्ट घायल होकर मर गया। उन में दो भाग गए, एक पकड़ा गया, वह भी फांसी पर लटकाया गया।

लुधियाने के जिले में दो तीन डाके डाले गए। अन्त में एक डाका अमृतसर के पास एक गांओं चब्बा में डाला गया। उसका कारण निजका वैर और स्वार्थ था। वहां के कुछ जाट एक ब्राह्मण साहुकार के कर्ज़दार थे, उससे वैर रखते थे।

उनका एक सम्बन्धी अमरीका से वापस आया था और इस पार्टी से सम्बन्ध रखता था। उन्होंने बहुत से इकट्ठे होकर गांव में डाका डाला। गांव के लोग उसकी सहायता को निकल पड़े। आपस में फ़साद हुआ बम्ब और पिस्तौल भी चलाए गए और वह ब्राह्मण निर्दयता से मार दिया गया। वहां एक साधारण लोहार उनके साथ गया, वह भाग न सका। उसने बताया कि मूलासिंह उनका मुखिया था। मूलासिंह की तलाश पर पोलीस ने एक आदमी कृपालसिंह को छोड़ा जो कि उनके अन्दर आ मिला और बहुत बातें बनाने पर तुरन्त लीडर बना दिया गया। कृपालसिंह की सहायता से मूलासिंह अमृतसर के स्टेशन पर गिरिफ्तार किया गया। इन लोगों को कृपालसिंह पर सन्देह हो गया। और एक लड़का उसके पीछे लगाया गया। उसने उसके विरुद्ध रिपोर्ट दी, और इसलिए उन्होंने ग़दर करने की तारीख तीन दिन पहले अर्थात् २२ फ़र्वरी से १९ फ़र्वरी करदी। परन्तु साथ ही उसको भी बता दिया गया कि तारीख बदल दी गई है। उसने पोलीस को सूचना देकर गार्द मंगाई और रात को मकान में सोए हुए सात आदमी गिरिफ्तार करा दिये। उन में से एक आदमी अमरसिंह था जो कि लाहौर में लीडर का काम करता था।

गिरिफ़तारी के समय मनुष्य के हृदय की परीक्षा का अवसर आता है। इससे पहले प्रत्येक जन वीर होता है।

रौनक और शाबाश मिलते समय बहुतेरे वीरता कर सकते हैं। क्रोध और जोश में वीरता दिखलाना एक काम होता है, परन्तु जब कहीं जोश का कोई अवसर न हो, बन्द कोठड़ी में अंधेरा दिखाई दे, कोई प्रशंसा करने वाला तो क्या, कोई बात करने वाला भी दिखाई नहीं देता, ऐसी अवस्था में हृदय ठंडा और मन्द पड़ जाता है, और सब प्रकार की आशंका और चिन्ताएं उसके पीछे पड़ जाती हैं। जिस मनुष्य ने बहुत गुप्त पाप किया हो उस मनुष्य का हृदय तो घबरा उठता है, उसका पाप प्रति क्षण उसकी छाती पर आ बैठता है, और वह प्रत्येक समय प्रगट कर देने के लिए तड़पता है।

अपनी वीरता को दिखलाने के लिए दुंदुभि पर चोट पड़ते हुए सहस्रों मनुष्यों के दल में क्षत्रिय तोप बंदूक के सामने चला जाता है, तलवार और भाले की चोट सहने पर तैयार हो जाता है, परन्तु ऐसे हृदय थोड़े होते हैं, जो कि चुपचाप एकान्त में पड़े अपने अन्दर के भय के बोझ के नीचे न दब जांय। बहुतेरे मनुष्य गुप्त सोसाइटियों में सम्मिलित होते हैं, और मन में यह समझ कर लम्बे चौड़े बांधनू बांधते हैं कि स्वतन्त्रता के मिलने पर सारे का सारा अधिकार उसके हाथ में होगा, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी, और उनके नामका डंका बज जायगा। परिणाम उलटा होता है, उनकी आशाएं धूलि में मिल जाती हैं, तब उन्हें प्राण बचाने की चिन्ता पड़ जाती है। यह सब हृदय के बल और

निर्बलता पर निर्भर होता। पण्डित काशीराम शराब पिया करता था। सुखका जीवन गुज़ारा करता था। बहुतसा रुपया उसके पास था। हवालात में फांसी की सज़ा के समय में बड़ा दिलावर था, उस समय भी उसका भाव उसके पर शासन करता था, उसके साथी भी उसी के कारण साहस पकड़े रहे, परन्तु जब मूलासिंह और अमरसिंह गिरिफ़तार हुए और उन्होंने पोलीस से सुना कि वे सब जानते हैं, तो वे फ़ौरन वादामाफ़ बनने पर तय्यार हो गए। सब से पहले नवाब खान ने आप ही पोलीस को सूचना दी थी, और इधर वह सर्गरम मैंबर था, उधर सारी बातें पोलीस को बतलाता रहा।

१०–मेरी गिरिफतारी।

सरकारी ओर से मुकद्दमे में बयान किया गया, कि इस षडयंत्र का वास्तविक नेता मैं था, और मैं अमरीका में सारे कार्य्य क्रम का फैसला करके भारत में चला आया था, ताकि यहां आकर लोगों का षड् यंत्र के उद्देश्य के लिये तय्यार करूं। एक तो इसका स्पष्ट प्रतिवाद यह था कि इस षड् यंत्र का वर्तमान रूप महा युद्ध के पश्चात दृष्टि गोचर हुआ, और युद्ध से एक वर्ष से भी पहिले

अमरीका से रवाना हो आया था, और चलने के पश्चात् कभी किसी को चिट्ठी पत्री नहीं भेजी। इसका उत्तर अत्यन्त हास्य जनक दिया गया, कि हमें साल भर पहले ही जर्मनी के आने वाले युद्ध का पता था। और इसी आधार पर सब तैयारी करने का विचार था। परन्तु यह बात भुला दी जाती है कि यदि "कामागाटा मारु" जहाज़ की घटना न होती तो अमरीका और कैनाडा के लोगों में इतना जोश पैदा होना असम्भव था। क्या इसका भी पहले ही ज्ञान होना सम्भव था?

देहली के षड्यंत्र के मामले का संक्षिप्त विवर्ण।

देहली षड् यंत्र के मामले से यह दावा सर्वथा निर्मूल हो जाता है। मेरे लाहौर पहुंचने के चार पांच मास पश्चात् देहली का प्रसिद्ध अभियोग हुआ, कलकत्ते से पोलिस राय बिहारी घोष की खोज में निकली। कलकत्ते के राजा बाज़ार के एक मकान की तलाशी में उसका सूराग मिला था। यह मालूम हुआ कि वह देहली गया है। देहली की जनता के नेता मास्टर अमीर चंद की डाक देखना शुरू किया गया। उनके साथ उनके एक मित्र अवध बिहारी रहा करते थे। उनका एक पत्र "एम० एस०" नाम से शिमले से आया था। अवध बिहारी को वह पत्र दिखा कर पूछा गया कि यह एम० एस० कौन है? अवध बिहारी ने बताया कि यह लाहौर का दीनानाथ है। उसी शाम लाहौर

के गुप्तचरों द्वारा दीनानाथों के मकान बंद किये गये। तीन दीनानाथों का हाल चाल जानकर कुछ न किया गया, और एक दीनानाथ की तलाशी हुई, क्योंकि वह पोलीटिकल बातें बहुत करता था और कोई काम धंधा न करता था। उसे हवालात में ले जाते समय उसने रोना और चिल्लाना शुरू किया। पोलीस को निश्चय हो गया कि उसकी तय में बहुत से गुप्त भेद हैं। परिणाम क्या हुआ? उसने पंजाब में "गदर" के आंदोलन की गुप्त हिस्टरी बयान करनी शुरू की जिस में बताया कि सन् १९०८ ई० में हर दयालु जाते समय मास्टर अमीरचन्द को अपना प्रतिनिधि नियत कर गया था, और स्वयं दीनानाथ को लाहौर में एक नायब का दर्जा दिया था। उस में उसने लारंस बाग की बंब की घटना और एक माली की हत्या के वृतान्त वर्णन किये। और कहा कि वह बंब उसने और बसंत कुमार ने वहां रखा और आप भाग आए, और अपनी गुप्त सोसायटी में लाला हंसराज जी के बेटे बलराज का नाम और मेरे चचेरे भाई बालमुकन्द का नाम बताया। राश बिहारी के रहने की जगह बताई। राश बिहारी एक और मकान में चला गया था। यद्यपि पोलीस ढूंढती रही, पर वह बच कर निकल गया। सरकार को पक्का विश्वास होगया कि लार्ड हार्डिङ्ग पर देहली का बंब इन लोगों की सहायता से राश बिहारी व बसंत कुमार ने गिराया है। इसलिये चाहे मुकदमा कानूनी तौर पर

सचित हुआ हो या नहीं, मास्टर अमीर चंद, अवध बिहारी, भाई बालमुन्द और बसन्त कुमार को फांसी की सज़ा दी गई। और बलराज और नेवंत सहाय को सात २ साल की कैद। भाई बालमुकन्द सहर्ष फांसी पर चढ़ गया, जहां पर उसके बुजुर्ग भाई मतिदास को औरंगज़ेब के हुक्म से आरे के साथ चीर डाला गया था। उसकी धर्म पत्नी श्रीमती राम रखी जो कि अति सुन्दर थी, अभी एक साल ही हुआ था कि ब्याही गई थी, भाई बालमुकन्द के पकड़े जाने पर उसने फिर चारपाई पर पाओं नहीं रखा और अपने प्राणपति के फांसी पाते ही अपने प्राण त्याग दिये। आर्य्य गज़ट ने इस घटना को बड़ी सुन्दरता से वर्णन किया है जो पाठकों के प्रति भेंट किया जाता है :—

दर्द नाक सच्ची कहानी।

[१]

फूल खिला था। बुलबुल उसकी खूबसूरत मुलायम पंखड़ियों को छू २ कर गाता था। गुलची आया, बुलबुल डरके मारे उड़ी और फूल के इर्द गिर्द चक्कर लगाने लगी। गुलची ने निहायत बेरहमी से फूल तोड़ लिया। उसकी पंखड़ियों को भी अलहदा २ करके टोकरे में डाल दिया। बुलबुल चीखी चिलाई, लेकिन बेसुद। आखिर बुलबुल बेहोश कर गिर पड़ी और फूल के पास ही तड़प २ कर मर गई।

[२]

गर्मियों के दिन थे । वह जेल में थे, मैं घर में थी । छः महीने से मैं किसी घड़ी की इन्तज़ार में थी । लोग कहते थे, तू बावली न बन, वे छूट जांयेंगे और आ जांयगे । मैं कहती थी, वह दिन कब आयगा, वह सूरज कब नमूदार होगा, वह रात कब खत्म होगी और वह शुभ घड़ी किस वक्त आयेगी ।

मैंने दिल्ली काहे को कभी देखी थी । लेकिन वह दिल्ली में ही रखे गए थे । वहीं मुकदमा चल रहा था । मैं वहां पहुंची । देखा जेल की कोठड़ियां बड़ी भयानक हैं और उन तंग कोठड़ियों के अंदर सावन भादों की गर्मियों में उनको दिन रात वहीं रहना पड़ता है । मैंने पूछा, क्या चारपाई मिलती है ?

कहने लगे "क्या भोली बनी है, यहां चारपाई का क्या काम ?"

मैं—तो फिर काहे पर सोते हो ?

वह—एक कंबल ज़मीन पर बिछा कर सो रहता हूं ।

[३]

मैं अपने घर वापस आई । रात को लोग खुली छतों पर चारपाईयां बिछा कर सोये । मैं सब से निचली कोठड़ी में घुस गई । एक ऊनी कंबल ज़मीन पर बिछाया और उस पर लेट गई । मच्छर भिनभिनाने लगे । कान के इर्द गिर्द चक्कर लगाते थे । ऐसा मालूम होता था कि सम्मन दे रहे हैं, और

कह रहे हैं कि "नादान। क्या ऐसी कोठड़ियों में गर्मियों दिनों में कम्बल के ऊपर नींद आया करती है? मैं उठ बैठी। झरोखे में से चन्द्रमा की किरणें आ रही थी। मैंने झुक कर उसे देखा और पूछा, क्यों चमकने वाले! क्यों तू उनके कमरे में भी चमकता है। क्या तू देखता है, कि वह भी रातें इसी तरह जागते और करवटें बदलते काट देते हैं।

चन्द्रमा की ओर बार २ देखने पर भी मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। मैं फिर लेट गई। मच्छरों ने मेरा शरीर काट २ फोड़ा बना दिया। अगली रात को भी मेरा बिस्तर इस कोठड़ी के अन्दर था। तीसरी रात मच्छर मुझ अबला पर मुझे असहाय और दीन पाकर आक्रमण कर चुके थे कि अचानक मेरी सहेली आगई। कहने लगी:—

"क्या मरने पर कमर बांध ली है?"

मैंने कहा "क्यों मैं कैसे मरने लगी हूं"

उसने कहा "ये ढंग तो मरने के ही हैं"

मैंने पूछा, क्या जो इस तरह से सोते हैं वे............

सहेली—हां हां मर तो जाते हैं।

मेरी आंखें तर होगईं। आंसु टपक पड़े। सहेली हैरान रह गई, अपने आपको कोसने लगी। मैंने कहा, किसी का कोई दोष नहीं, मेरे भाग्य फूट चुके हैं। वे जेल में जिस तरह सोते हैं तो क्या मैं उसी तरह न सोऊं।

अब फिर मुझे उनको देखने की अनुमति मिली। फिर दिल्ली पहुंची। अबके हाल पूछा तो कहने लगे, हम एक ही समय खाना खाते हैं। मैंने कहा, रोटी कैसी होती है, तो उन्हों ने रोटी का एक टुकड़ा मुझे दे दिया। वह मैं ले आई। देखा उस में चने भी हैं, गेहुं भी हैं और २ भी कुछ पड़ा हुआ है। मैंने भी घर पहुंच कर उसी तरह का अनाज बनाया, पीसा और रोटी पकाई, और एक वक्त खाकर दूसरे पहर पानी पर गुज़ारा किया। इसी तरह कई महीने बीत गये। मुकदमा लगातार होता रहा और आखिर एक दिन जब कि मैं अपनी कोठड़ी में बैठी उनका चिंतन कर रही थी तो बाहर से रोने की आवाज़ आई। मेरा कलेजा ज़ोर २ से उछलने लगा। मेरे माथे पर पसीना आगया। दिलको थामे मैं बाहर आई। बाहर आकर देखा, वे उनका नाम ले लेकर बातें कर रही थी।

"फांसी का हुक्म फांसी का हुक्म हो गया।"

(५)

उनको आखरी बार देखने मैं फिर दिल्ली पहुंची। उसी जेल में जहां जवानों की जवानियां खतम करदी जाती हैं। जहां नर्म और नाज़ुक पंखड़ियों को मसल दिया जाता है। मैं भी वहीं पहुंची। दर्शन किये। दिल कहता था कुछ बात कर लें। होंट कहते थे हमारे अंदर हरकत करने की ताकत नहीं है। हां उनके लब हिले और आवाज़ आई "प्राण

प्यारी ! संसार असार है। जो आया है उसने जाना है, कोई किसी का साथी नहीं। अपने आपको सौभाग्यवती समझो कि मैं देश हित के लिये अपनी आहुति देता हूं"।

मेरे कानों ने इस आवाज़ को सुना और छम २ आंसू बरसाने शुरु कर दिये। बार २ आंसुओं को रोकती थी कि जी भर कर देख तो लूं, लेकिन रुकते ही न थे। अगले रोज़ हवन सामग्री एकट्ठी की गई। लोग कहने लगे, आज उनका अन्त्येष्ठी संस्कार होगा। मैंने कहा यह अच्छा मौका मिलेगा। मैं उनसे अब मिलाप करूंगी। लेकिन थोड़ी ही देर के बाद सब लोग वापस आगये और कहने लगे कि लाश नहीं मिलती"।

(९]

फिर क्या हुआ, मैं आगे बयान नहीं कर सकती। आज पंद्रह दिन से मैं व्रत से हूं और अब वह घड़ी करीब आरही है, जब मेरा मनोरथ पूरा हो जायगा"।

इतना कह कर देवी चुप होगई। यह दर्द भरी दास्तान सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गये। आंखों से आंसु बहने लगे। दिल में दर्द होने लगा। देवी ने फिर अनाज का एक दाना तक नहीं खाया और पानी का एक घूंट तक नहीं पिया। पंद्रहवां दिन छोड़ अठारहवां दिन इस तरह निराहार गुज़ार दिये गये। एक ही जगह पर बैठ कर उसका ध्यान लगाए हुए। जिस पर उसका ध्यान टिकता था, देवी ने

तपस्या की, और आखिर एक दिन जबकि आस्मान बिलकुल साफ़ था, सूरज चमक रहा था, लोग अपने कारोबार में लगे थे, कि देवी अपनी जगह से उठी। खुद ही साफ़ सुथरा पानी लाई। स्नान किया और शुद्ध वस्त्र पहन कर फिर पहली जगह पर लेट गई। और कहने लगी, "प्यारे बहुत दिन तक परीक्षा ले चुके। आज तो दामन न छोडूंगी। अब जुदा न हो सकूंगी" यह कहा और प्राण खेंचकर छोड़ दिये लोग कहने लगे "भाई बालमुकुन्द की धर्मपत्नी सती हो गई" मैंने कहा गुल पर बुलबुल निसार हो गई। यह बनावट नहीं असलीयत है, कहानी नहीं हकीकत है।

षड्यन्त्र का वास्तिवक नेता एक उन्नीस वर्ष का लड़का।

मुकदमे के इन हालत से साफ़ मालूम होता है कि दीनानाथ के अपने ही बयानों के अनुसार यहां पर यदि और नहीं तो दीनानाथ अवश्य ही हरदयालु का लैफटिनेन्ट लाहौर में रहता था। यदि मेरा कुछ भी हाथ "गदर" के आन्दोलन में होता जो कि सरकार समझती थी तो अमरीका के सारे हालात षड्यन्त्र आदिक के मैं उस से जिक्र करता और लाहौर के लीडर को अपने साथ मिलाता।

नवाब खान ने निस्सन्देह मेरे विरुद्ध बयान दिया, कि कर्तार सिंह ने उसे बताया कि इस सारे षड्यन्त्र का

वास्तविक नेता मैं था, तथा कर्तार सिंह सब कुछ मेरे साथ सलाह सम्मति करके करता था, मियांमीर छावनी पर आक्रमण करके विचार मेरे कहने से किया गया था। इत्यादि।

सच्ची बात तो यह है कि पंजाब में सारी हलचल का वास्तविक लीडर कर्तार सिंह था। उस लड़के का साहस और पुरुषार्थ आश्चर्य्यजनक था। उसकी आयु १९ वर्ष के लगभग थी और वह लुधियाने के जिले का रहने वाला था। १५ वर्ष की आयु में वह लुधियाना खालसा स्कूल की सातवीं श्रेणी से भागकर अमरीका चला गया था। वहां पर कुछ देर के लिये काम करता था, और कुछ काल वहां अमरीका स्कूल में पढ़ता था। वहां गदर के आंदोलन का उसे शौक हो गया और "हवाई जहाज" बनाना सीखता रहा। युद्ध की बात उड़ते ही वह भारत में वापस चला आया। आते ही अपने स्कूल के पुराने सहपाठियों को अपने साथ मिला लिया। प्रायः सारे के सारे लड़के उसके चेले बन गये।

पीछे जब और आदमी आगये तो वह सबका नेता बन गया और चाहता था कि सब आदमी उसकी सलाहपर चलें। जब कभी दूसरे आदमी उसकी सलाह पर आशंका करते थे, ऐसा मालूम होता है, वह कह दिया करता था कि यह भाई परमानन्द की सलाह है और मैं उससे पूछ

कर आया हूं। यद्यपि मेरे पूछने पर उसने कहा कि "यह गलत है, मैंने कभी ऐसा नहीं किया" परन्तु मैं यह ठीक उसकी प्रकृति के अनुकूल समझता हूं कि वह ऐसा कह देता होगा।

जर्मनी से ओहदे दिलाऊंगा।

लड़कों को उसने बताया था, अब पढ़ना छोड़दो, जर्मन आता है, मैं तुम्हें उसके पास ओहदे दिलाऊंगा। जहां वह जाता था, पैदल चलते गांवों में, स्कूल में, रेलगाड़ी में, वह ऐसी ही बातें करता था।

रेल में सफ़र करते हुए उसे एक हवलदार । मिला हवलदार को उसने कहा कि तुम नौकरी क्यों नहीं छोड़ते?

हवलदार ने उसे जोशीला बच्चा समझ कर कहा कि "तुम अपने आदमी मियांमीर लाओ। मैगज़ीन की चाबियां मेरे पास रहती हैं, मैं तुम्हारे लोगों के हवाले कर दूंगा"।

२५ नवम्बर तारीख़ रखी गई। जब अपनी कमेटी में उसने इस तज़वीज़ का ज़िक्र किया, तो उन्होंने उस पर मखौलसा किया। तब वह कहने लगा, अच्छा, मैं भाई जी से पूछ आता हूं। दूसरी रात को जाकर बता दिया कि मैं उससे इजाज़त ले आया हूं, और कोई सौ आदमी के लगभग रात भर मियांमीर के रेलवे स्टेशन के इर्दगिर्द ख़राब होते रहे। इस पर नवाब कहता है कि जब मैंने कर्तारसिंह को

फटकारना शुरू किया तो उसने उत्तर दिया "मैं क्या करूं, भाई परमानन्द मुझ से ये ग़लतियां कराता है।

यदि यह सच हो, तो इसमें सन्देह नहीं कि कर्तारसिंह को यह आवश्यक प्रतीत होता था कि उसकी लीडरशिप और योग्यता पर अविश्वास उत्पन्न न हो। उन लोगों ने जो मुहिम्में आरगनाइज करने का यत्न किया, जिनमें फिरोज़पुर पल्टन को साथ मिलाने का यत्न किया था, मियांमीर के रसाले का ग़द्दर के लिये तैयार करना था, और एक रात कोई सौ डेढ़ सौ सवार घोड़ों पर जीन कसकर तैयार हो गए, किन्तु उनको कोई उस पार्टी का आदमी न मिला। इन सब के अन्दर लड़कपन पाया जाता था और इसके लिए कर्तारसिंह की उम्र ज़िम्मावार थी। पर उसका जोश और निर्भयता और मौत से बेपर्वाही असाधारण गुण हैं जो कि एक नवयुवक बालक में पाए जा सकते हैं।

कर्तारसिंह की निर्भयता का एक उदाहरण।

लुधियाना की पोलीस उसकी तलाश करती थी। उस की खोज में लुधियाने से दो चार मील के फ़ासले पर एक गांव में एक मकान की तलाशी ले रही थी। कर्तारसिंह बाइ-सिकल पर चढ़े हुए वहां जा निकले। सड़क से उसे मालूम हुआ कि पोलीस तलाशी ले रही है। यदि भाग जाता तो पो-लीस उसका पीछा करती और वह पकड़ा जाता। बाइसिकल

लिए हुए उस मकान पर चला गया। पानी का एक ग्लास पीकर वहां से बाइसिकल पर वापस चला आया। अदालत में सब इन्स्पेक्टर ने उसे कहा "शाबाश! तुम खूब चालाक निकले, हमको ग़ज़ब का धोखा दिया" अफ़सरों से उसको ज़रा भी डर न लगता था। डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पोलीस मिस्टर टामकिन उनको गिरिफ़तार होने पर लेने के लिए गए। वह और हरनामसिंह और जगतसिंह एकट्ठे सरगरोह में एक सर्दार दोस्त को मिलने गए। सर्दार ने उन्हें वहां बैठा कर पोलीस को बुला भेजा। वह सर्दार बाद में कत्ल कर दिया गया।

लाहौर स्टेशन पर कर्तारसिंह हाथ पाओं ज़ंजीरों में जकड़े हुए बोला "मिस्टर टामकिन, कुछ खाने को तो ला दो, भूख लगी है।"

जेल में भी सुपरिन्टैन्डैन्ट से निश्शंक होकर सब बात कह देता था। सुपरिन्टैन्डैन्ट उसकी आयु देखकर हैरान सा रहता था, और बड़े चाव से उस की बातें सुना करता था। जब वह कहता था। "फांसी तो दे दोगे, अब इस जगह क्यों तकलीफ़ देते हो।"

एक दिन सायंकाल समय हमको हुक्म हुआ कि अपना अपना कंबल प्याले और पानी की घड़ी उठा कर बाहर निकलो, और हमारी सब की कोठड़ियां बदल दी गई। आगे से हररोज़ ही ऐसा होना शुरू हो गया। कुछ दिन इसका

कारण मालूम न हुआ। धीरे २ यह पता लगा कि कर्तारसिंह ने क़ैदी लम्बरदार के ज़रिये जंगला काटकर रात को भाग निकलने का यत्न किया था। उनमें से ही एक ने बात खोल दी, और कर्तारसिंह की कोठड़ी में से धागा और पीसा हुआ कांच मिला।

क़ैदी लोग लोहे के जंगल को काटने को यह विधि बतलाते हैं कि कांच को बारीक पीस कर पानी में भिगो कर धागे पर चढ़ा लिया जाता है। धागे को सुखा देने से उसे लोहे के साथ रगड़ने से जंगला कट जाता है।

मैं मरना चाहता था।

मैंने कर्तारसिंह से कहा, यह तुमने क्या किया। अच्छे आराम में अमरीका में मौज से बैठे थे, यहां आकर जेल में सड़ रहे हो। उसने तुरन्त उत्तर दिया वहां भी ज़िंदगी बोझ था, जब अमरीकन गाली देकर कहते थे "डैम हिन्दु" तो दिल जल जाता था। मैं तो मरना चाहता था, और मरने के लिए यहां आया हूं। मैंने उससे कहा, तुमने यह क्या किया, मुझे भी अपने साथ फंसा लिया। कहने लगा "जो कुछ मैंने किया है, आप उसके ज़िम्मावार हैं मैं हैरान हो गया, और कहा, वह कैसे ?

अमरीकन ड्रग स्टोर की मुलाकात की याद।

तब उसने मुझे अमरीकन ड्रग स्टोर की कोठी की घटना

याद दिलाई। एक बार रात को वह मेरे पास आया था। वहीं हम इकट्ठे सो रहे थे। उसकी कलाई पर चोट लगी थी, और वह दूसरे दिन सवेरे हमारे हस्पताल में दिखलाना चाहता था। उस रात मैंने उससे पूछा कि क्या इण्डिया की हिस्ट्री जानते हो ? उस ने कहा कि हां ! मैंने उस से सवाल किया कि यह बताओ कि वह जाति जो इतनी मुर्दा और गुलाम हो चुकी थी कि उस पर सात सौ साल तक हमलों का दरिया पश्चिमोत्तर दिशा से लगातार बहता रहा, बेशुमार लोग गुलाम बनाकर ले जाए गए, बहुतेरों के सिर भेड़ों की तरह काट दिये गए, परन्तु पिछली पंजाब हिस्ट्री में हम देखते हैं कि उसी मुर्दा जाति में से एक ऐसी शक्ति उत्पन्न हुई, जिसने न केवल हमलों का दरिया रोक दिया, बल्कि उस का रुख दूसरी ओर फेर दिया, यह बड़ा चमत्कार किस तरह हुआ। करतारसिंह सोचता रहा। अन्त में मैंने उसे गुरुगोविन्दसिंह का वचन याद दिलाया "चिड़ियों से मैं बाज़ मराऊं, तब ही नाम गोविन्दसिंह पाऊं" इस चमत्कार का करने वाला वही था और उसका तरीका सिरों का कटवाना था, जो कि उसने यज्ञ में निकाला, और जिस पर और उसके पिता चलते हुए शरीर से अलग हुए थे। प्राणों का मोह छोड़कर लोगों के अन्दर निर्भयता का गुण उत्पन्न किया, इससे मृत्यु जीवन में बदल जाती है।

करतार सिंह ने कहा, कि बस उसी रात मैंने देश के

लिये सिर देने का विचार कर लिया था । वह कहता कि लाहौर में भी एक बार मुझे मिला था और मैंने उसकी बातों को बचपन की बातें समझकर टाल दिया था । अदालत में बयान देते उसने साफ़ माना, कि मेरा यह इरदा था कि देश को आज़ाद करने की कोशिश करूं । और जो ज़रिये मैं काम में लाया हूं वे सब इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये किये थे। मेरा कोई अपना स्वार्थ न था, इसलिये मैं किसी को बुरा नहीं समझता ।

मेरी डाक पर सैंसर ।

मेरी गिरिफतारी से पहले चार महीने तक मेरी सारी डाक डिप्टी इंस्पैक्टर पोलीस के दफतर में भेजे जाने का डाकखानों में हुक्म हो गया । जितने मेरे पत्र आते थे, सब सात दिन के पश्चात् आते । उन पर पोलीस दफतर के "सैंसर" होने की मोहर लगी होती थी । यह साफ़ नजर आता है कि पोलीस को कोई ऐसा पत्र नहीं मिला, जिससे मेरा सम्बन्ध किसी गुप्त कार्य्यवाही से पाया जाता हो। यदि कोई आदमी मुझे बाहर से कुछ लिख भेजता, तब मैं नहीं समझता, कि मैं उसके ऐसा करने के लिए क्योंकर उत्तरदायी समझा जा सकता था ।

मैं तो यह समझता हूं कि संसार में किसी मनुष्य को भली भान्ति जान लेना कि वह क्या है, एक असम्भव सी बात है । केवल परमेश्वर ही जानता है। कि मैं वास्तव में

या हूं । मैं अभिमान में अपने आपको कुछ समझता हूं, मेरे मित्र मुझको कुछ समझते हैं, मेरे शत्रु और ही ख्याल करते हैं । कदाचित् यह कह देना ठीक है कि जिस अवस्था और जिन हालात में से मैं गुज़रता रहा, उनसे गवर्नमिन्ट के लिये अपने विशेष परिणाम पर पहुंचना कोई आश्चर्य जनक नहीं । परन्तु किसी मनुष्य को इतना दण्ड देने के लिये अधिक प्रमाणों की आवश्यकता है ।

फांसी के लिये नया कानून ।

मेरे पास प्रायः पोलीस अफसर कई बहानों से आकर बात चीत करते थे । कुछ समय पहले खुफिया पोलीस दिन रात मेरी निगरानी पर नियत रही । तलाशी ली गई । इसमें कुछ न निकला, यहां तक कि तवारीख हिंद की एक कापी भी मेरे पास न थी, जिसके लिये तलाशी का हुक्म दिया गया । इन सब के होते हुए भी गरिफतारी हुई । गवर्नमिन्ट ऐडवोकेट मिस्टर पैटमैन सरकारी वकील थे और लाला रघुनाथ सहाय मेरी ओर से । जज ने हंस कर इस बात को नोट कर लिया कि पहले मुकदमे में भी यह दोनों ही वकील इस पोजीशन में थे । मिस्टर पैटमैन ने जोश से कहा कि यह शख्स असल में हरदयालु को भी सिखाने वाला है, और गो इसके खिलाफ कोई सबूत नहीं, यह घास में छुपे हुए सांप की तरह है जो कि ज्यादा खतरनाक है । सबूत क्यों नहीं ? इसका उत्तर यह कि यह बड़ा सावधान था । इसने

कोई ऐसी बात नहीं की, कि जिस से फंस जाय। मुझे सानफ्रांसिस्को की बृटिश कौंसिल का कहना याद आया। उसने मेरे एक मित्र को बताया कि हमको हरदयालु का डर नहीं, वह जो कुछ खयाल करता है, बोलता रहता है। हमें सब से ज़ियादा डर "भाई परमानन्द" का है, क्योंकि वह कुछ बोलता नहीं, मालूम नहीं क्या करता है? यह एक विचित्र बात है, न करने से छूट सको, न न करने से।

इतना कह देना आवश्यक है कि "मिस्टर पैटमैन ने मेरे केस में न केवल सच्चाई से वरं सहानुभूति से पूरा काम लिया। उसने गवर्नमेंट पंजाब को सिफारिश करदी, कि मेरे बराखिलाफ साज़िश का इलज़ाम हटा लेना चाहिये। परन्तु गवर्नमिन्ट तो ओडवायर साहब की थी। उत्तर मिला कि "कानून को अपना अमल करने दो" बात और थी लाला रघुनाथ सहाय ने मुझे बताया कि तुम्हें कुछ आशा न रखनी चाहिये। तुम्हें फांसी देने के लिए तो नया कानून बनाया गया है, अगर सुबूत देखे जाने होते तो इस कानून की क्या जरूरत थी।

फांसी की कोठड़ी।

सितम्बर महीने की १३ तारीख फैसले के लिये नियत थी। हम सबको निकाल कर गोल चक्कर में ले गये। वहां पर सब एक दूसरे को गले लगा कर मिलते थे। मालूम

नहीं क्या होगा। कई गाने वालों ने जातीय गीत गाने आरम्भ किये। अभी तक हम लोगों को साझा जीवन मौज से कटता था, इसका अब अन्त होना था। जेल इसकी आवाज से गूंज गया। यह सब असह्य था। इसलिये हम सबको फिर वापस अपनी २ कोठड़ियों में बंद कर दिया गया, और दो २ तीन २ करके अदालत के कमरे में फैसला सुनने के लिए ले जाते थे। तीन व चार को बरी करने के अतिरिक्त बाकी सब के लिये दो तरह की सज़ा थी। जिनको फांसी की सज़ा सुनाई जाती थी उन्हें एक तंग दरीचे के रास्ते गुज़ार कर फांसी वाली कोठड़ियों में बंद कर दिया जाता था। दूसरों को जिन्हें कालापानी सुनाया जाता था, दूसरे अहाते में ले जाया जाता था। २४ आदमी फांसी की कोठड़ियों में दाखल हुए, जिन में एक मैं भी था। हम पर जेल के सरकारी मुलाज़म तुरन्त ही पहरे पर लगा दिये गये। उनमें से कई बाहर के जेलों से खास नौकरी के लिये मंगाये गये थे।

फांसी की सजा।

हुक्म सुनते हुए कई आदमियों ने कई प्रकार के रिमार्क अपने भावों को प्रकट करने के लिए कहे। एक भाई को काला पानी सुनाया गया, उसने कहा, मैं फांसी मांगता हूं। उत्तर मिला, इसके लिए अपील करो। कर्तारसिंह को फांसी का हुक्म सुनाया गया। उसने कहा "थैंक यू" अर्थात् मैं आपका

धन्यवाद करता हूं। एक दूसरे ने फांसी का हुक्म सुनने पर कहा "बस इतना ही!"

मुझे यह बताया गया कि तुम्हारे विषय में मत भेद है। दो की सम्मति फांसी की है, एक की कालापानी की। तुम अपील करो। मुझे कुछ हैरानी सी हुई, परन्तु मैं चुप रहा।

इससे पहले हम अपना कुर्ता और पाजामा व धोती पहने हुए थे। पहला काम यह था कि हमें फांसी वालों की ख़ास वर्दी पहना दी गई। एक कुर्ता और एक जांघिया, जिस में नाला न था। सुपरिन्टैन्डैन्ट ने आकर पूछा कि कौन २ अपील करना चाहता है। कई आदमियों ने अपील करने से साफ़ इनकार कर दिया, क्योंकि वे दया की प्रार्थना नहीं करना चाहते थे। कुछ दूसरों ने साधारण बात समझकर अपील लिखादी। मुझे भी मत भेद के कारण अपील करने के लिए कहा गया था, परन्तु अभी तीन ही दिन बीते थे कि गवर्नमेंट का हुक्म आ गया कि उनकी सम्मति बहुमत के साथ है।

फांसी की कोठड़ी में रिश्तेदार।

मैंने अपनी स्त्री को कार्ड लिखा, कि मुझे आकर मिल जायें। परन्तु किसी प्रकार का दुःख व शोक प्रगट न करना। दूसरे लोगों के रिश्तेदार भी मिलने आये मेरी स्त्री और लड़कियां मिलने आई। मेरा मन उन्हें देखकर प्रसन्न हुआ। कि मेरी स्त्री यद्यपि उदास दिखाई देती थी, परन्तु धीरज में थी। उस के पश्चात् तीसरे दिन फिर मिलने आई। अब हमारी मुला-

कात का ढङ्ग बिलकुल बदल गया । इस कोठी से निकलना हमारे लिए बिलकुल बन्द था । कोठी के बाहर छोटासा आंगन था । उस आंगन के साथ एक दरवाज़ा था । उस दरवाज़े पर एक जाली लाकर लगा दी जाती थी । हम कोठी के अन्दर अपने जंगले के पीछे खड़े होते थे । हमारे मुलाकाती जाली के बाहर खड़े होकर हमारी ओर झांक सकते थे । मुलाकात सायंकाल को होती थी । ताकि सूरत अच्छी तरह नज़र न आए । एक मुलाकात में मेरी सास वहां आई, वह देखते ही हाथ लम्बे करने लगी । मैंने गुस्से से कहा "क्या करती हो ?" वह सुनते ही सहम गई ।

मेरी स्त्री ने लाला रघुनाथ सहाय को तार देकर बाहर से बुलवाया और उनको शिमले भेजा, ताकि निजके तौर पर कौंसिलों के मैम्बरों से मिल कर अपील करें । लाला रघुनाथ सहाय पण्डित मालवीय जी से मिले । और सारे केस का ज़िक्र किया । कौंसिल के दूसरे मैम्बर भी इस मुकदमे के फ़ैसले पर हैरान थे । कानूनी मुंशी सैय्यदअली इमामने भी इसे पसंद न किया और इस पर बहुत समय तक विचार होता रहा । दो महीने के लगभग फ़ैसले में लग गए, इस अवसर में मालूम होता है पञ्जाब सरकार और भारत सरकार में लिखा पढ़ी होती रही । सिविल मिलेटरी के कथनानुसार पञ्जाब सरकार एक दावा रखती थी कि सब को फांसी दिया जाना आवश्यक है, क्योंकि वह लोकल हालात को

अच्छी तरह जानती थी। उनकी पालिसी साफ़ थी कि न केवल इस तरह के भयानक फ़ैसले से प्रत्युतः उन मुकदमों को लगातार जारी रखने से पञ्जाब डरा रहेगा । और पञ्जाब को डरा कर दबा रखना सरकार की रक्षा के लिए आवश्यक था । भारत सरकार इससे पूर्णतया सहमत न थी । जहां पर गवर्नमिन्ट के तरीके में भेद होता है वहां गवर्नर की प्रकृति ही पालिसी को बनाती है । यदि गवर्नर लार्ड हार्डिंग जैसा गम्भीर और नरम दिल होता है, तो गवर्नमिंट की पालिसी एक तरह की होती है और यदि गवर्नर ओडवायर जैसा खूंख़ार और निर्दयी होता है तो सरकार की पालिसी और होती है । हम में से बहुतों के लिए और दिन कष्ट भोगना और संसार का तमाशा देखना था, इसलिए लार्ड हार्डिंग की कोमल प्रकृति फल लाई और दो महीने पीछे २४ में से १७ की सज़ा फ़ांसी की जगह काला पानी में बदली गई ।

फांसी पाने वालों का जीवन कैसे कटता था ?

यह तो वाह्य सृष्टि में हो रहा था । हमें इस समय उसका कुछ बहुत ज्ञान न था । हमारे हृदयों का दृश्य और ही था । जिन लोगों ने चम्बा का डाका अपने स्वार्थ वश हो कर डलवाया था, वे लोग थे, जिन्हें इस दण्ड का घना दुःख था । उनमें से दो तो बिलख २ कर रोते थे । शेष सब पर यह कहावत अक्षरशः घटती थी "बहुतों की मौत एक मेला होता है" ।

लोग इस बात को अनुभव नहीं कर सकते, और सम्भव है, कि मेरे बताने पर विश्वास भी न ला सकें, कि हमारी दशा सचमुच ऐसी मस्ती की थी कि जिसे एक उत्सव कहा जा सकता है ।

दिन भर में एक क्षण भी ऐसा न था जब कि कोई न कोई भजन अथवा क़ौमी ग़ज़ल न गाई जाती हो, जो कि उन लोगों ने पहले बनाई थीं अथवा जेल के अन्दर तैय्यार की थीं । आधी २ रात तक अपनी कोठड़ियों में दूसरों के साथ बातें करते और हंसते थे, जब कि थक कर नींद में मतवाले हो जाते और बेसुध हो सो जाते थे । हमारे पहरेदार सिपाही हैरान होते थे, और उनमें से कई ऐसे रिमार्क करते थे, "क्या तुम बरात पर जा रहे हो या फांसी के लिए तय्यार हो रहे हो" वे बेचारे समझ न सकते थे कि इस फांसी में क्या आनन्द था !

मरते हुए आनन्द के गीत गाना ।

मैं अमरीका में था, जब इङ्गलैंड का सबसे बड़ा जहाज़ "टाईटानिक" अपने पहले ही सफ़र में अमरीका जाते हुए रास्ते में बर्फ़ के तोदे से टकरा कर टूट गया और डूबने लगा।

इस से पहले संसार में सब से बड़े जहाज़ जर्मनी के थे, जो कि यूरुप और अमरीका के मध्य की यात्रा छः सात दिन के स्थान में पांच दिन में पूरी करते थे । इन जहाज़ों की शान का इसी से पता लग सकता है कि उनके अन्दर बाग़ीचे

सैर करने को सड़कें और तैरने और कूदने का बड़े २ तालाब बने रहते हैं। इङ्गलैंड की एक कम्पनी ने उनको मात करने के लिए नया जहाज़ बनाया। जिसने यह यात्रा चार दिन के अन्दर समाप्त करने की चेष्टा की, परन्तु यह प्रतिष्ठा उसके भाग्य में न थी, वह रास्ते ही में रह गया। अमरीकन पत्रों में जहाज़ का चित्र छपता था, और उसके डूबने के वृतान्त छपते थे, जहाज़ में बड़ी कम्पनी 'बैंड" बाजा बजाने वालों की होती है। कप्तान ने उनको हुक्म दिया कि वे अपने बाजे लेकर भजन गाना आरम्भ करें, और जब जहाज़ प्रति क्षण नीचे जा रहा था, वे अङ्गरेज़ी में भजन "Nearcr O my lard to thice" "निकट अधिक निकट, ओ मेरे परमात्मा तुम्हारे" गाते और बजाते थे। इसी तरह पानी बढ़ता गया, जहाज़ नीचे होता गया और उनका शब्द इस लोक से परलोक में सुनाई देने लगा।

जब मैंने यह घटना पढ़ी थी, मेरे हृदय में उन लोगों के साहस और बलिदान को देखकर आश्चर्य होता था। वे अद्वितीय शूरवीर होंगे जो मौत के मुंह में जाते हुए आनन्द से गाते जाते होंगे। अपनी कोठड़ी में पड़े हुए मुझे कई बार इस घटना की याद आई। और मैं अब समझने लगा कि इस में वीरता की कोई बात नहीं। विशेष २ गिरे हुए दुर्बल मन वालों को छोड़ कर पुरुष का हृदय तो ऐसा बना है कि मृत्यु को अपने सिर पर आप देखकर यह उससे

सर्वथा निर्भय हो जाता है। इसी मद में वह मतवाला हो जाता है, जैसे शरीर का नियम है कि जब पीड़ा अपनी चर्म सीमा पर पहुंच जाती है। तो मूर्छा आ जाती है। इस पागल पन के अन्दर दुःख की मात्रा नष्ट हो जाती है। कर्तार सिंह सब से अधिक प्रसन्न था, वह अपनी प्रसन्नता से और हंसी से सब को प्रसन्न करता था। कहता था, जल्दी फांसी हो, ताकि फिर जल्द पैदा होकर अपना काम नये सिरे से करूं।

फांसी का दिन।

हमारा विचार था कि सातवें दिन को प्रातःकाल फांसी होजायगी। हुक्म से पहले हम को अपने खर्च पर दूध मिल जाता था। हुक्म सुनने के पश्चात् हमें केवल जेल की गंदी खुराक पर संतोष करना पड़ा। सुपरिन्टैन्डेन्ट से प्रार्थना की गई कि फांसी तो देने लगे हो, खाना तो कुछ दिन के लिये अच्छा कर दो। इसका उत्तर रुखा और कोरा था, कि ऐसा ही कानून है।

सातवीं रातको हमारे कई साथी आधी रात को उठ बैठे और अपना पाठ करना आरम्भ कर दिया। वे इस प्रतीक्षा में थे कि अभी जेल के अफसर ले जाने के लिये आते हैं। मुझे तो अपने समय पर नींद खुली। मैं सदैव अधिक सोया करता था। उस दिन मैं जागा तो बहुत से आदमियों में इस बात पर हंसी हो रही थी। इसी तरह

दूसरे दिन भी हुआ। फिर हमारा जोश उतर गया और हम निश्चिन्त होकर आनन्द में मग्न हो गये।

मुझे क्या कष्ट था ?

मुझे निज के तौर पर केवल एक ही कष्ट प्रतीत होता था, कि सूरज की धूप न आती थी, और ज्यों २ शीत प्रबल होता गया मेरा मन धूप के लिये तरसता रहा। इस इच्छा का इतना प्रभाव मेरे हृदय पर हुआ कि यह मेरे लिये अभी तक एक प्रकार का रोग होगया है कि धूप में देर तक बैठने से कभी भी जी नहीं घबराता।

एक लालसा और थी।

संसार के साथ कोई प्यार न था और न कोई जीवन के साथ स्नेह। परन्तु केवल एक बात थी, जिससे अभी संसार में कुछ समय रहने की लालसा और थी और वह "महा युद्ध" का तमाशा देखना था। मुझे कई बार ख़याल आया कि कदाचित् यह जीवन का प्यार ही तो नहीं जो जो रूपान्तर में आकर प्रकट होता है और मन में एक तुच्छ सा भाव उत्पन्न कर देता है। एक कथा महाभारत के युद्ध के सम्बन्ध मुझे इस विषय पर शान्ति देती थी। वह कथा एक ऋषि बभ्रुवाहन की थी, जिसे टेसु महाराज बनाकर पूजा जाता है। कथा मनोहर और शिक्षा प्रद है और मेरे हृदय की अवस्था के पूर्णतया अनुकूल थी। जब महाभारत

का युद्ध हो रहा था, एक ऋषि धनुष बान लिये आ रहा था कृष्ण को उसका पता मिला, वह ब्राह्मण का वेष बनाकर उसे जा मिले। और पूछा, कि आप किधर जा रहे हैं? उत्तर दिया कि, युद्ध का तमाशा देखने। फिर प्रश्न किया, कि धनुष बाण क्यों हाथ में लिया है? ऋषि ने कहा, युद्ध में जो पक्ष निर्बल होगा उसकी ओर से युद्ध करूंगा। कृष्ण ने पूछा, इस धनुषबाण की कितनी शक्ति है? ऋषि ने एक बाण चलाया. वृक्ष के सारे पत्तों में छेद होगया। कृष्ण सोचने लगे कि यह तो बड़ा बलवान् शुत्रु होगा, जब कौरव हारने पर होंगे यह उनकी ओर होजावेगा। कृष्ण ने कहा; आप इतने बलवान् हैं, क्या कुछ दान करने की शक्ति भी रखते हैं? ऋषि बोला, मांगो जो मांगना है। कृष्ण ने कहा, पहले प्रतिज्ञा कर लो, जो मैं मांगूगा, उस से नहीं फिरोगे। अब वचन मिल गया तो कृष्ण ने कहा कि अपना सिर काट कर दे दो। उसने कुछ दुख सा प्रकट किया। कृष्ण कहने लगे, क्या सिर देने से डर लग गया है, यदि साहस नहीं पड़ता तो वचन तोड़ दो। ऋषि ने कहा यह बात नहीं, डर की बात नहीं, मुझे केवल युद्ध का तमाशा देखने की इच्छा थी। अन्त में फैसला हुआ कि सिर को काट कर किसी ऐसे ऊंचे स्थान पर रखा जाय, जहां से युद्ध का सारा दृश्य दिखाई दे सके। उसके पश्चात् सिरको जहां मांगने वालों की इच्छा हो ले जाए।

यदि यह इच्छा ऐसे एक निर्भय ऋषि के हृदय में काम कर सकती थी तो मेरे व मेरे साथियों के मन में यह भाव कोई कायरता अथवा जीवन के साथ कोई अनुचित प्रेम का निशान न था।

जब हम जेलके अन्दर बंद थे, हमारे सामने कई हमारे साथ के मुकदमों के अथवा दूसरे मुकदमों वाले आदमी भी बंद रहे। उनमें कोई तो ऐसे साहसी निकलते थे जो कि मृत्यु से निर्भय गाते हुए फांसी पर चढ़ जाते थे, परन्तु बहुतेरे प्राण निकलने के भय से कांपते थे, दिन रात कुरान पढ़ते थे व पाठ करते थे और प्रार्थना करते थे किसी तरह आने वाली मौत से बच जांय। जीवन का प्रेम एक विचित्र सा भाव है, जिसके वश में होकर मनुष्य अनेक प्रकार के भ्रम में पड़ जाता है। जेल के कर्मचारी इन लोगों की भ्रान्ति से लाभ उठाते हैं। एक मुसलमान कर्मचारी मुझे बताता था कि वह प्रायः सबको यह कहता है कि ग्यारहवीं के पीर की मिन्नत मानने से जान बच जाती है। परिणाम यह होता है कि कइयों को फांसी की सज़ा बदली जाती है और वे इसे पीर की कृपा समझते हैं। और जो मर जाते हैं वे तो पीर के विरुद्ध कुछ कहने नहीं आते। फिर भी यही कहता था कि पीर जान बचा देता है।

क्या मृत्यु भयावनी है?

मुझ से लोग मिलने आते थे, उनमें से कई तो केवल

देखना ही काफी समझते थे, क्योंकि यह भी एक बड़ा संतोष होता है, कि हमने अमुक मनुष्य अन्तिम बार देखा था, परन्तु कई लोग कोई २ प्रश्न भी करते थे।

महाशय खुशाल चंद एडिटर आर्य्य गज़ट जब मुझे मिलने आये तो उन्हों ने मुझे फांसी वाली कोठड़ी में देख कर पूछा कि मौत कितनी भयावनी है? मैंने उनको बतलाया कि यह एक व्यर्थ का भ्रम है कि मृत्यु भयावनी वस्तु है। प्रत्युतः इसके विपरीत यह एक अत्यन्त मनोहर पदार्थ है, और जब यह सर्वथा निकट हो तब तो यह बहुत सुहावनी मालूम होती है, विशेषतः वह मौत जिसके लिये मनुष्य पहले तैयार होगया हो।

फांसी की कोठड़ी में आर्य्य-समाज का जिक्र।

अर्जुनदेव प्रायः मेरी स्त्री के साथ आया करते थे। उनके साथ एक बार महाशय कृष्ण भी आये। उन्हों ने मुझ से "आर्य्य समाज" के विषय में प्रश्न किये। मेरा विचार था कि आर्य्य समाज का मिशन संसार के लिये तो एक है, कि मनुष्य मात्र के लिए असत्य का नाश करके सत्य का प्रकाश करे। परन्तु इससे पहले वह इसके साथ २ उस जाति के अन्दर आत्मिक बल द्वारा जीवन उत्पन्न करे, जिसने अभी तक वैदिक धर्म की रक्षा की है। हिन्दु मुसलमानों की पोलिटिकल एकता का प्रश्न भी तब ही हल होगा, यदि

हिन्दु जाति के अन्दर शक्ति होगी। मरे हुए लोगों से कोई मेल नहीं करता, और अपने अस्तित्त्व का नाश करके मेल बनाना किसी काम नहीं। केवल आर्य्य-समाज ही हिन्दु जाति में जीवन डाल सकता है। किस तरह काम हो? मेरा विचार था कि आर्य्य-समाज का काम एक महान् विधि से हुआ है। अब इसका प्रचार दूर २ तक और विशेष प्रान्तों में गम्भीर रूप से होना चाहिये। किसी विशेष जिले, तहसील व गांवों को सबका सब आर्य्य-समाजी बनाना चाहिए। अमीर अब्दुल रहमान ने काफ़रिस्तान की सुन्दर हिन्दु जाति को मुसलमान बनाने का यह उपाय निकाला, कि सब गांव से विशेष २ मनुष्य काबुल में लेजाकर उनको मुल्लां का काम सिखाया। उन्होंने सबको जाकर मुसलमान बनाया। मुझे कोई मौत से डर था? मैंने कहा, पुराण में एक ऋषि की कथा है, जिस किसी अपराध पर वैकुण्ठ से गिरा दिया गया और मर्त्य लोक में एक सौ जन्म शूकरी के रूप में भोगने का दण्ड हुआ। वह शूकरी बना, उसने कन्दरा बना ली, बच्चे जने, मैला कुचैला खाता और बच्चों में प्रेम से मग्न था। इतने में समय पूरा हो गया। ऊपर से विमान लेने के लिए आए। शूकरी रोने चिल्लाने लगी "मुझे थोड़ी देर और जीता रहने दो, मेरे बच्चे छोटे हैं, यह क्या करेंगे? मेरी कन्दरा का क्या हाल होगा? रोती चिल्लाती को उन्होंने पकड़ लिया। विमान में बैठते ही उसके नेत्रों में सारा दृश्य बदल गया।

बीच में एक पर्दा पड़ा था, पर्दा उठ गया। ऋषि अब क्या कहता होगा? उसकी अवस्था एक क्षण पहले क्या थी? अब क्या हो गई? संसार को मैं पर्दा उठा कर दूसरी दृष्टि से देखता था। बाल्यावस्था में ही मैंने जीवन का फ़ैसला कर लिया था कि इसे समाज की सेवा में लगा दूंगा। मृत्यु के विषय में मेरी सदैव इच्छा यह थी कि रोगी होकर शय्या पर पड़े २ न मरूं। परमात्मा धन्य है, मैं अपनी सुध बुध में आंखें खोले हुए मृत्यु का आनन्द से स्वागत करने पर उद्यत हूं।

(१३)

काला पानी।

कदाचित् १५ नवम्बर थी, जिस दिन सज़ा की तबदीली का हुक्म हुआ। और हमको एक २ करके सत्रह आदमियों को निकाल कर दूसरे अहाते में ले गए। हम में से सात वहीं रह गए जिन में कर्तारसिंह और पिंगल मरहटा ब्राह्मण भी थे। उनमें दो और वीर पुरुष जगतसिंह और हरनामसिंह भी थे। जगतसिंह कैनाडा में किसी बड़े पोलीस अफ़सर की हत्या करके आया था। हरनामसिंह प्रायः सबके सब डाकों में साथी था। परन्तु इतना बुद्धिमान् था कि कोई भी उसके गांव का पता नहीं जानता था। वह अपने गांव में चला गया, और साधारण जाटों के वेष में रहता था। पोलीस ने कई हरनामसिंह पकड़े और छोड़ दिये अन्त में हांग कांग

पोलिस से उसके गांव का पता लगाया गया और वह गिरिफ़तार किया गया।

फांसी के तख़ते पर प्रार्थना।

दूसरे दिन प्रातःकाल उन्हें फांसी दिया जाना था। परन्तु उनका जी बहलाने के लिए उनसे कहा गया कि अपील करदो। कर्तारसिंह ने पहले भी कोई अपील न की थी, अब भी अपील करने से इनकार कर दिया। दूसरे दिन बड़ी भोर उन्हें दो बार बांट कर फांसी घर में लेगए। हमको बताया गया कि फांसी लगते समय पिंगले ने आज्ञा मांगी कि परमेश्वर से प्रार्थना करने की आज्ञा दी जावे। उसकी हथकड़ी खोल दी गई, उसने प्रार्थना की :—

"हे परमात्मन्! तुम हमारे हृदयों को जानते हो। जिस पवित्र कार्य्य के लिए हम जीवन देते हैं, उसकी तुम रक्षा करो, यही हमारी अन्तिम इच्छा है।"

इसके पश्चात् आनन्द से रस्सी गले में डाल कर अन्तिम श्वास लेने के लिए तैयार हो गए। तख़ता पांवों के नीचे से सरक गया। दूसरे क्षण में लाशें लटकने लग गईं।

शहीदों की याद में।

हमको सुना दिया गया, कि तुम्हें आयु भर के लिए काले पानी जाना होगा। हमें दुःख था कि हमारे कुछ साथी क्यों अलहदा हो गए। हम में से जो कवि थे, वे उस समय

जब उनके साथी गर्दनों से लटक रहे थे उनकी स्मृति और स्तुति में ग़ज़लें बनाते रहे ।

जिन लोगों की प्रकृति क्रान्ति शील होती है उन लोगों को प्रायः कविता बनाने का प्रेम होता है । इतिहास में प्रायः देखा जाता है कि क्रान्ति के समय में कविता और फ़िलासफ़ी नए रूप में आकर प्रकट होती हैं । हमारे कई साथी उर्दू और पञ्जाबी के अद्भुत कवि थे । मुझे ग़ज़लों का बहुत शौक़ नहीं और न मैं इस समय उनको याद कर सकता हूं । परन्तु उनमें से एक के कुछ चरण मुझे कई वार याद आते रहते हैं, उसे नमूने के तौर पर यहां दर्ज कर देता हूं ।

यही पाओगे महशर में ज़बां मेरी बयां मेरा ।
मैं बंदा हिंद वालों का हूं है हिन्दोस्तां मेरा ॥
मैं हिन्दी, ठेठ हिन्दी, खून हिन्दी, ज़ात हिन्दी हूं ।
यही मज़हब, यही फ़िर्क़ा, यही है खानदां मेरा ॥
मैं इस उजड़े हुए भारत के खंडहर का इक ज़र्रा हूं ।
यही बस इक पता मेरा यही नामो निशां मेरा ॥
कदम लूं मादरे भारत तेरे मैं बैठते उठते ।
कहां क़िस्मत मेरी ऐसी नसीबा यह कहां मेरा ॥
तेरी खिदमत में अय भारत यह सर जाये यह जां जाये ।
तो मैं समझूंगा यह मरना हयाते जाव्दां मेरा ॥

काले पानी की ओर।

छः सात दिन और गुज़रे। एक दिन हमारा वज़न किया गया। हम लोगों को सन्देह हो गया कि, बस अब कालेपानी की तैयारी है। परन्तु जेल वालों को अपनी प्रत्येक बात को गुप्त रखने की बड़ी चिन्ता रहती है। थोड़ी देर पीछे एक क्लर्क आया, और सब को कहने लगा कि तुम में से कोई चिट्ठी लिखना चाहता है तो अपने घर वालों को मुलाकात के लिए लिखदे, क्योंकि फिर तुम जल्दी चले जाओगे। यह केवल एक धोखा था, जिस से हम यह समझें कि अभी दो चार दिन यहीं हैं। उसी शाम को काले पानी के ख़ास धारी-दार कपड़े कुर्ता और धोती और दो २ कम्बल हमें दिए गए। हमारे पांवों में मज़बूत लोहे की बेड़ियां डाल दी गईं और दो दो आदमियों की इकट्ठी हथकड़ी डाल दी गई, ताकि एक हाथ ख़ाली रह सके।

एक गाड़ी आई, और हमें उसमें सवार कर दिया गया, सब तर्फ़ आगे पीछे पोलीस जाती थी। छावनी के स्टेशन पर एक गाड़ी खड़ी थी, उसके दो ख़ानों में पोलीस के साथ हम को दाख़ल कर दिया गया। गाड़ी ट्रेन के साथ जोड़ी गई। रेल गाड़ी ने रातों रात सारे पञ्जाब को तय कर लिया और हम पञ्जाब की भूमि को जाते हुए अन्तिम बार अच्छी तरह देख भी न सके। हमारे आदमियों की एक विशेषता थी। जेल

से गाते हुए निकले, रास्ते में गाते हुए गये । स्टेशनों पर लोग देखकर हैरान रह जाते थे। दो मिन्ट गाना सुनने के पश्चात् उन्हें खयाल आ जाता था कि यह कौन हैं और कोई न कोई बोल कर बता देता था। पोलीस साधारण यात्रियोंको पास आने न देती थी। लोग थोड़ी देर खड़े हुए झांकते रहते थे। जहां कहीं ट्रेन ठहरती थी, प्रायः यही दृश्य होता था।

कलकत्ता जेल में।

रास्ते के कष्टों को कहिए, दो आदमी इकट्ठे हाथ बंधे हुए। उठकर जायें तो दोनों इकट्ठे, पेशाब के लिए जाना हो तो दोनों जायें। एक खड़ा देखता रहे। टट्टी जाना हो तो भी ऐसा ही। लेटने के लिए तो कोई स्थान ही नहीं था और न आशा हो सकती थी। इस प्रकार तीन दिन रात बीत गए, और हम कलकत्ता स्टेशन पर जा पहुंचे। कलकत्ता जेल या पोलीस को कोई विशेष सूचना न मिली थी। और हमारी निगह बानी का कोई विशेष प्रन्बध न था। विहार के एक स्टेशन से जो पोलीस सिपाही हमारे साथ हुए थे, वही किराए की गाड़ियां बुला कर हमें उनमें बैठा प्रेज़िडैन्सी जेल को चल दिए। पहुंचते२ कोई आधी रात हो गई। जेल वालों ने साधारणतया गिनकर हमें अन्दर दाखल कर लिया और शेष काला पानी जाने वाले क़ैदियों की बार्क में हमें रख दिया। बेड़ियां पांवों में, हथकड़ियां हाथों में, सिर पर कम्बल कपड़े

और चटाई, एक बिस्तरे का बोझ उठाए हाथ में दो लोहे के प्याले लिए हम बार्क में दाखल हुए और अपना बिस्तरा बिछा कर सो गए ।

मनुष्य है, जो कुछ सिर पर आता है, सह गुज़रता है । हाथ पांव बन्धे हुए भी उठाना पड़ता है । उस समय प्रतीत होता था कि हमारे नए प्राप्त किए हुए जीवन का वास्तविक कष्ट अब आरम्भ हुआ है । मैं तो समझता था कि स्वर्ग की ओर जाते हुए सीढ़ी से पकड़ कर हमें गिरा लिया गया है, और हम नर्क द्वार में प्रवेश करने के लिए खड़े थे ।

हमारे वे साथी जिनको हमारे साथ काले पानी का हुक्म हुआ था, उसी दिन सायङ्काल लाहौर जेल से निकाल कर पञ्जाब के भिन्न २ जेलों में भेज दिए गए थे । उनमें से केवल तीन और छः मियांमीर रसाले के कोर्ट मार्शल फ़ैसले के आदमी हमसे पहले जहाज़ में कलकत्ते से रवाना हो चुके थे, शेष सब अभी तक अपने २ जेलों में पड़े थे । यहां आकर हमें मालूम हुआ कि कलकत्ते से जहाज़ हर साल नौ बार काले पानी को क़ैदी लेकर जाता है। पाञ्च सप्ताह तक उत्तरीय भारत के जेलों से काले पानी जाने वाले क़ैदी एकट्ठे होते रहते हैं । वही जहाज़ जिसका नाम महाराज है बारी २ मद्रास और रंगून जाता है, हमको कलकत्ता जेल में पन्द्रह दिन प्रतीक्षा करनी थी । दूसरे दिन जब सुपरिन्टेन्डेन्ट आया, उसने हमको देखा और मुक़द्दमे का हाल सुनते ही हुक्म

दिया कि हम को शेष कैदियों से पृथक करके तुरन्त ही एकान्त कोठड़ी में दिन रात बन्द रखा जाय।। और वहां पर खास गोरे वार्डर नियत करके हमारी देख भाल का विशेष प्रबन्ध कर दिया।

महाराजा जहाज पर।

जहाज़ आ गया। छः दिन वहां ठहरा। सायङ्काल सब जाने वाले कैदी एक सौ से कुछ ऊपर जिन में तीन चार स्त्रियां भी थीं, जेल से निकाले गए और दो तीन मील पैदल चलकर जहाज़ में दाखल हुए। सब को जहाज़ के नीचे तीसरी तय में डाल दिया गया हमारे लिए वहां भी विशेष स्थान था। यद्यपि दूसरे कैदी ऊपर जा सकते थे, परन्तु ऊपर जाने की मनाही थी।

वहां से एन्डेमान तीन दिन रात का रास्ता है। मार्ग में हम को तीनों दिन चिड़वे, भूने चने और कुछ चीनी सी खाने को मिलती थी; हम को एक सुख था। हम सब एकट्ठे एक ठौर थे। दिन रात गीत गाने और बातों में कट जाता था। मनुष्य सर्वथा एक सामाजिक जीव है। यदि इसके साथ सोसाइटी हो तो चाहे कैसी भी विपत्ति क्यों न हो, भूल जाता है। बड़े से बड़े कष्ट के समय में भी अपने साथी भाइयों से मिल कर उसे आनन्द प्राप्त होता है। जेल के अन्दर सब से बड़ा दण्ड एकान्त में रखना है, ताकि उसके साथ कोई और न मिल सके। पोलीस भी मनुष्य के इस दोष से

लाभ उठाती है । जिन लोगों को ऐसे काम करने हों, जिन में ख़तरा हो, उनके लिए आवश्यक है कि पहले कुछ समय एकान्त में रहकर एक प्रकार का तप करें । धार्मिक काम करने वालों के लिए यह अत्यावश्यक है कि पहले कुछ वर्ष एकान्त में गुज़ारें, इससे शरीर और आत्मा में विशेष बल उत्पन्न होता है ।

चौथे दिन सवेरे जहाज़ के छिद्रों में देखने से मालूम होता था कि अब हम एन्डेमान के जंगलों के पास से गुज़र रहे हैं । थोड़ी देर में हम निकट जा पहुंचे और सितह पर आकर हमने समुद्र से देखा, कि किनारे पर एक पहाड़ी है । इस पहाड़ी पर एक बड़ा किलासा बना है । पोलीस वालों ने बताया कि यही सिलवर जेल है, जहां हमको जाना पड़ेगा।

एन्डेमान की भूमि पर ।

हमारा जहाज़ ठहरा रहा । डाक्टर आया और देख कर चला गया । ख़ास पोलीस आई । हम लोगों को सबसे पहले उतारा गया, और लाइन बना कर ऊपर चले । वह बिस्तरे हमारे सिर पर प्याले हाथों में, पहाड़ी के ऊपर हम चढ़ते जाते थे । क़ैदी लोग और दूसरे लोग हम को देखते थे । आपस में कानों कान बातें करते थे । हमारे साथ कोई बात नहीं कर सकता था । चोटी पर पहुंचते ही जेल का फाटक आ गया । पोलीस ने हमको फाटक के अन्दर दाखल

किया। एक मोटा सा गोरा बड़ा लम्बा और कमीज़ पहने हुए बाहर निकला। सबको इसके चार्ज में दे दिया और पोलीस विदा हुई। हम जेल में दाखल हुए और उस मोटे आयरिश गोरे के बस में पड़े।

एन्डेमान कैसे लोग रहते हैं?

एन्डेमान में कोई पचास के लगभग छोटे बड़े द्वीप हैं! पोर्ट ब्लेयर का सबसे बड़ा द्वीप है। सब में बड़े २ घने जंगल हैं। इन जंगलों में "एन्डेमानीज़ो" जंगली लोग रहते हैं जो कि बिलकुल नङ्गे रहते हैं। साइन्स दानों का ख़याल है कि जावा और एन्डेमान के जंगली लोग मनुष्य की सबसे पहली सन्तति हैं जो कि संसार में उत्पन्न हुई। चाहे पहली थी या नहीं, इतना अवश्य है कि मनुष्य और पशु के मध्य की एक पीढ़ीसी है। ज्यों २ जंगल काटे जाते हैं, यह लोग आगे २ भाग जाते हैं। पहले पहल उन्होंने अङ्गरेज़ों को नए आने वाले देखकर उनको अपना शत्रु समझा। और जहां कोई अङ्गरेज़ व देसी देखते थे, बाण से मार देते थे। उनको बाण चलाने में आश्चर्य जनक अभ्यास है। इनका लक्ष्य कभी चूकता नहीं। बच्चे स्त्रियां भी बाण चलाना जानते हैं। भाले से मछली को पकड़ लेते हैं। बाण से सूअर आदि को मार कर खाते रहते हैं। समुद्र में आंखें खोल कर तैर सकते हैं। कोई वस्तु समुद्र में फेंको, दुबकी तक, जाते जाते निकाल

लेते हैं। यह लोग देसी बस्तियों के निकट कदाचित् ही आते हैं।

उनके अतिरिक्त पोर्ट ब्लेयर में भी लोग पाए जाते हैं; जो कि क़ैदियों की सन्तति हैं, अठारहवीं शताब्दि के अन्त में इस द्वीप का पता हुआ। यहां का जल वायु ऐसा बुरा था कि मनुष्य का जीवित रहना असम्भव सा था।

यह द्वीप अत्यन्त गर्म है। परन्तु समुद्र के अन्दर होने से और लगातार सात आठ मास वर्षा होते रहने से रहने के योग्य है, हर साल जङ्गल के वृक्ष कटवाने से वृष्टि बराबर कम होती जाती है। उष्ण जल वायु के रोग नमोनिया, मलेरिया, राज यक्ष्मा और अन्य ज्वर बहुत हैं।

पहले पहल कुछ क़ैदी वहां ले जाए गए, सबके सब मर गए, परन्तु ग़दर के पश्चात् बहुत से क़ैदी फिर वहां रखे गए। कुछ मर गए, कुछ बच रहे। इस समय भी हज़ार पीछे ३५ प्रति वर्ष मर जाते हैं। देश के जेलों में हज़ार पीछे केवल १८ हैं, और वहां तो बड़े मज़बूत और चालीस वर्ष से कम आयु के छांट कर भेजे जाते हैं।

जङ्गल काट कर बस्ती बनाई गई। उस समय से उसे क़ैदियों की बस्ती बना दिया गया। क़ैदी लोगों को पहले कुछ महीना देकर खुला छोड़ दिया जाता था। थोड़े समय पश्चात् वे विवाह भी कर लिया करते थे। उन लोगों की सन्तान आठ दस हज़ार की आबादी में वहां पाई जाती है। शनैः २

उनसे सरकारी काम लेना शुरू किया गया। और फिर वहां पर उनको जुर्म करने पर सज़ा देने के लिए जेल बनाया गया। कोई २५ वर्ष से एक विशेष जेल बनाया गया जिसे सिल्वर जेल कहा जाता है। यह तीन मंज़िल का पक्का मकान है। बीच में गोलाई है। गोलाई के गिर्द सात अहाते हैं। उनमें प्रत्येक के अन्दर एकान्त कोठड़ियों की लाइन है, जिन में हर एक लाइन के अन्दर चालीस पचास के लगभग सैल हैं।

पहले जाने वाले क़ैदियों को छः मास अथवा वर्ष भर यहां रखा जाता है। फिर बाहर भिन्न २ द्वीपों में भेज दिया जाता है, जहां कि वे सरकारी काम करते हैं, और रात के आठ बजे बारकों में उपस्थित हो जाते हैं। कुछ वर्ष पश्चात् उन्हें स्वतन्त्रता का टिकट भी मिल सकता है, यदि वे नेक चलना से रहे, यद्यपि ऐसा रहना बहुत ही कठिन है। जब बाहर फिर कोई लड़ाई झगड़ा चोरी अधिक जुर्म करते हैं तो नियम पूर्वक अदालत में मुकदमा होकर उन्हें विशेष नियम के अनुसार जेल का दण्ड दिया जाता है।

जेल का परमेश्वर।

इस तरह का जेल था, जिसमें आ जीवन रखा जाना था। इसका इञ्चार्ज वह मोटासा गोरा था जो कि इस जेल के बनने से ही उसके चार्ज में रहा था। इसका नाम "बारी" साहिब था। यह आदमी नमूने का जेलर था। उसने अपनी

अधिकांश आयु भारतवर्ष के सब से बड़े बदमाश क़ैदियों के साथ बिताई थी। उसे उनकी बदमाशियों का इतना अधिक अनुभव हो गया था कि उसके मस्तिष्क में किसी मानवीय गुण का स्थान ही न रहा था। वह सिवा क़ैदियों के किसी और मनुष्य देसी व अङ्गरेज़ से नहीं मिलता जुलता था। न वह किसी के पास जाना पसन्द करता था, न कोई मनुष्य उसकी सोसायटी पसन्द करता था। खास क़ैदी 'पेटी अफ़-सर' टंडेल और जमादार उसकी इतनी खुशामद करते थे कि वह अपने आपको फ़रऊन समझता था। और कह दिया करता था कि इस जेल में परमेश्वर हूं। २५ वर्ष से अधिक दिन रात क़ैदियों में रहकर उसके भाव सर्वथा उन जैसे हो गए थे। दिन भर उनके साथ बातें करता, बेहूदा मख़ौल करता और एक दूसरे के विरुद्ध बातें सुनता था। वह चतु-राई इसी में समझता था कि हर वक्त एक दूसरे को एक दूसरे के विरुद्ध मुख़बरी में लगाए रखे। शरारत में उसे स्वाद आता था। वह चाहता था कि सब को किसी न किसी तरह की शरारत में लगाए रखे अन्यथा उसका जीवन कड़वा हो जाता था। कदाचित् वह यह समझता था कि वहां के क़ैदी भूत की तरह हैं, यदि वे किसी न किसी शरारत में न लगे रहेंगे तो उसे खाने के लिए दौड़ेंगे। हमारे दल के अन्दर दाख़िल होने से कुछ तो वह घबरा गया, कुछ उसका विचार ही शरारत का था, तुरन्त ही उसने वार्डर और पेटी अफ़सर

हमारे पीछे मुखबरी में लगा दिए, कि हम क्या करते हैं? हमारे दाखल होने पर जेल में एक नई प्रकार की हलचल और मुखबरी शुरू हो गई।

इस जेल में भी अच्छे मनुष्यों का बीजनाश न था। ऐसे एक दो भले पुरुष भी थे, जिन्होंने हमें वहां की अवस्था से परिचित कर देना आवश्यक समझा। फाटक पर "बारी" साहिब का लैक्चर सुनने के पश्चात् हमने जेल में पांव रखा, कि एक दो क़ैदियों ने जो वहां पर मुन्शी का काम करते थे, पूछा, कि भाई परमानन्द कौन हैं?

(१४)

जेल का जीवन ।

बारी साहिब का एक पठान जमादार जो जेल के क़ैदियों पर क़ैदी अफ़सरों में बड़ा अफ़सर था, जिसे १५ रुपया महीना मिलता था। हमको लेगया और गोलाई में लेजाकर दो २ तीन २ को भिन्न अहातों में बांट दिया। दोपहर का समय हो गया। प्रायः सब क़ैदी अपना काम पूरा कर चुके थे। बहुतेरों के हाथ में छोटे २ मुञ्ज के खूबसूरत बण्डल बांधे हुए थे, जो कि उन्होंने नारियल के फल के ऊपर के छिलके को कूट २ कर निकाली थी। कई जो कि बहुत ही दुर्बल और मरियल थे, हाथ में रस्सी का बण्डल पकड़े हुए थे जो कि उन्होंने अपने हाथ से बटी थी। कुछ और थे जिन्होंने तेल

की बाल्टियां भर कर लेजाने के लिए तैयार रखी थीं, इन लोगों ने कोल्हू चला कर तेल निकाला था।

क़ैदियों के अफ़सरों की ज़बान।

प्रत्येक अहाते में एक क़ैदी क़ैदियों का अफ़सर काले स्याह कपड़े और लाल काला कुर्ता पहने हुए खड़ा था। वह उस अहाते का चौधरी था। उसे "टण्डील" कहते थे। उस की सहायता में दो और क़ैदी काली वर्दी पहने क़ैदियों पर हुकूमत करते और सब को धमकाते थे "हे, इधर आओ, यहां लाइन में बैठो, अपनी मुशक्कत दिखाओ, कहीं गीला छिलका तो नहीं बांध लिया है? इस बण्डल को खोल दो, उधर धूप में रखो, फैला दो" फिर क्या करते हो ? एक को जाकर दो थप्पड़ लगा दिये, वह आगे से कुछ बोला, उनके हाथ में डण्डा था, झट डण्डे पर हाथ चला जाता था। गालियों का तो कोई हिसाब ही नहीं। हम नए २ दाखल हुए थे। टण्डील हमारे सामने जान बूझ कर पैंठ कर चलता था और हम पर अपना रोब जमाने के लिए यूंहीं दूसरों को धमका देता था। इसका अभिप्राय यह था कि हम आते ही देख लें कि किस तरह बाक़ी के कैदी उसकी अधीनता में भेड़ों की तरह उसका हुक्म मानते थे। और यद्यपि उसकी ज़ाहरी जल्लादों की सूरत बड़ी ही बेढब थी, परन्तु सच तो यह है कि जेल के अन्दर और एक महीने के लिए इस अहाते के

अन्दर वह जेल के परमेश्वर बारी साहिब के नीचे बड़ा शासक था। एक २ महीने के पश्चात् इन टण्डेलों की दूसरे अहाते व नम्बर में बदली हो जाती थी।

हमारे दाखल होते ही उसने सब कैदियों को हुक्म सुनायाः-" देखो, सब सुन लो, यह नये बम्ब केस वाले आये हैं। किसी को इनके साथ बात न करनी होगी। जो कोई इनसे बोलता हुआ देखा जायगा, उसे पेशी में जाना होगा॥

छोटी छोटी सी बात पर कैदी को धमकी मिलती थी, 'चलो सामने चलो' इसके अर्थ "बारी साहब" के सामने पेश करने के थे। यदि बारी धमकी और गाली देकर क्षमा करदे, तो अच्छा, अन्यथा वह टिकट पर पेशी लिख देता था और उस कैदी को सुपरिन्टेन्डैन्ट की अदालत में अपराधी के रूप में पेश होना था. यदि सुपरिन्टेन्डैन्ट कोई सज़ा दे दे, तो वह कैदी का अपराध समझा जाकर उसकी बदचलनी का एक प्रमाण गिना जाता है।

हमारा नया लिबास और काम।

हमारे पिछले कपड़े ले लिये गये और नई जेलकी वर्दी, एक टोपी. घुटनों तक एक जांघिया और छोटा सा बिना बाजुओं के कुर्ता दे दिया गया। एक और बहुत छोटा जांघिया जिसको पहनकर मुशक्कत करना था। हर एक अहाते में एक लंबी सी हौदी बनी थी, जिसमें समुद्र का

पानी नल के रास्ते डाला जाता था। दिन भर मुशक्कत करने के पश्चात् इसमें स्नान करके अथवा मुंह हाथ धोकर कपड़े पहन लिये जाते थे। हमने जाकर उसमें स्नान किया। इतने में मुशक्कत देने का समय आगया। सब कैदी लाइन में बैठा दिये गये। एक गोरा एसिस्टन्ट जेलर गोलाई में आया। उसकी कुर्सी के सामने मेज़ था। मेज़ पर तोलने वाला कांटा था। उसपर छिलका व रस्सी का बंडल रख दिया जाता था और पूरा उतरने पर फैंक दिया जाता था। कम होने पर अथवा गीला होने पर या उसमें अच्छी सफ़ाई न होने पर वह टंडील को धमकी देता था। "क्या देखता है? सरकार का निमक हराम करता है? इत्यादि वापस आये, कुछ मिंट बीते, सांझ का खाना खाया। भंडारी एक सिर पर चावलों का लोहे का संदूक उठाए, एक के हाथ में दाल की बाल्टी, एक के हाथ में तरकारी, साथ जमादार और एक आध और कर्मचारी अहाते के दरवाज़े पर आ मौजूद हुए। पेटी अफसर व टंडील ने पुकारना शुरु किया। बर्तन हाथ में ले लो, एक लाइन में बैठ जाओ। चावल का डब्बु डाला, दाल की कड़छी पड़ी, थोड़ी सी तरकारी और दो छोटे फुलके मिल गये। चार पांच मिन्ट के अन्दर सौ डेढ़ सौ कैदी को खाना बांटकर भंडारी दूसरे अहाते में चला गया। पंद्रह मिन्ट बीते। खाना होगया, उठ जाओ, प्लेट साफ़ करो एक लाइन में रखदो, और अपनी २ लाइन में बैठ जाओ,

साढ़े चार बजे । सब दो २ की जोड़ी में तीन २ पंक्तियों में टंडील पेटी अफसर फाटकों पर खड़े हैं । चुपचाप किसी के आने का राह देख रहे हैं । इतने में जमादार आया "साहब आता है" कह कर अगले नंबर को चल दिया । टंडील बोला, सब चुप होजाओ । ज़रा सी कोई आवाज़ निकालता है, टंडील व पेटी असफर कहता है, इसकी ज़बान बहुत चलती है, चुप नहीं हो सकता ?

साहिब गोलाई के अन्दर फिरता हुआ दो मिन्ट में सब अहातों के फाटकों के सामने से गुज़र जाता है । अभी वह फाटक के सामने नहीं आया, जमादार हाथ खड़ा करके माथे पर लगा देता है और ज़ोर से बोलता है "सरकार" एक सैकन्ड में सब कतारों में क़ैदी खड़े होगये । जेलर मुंह में सिगार लिये हुए पेट को शरीर से आगे बढ़ाये हुए एक दृष्टि में सब को देख लेता है । यदि कोई सीधा खड़ा नहीं हुआ, उसकी तर्फ़ इशारा कर देता है, टंडील पेटी अफसर उसके पीछे पड़ जाते हैं ।

गोलाई की दूसरी मंज़िल पर एक घंटा लटकता है । पहली घंटी बजती है, प्रत्येक क़ैदी फिर खड़ा होकर टोपी और कुर्ता भूमि पर डाल देता है, और जांघिया जिस में नाला नहीं हाथ में पकड़ कर खड़ा रहता है । सायङ्काल हुआ, जेलके क़ैदी वार्डर दिन भर क़ैदियों की मुशक्कत की निगहबानी करते हुए शामके वक्त हर एक अहाते में बारह २

की संख्या में आ जाते हैं । इनमें से चार २ रात के तीन २ घंटे एक २ लाइन में फिरते और पहरा देते हैं, और कोठड़ियों के अन्दर पड़े हुए कैदियों को देखते रहते हैं कि इनमें से कोई जंगला तो नहीं काटता अथवा फांसी तो नहीं ले लेता । यह वार्डर जो कि पेटी अफसरों से नीचे होते हैं, इनका चिन्ह लाल पगड़ी होती है । अच्छे चलन के कैदी पांच वर्ष की अवधि के अंदर केवल वार्डर बनाये जा सकते हैं । उनको मुशक्कत करने के स्थान में मुशक्कत लेने का काम करना पड़ता है । पांच वर्ष बीतने पर उनसे पेटी अफसर और दो तीन वर्ष पश्चात् पेटी अफसरों से टंडैल बनाये जाते हैं । इस प्रकार कैदियों का सब प्रबन्ध उनके अपने साथियों द्वारा चलाया जाता है । यह सब कैदी चाहे घर बार से निर्वासित होकर अपना २ दण्ड भुगतने के लिये वहां आते हैं, परन्तु थोड़ा सा सुख मिलने से और दूसरे कैदियों पर थोड़ा सा अधिकार प्राप्त कर लेने पर जेल गवर्नमिन्ट के इतने वफादार और शुभचिन्तक बन जाते हैं कि बाकी सारे कैदी उनकी दृष्टि में शत्रु बन जाते हैं । कैदियों की प्रत्येक बात अफसरों के कानों तक पहुंचाते हैं, और यहां तक कि उनके इशारे से उनको प्रसन्न करने के लिये दूसरे कैदी को पीटना तो एक ओर रहा उनके प्राण लेने को तय्यार हो जाते हैं । चाहे तनिक से अपराध अथवा भूल करने पर फिर वह मुशक्कती कैदी की अवस्था में आ जाते हैं । इस प्रकार जेल की

गवर्नमिन्ट इन्हीं कैदियों द्वारा इनको प्रबन्ध में रखती है ।

वे वार्डर अपने २ पहरे वाली लाइन के कैदियों की तलाशी लेते हैं । इतने में दूसरी घंटी बजती है और कैदी थोड़े २ करके अपनी कतार में जाकर कोठियों में दाखल होते हैं । इस समय पेटी अफसर चाबियों का गुच्छा लटकाये आजाता है, और तालाबंद हो जाता है । एक कम्बल नीचे बिछा लिया, अथवा तखते पर लेट रहे यदि कोई वहां हुआ तो कोठी की चार दीवारी के अन्दर फिरो या लेटो, जो चाहो करो, शोर करना अथवा बातें करना अपराध है, जिससे पहरे वाला रोकता है । कोई सो जाता है, कोई गाना गाता है, कोई धीरे २ साथ की कोठड़ी वाले से बातें करता है, जब वार्डर इधर उधर हो जाता है ।

मेरे लिये आनन्द का समय ।

रात के बारह तेरह घंटे अकेले अंधेरे में व्यतीत करने पड़ते हैं मुझे यह समय जेल के जीवन में अत्युत्तम और आनन्द दायक प्रतीत होता था, यद्यपि साधारण लोग इसे बहुत घबराने वाला कहते थे । एक तो मुझे सो जाने का सुख प्राप्त था, और जितना चाहता था, उतना सो लेता था ।

मुझे दूसरे लोगों की बातों अथवा उनके विचारों को सुनने में कुछ भी रस न आता था । उनकी सोसायटी से अलग रहना ही परम आनन्द की बात थी । इसके अतिरिक्त

अतिरिक्त अकेले बैठकर ध्यान करने और अपनी आत्मिक उन्नति करने का बहुत ही अच्छा अवसर था । जबकि हृदय की अवस्था ऐसी थी कि वह अपने आपको संसार की वासनाओं के जाल से सर्वथा मुक्त पाता था । भगवत् गीता केवल एक पुस्तक मेरे पास थी । केवल एक ही पुस्तक को मैं पढ़ता था और जब उसके कुछ अध्याय कण्ठस्थ हो गये, उसको भी खोलना और पढ़ना बंद कर दिया । एक श्लोक जो मुझे बार २ याद आता था, वह यह था, जिसमें कृष्ण ने कहा है "जो सब प्राणियों के लिये रात्रि है, उसमें योगी जागता है, और जब प्राणी जागते हैं, वह उसे रात्रि देखता है" जिसे साधारण लोग सब से बुरी और बड़ी कैद समझते थे, कि उसमें अंधेरे में अकेले बंद रहना पड़ता था, मैंने उसे सचमुच माया के जाल से मुक्त होने का अवसर समझा । न कोई कामना दिखाई देती थी, न कोई आशा यह दो ही ज़ंजीरें आत्मा को संसार से बांधती थीं । मुझे देखने का अवसर था कि उनमें से कौन सी ज़ंजीर शेष है, और उसे किस तरह तोड़ा जा सकता है । जब सहस्रों ज़ंजीरें हों तो किस २ को मनुष्य तोड़े । थोड़ी सी रह जाने पर उनको तोड़ने का यत्न हो सकता है । इस प्रकार यह कैद मेरे लिये मुक्ति का कारण एक बार तो बन गई । संसार में प्रवेश करने पर कई मास पर्य्यन्त मैं इस संसार और अपने जीवन को एक स्वप्न सा समझता रहा, परन्तु संसार

की माया बड़ी प्रबल है । धीरे २ फिर अनुभव होने लगा, कि किस प्रकार वही विरक्त मन उनके अंदर फंसना आरम्भ होगया है । मैं जेल की शक्ति को धन्य समझता हूं जिसने एक बार फिर इस अवस्था को अनुभव करा दिया ।

हमारा दैनिक कार्य्य क्रम ।

दिन निकलने से कुछ पहले जगाने की घंटी बजती थी । मैं उस समय उठ कर गमले के अन्दर शौच होकर व्यायाम करना आरम्भ कर देता था । एक ही छोटे से गमले में पहले पेशाब करना और फिर पाखाना करना कुछ चिर अभ्यास करने पर ही हो सकता है, और फिर कोठी भी खराब न हो, क्योंकि इसी में रहना है । प्रत्येक अहाते के अंदर टट्टियां भी लगी थीं, परन्तु सवेरे थोड़ा व्यायाम करने के योग्य होने के लिये यह आवश्यक था कि अन्दर को पहले साफ़ कर लिया जावे ।

फिर टंडील अफसर आगये और दो चार मिंट के अन्दर अपनी २ लाइन के ताले खोल दिये । सब कैदी निकल कर लाइन में दो दो करके बैठ गये । प्रत्येक लाइन की गिनती होकर जेलर को रिपोर्ट दी गई कि सब पूरा है । दूसरा घंटा बजने पर नीचे उतरना शुरू हुआ । नीचे फिर लाइन बैठा कर गिनती हुई और टट्टी जाने तथा हाथ मुंह धोने के आज्ञा मिली । कुछ मिंट ही बीते पुकार पड़ी "लाइन

में बैठो, गंजी आई, गंजी आई" गंजी बहुत पतले उबाले हुए चावल को कहते हैं। उसका एक एक डब्बु सबको मिल गया और उन्हों ने उसको तत्काल पी लिया। "अपनी अपनी मुशक्कत के लिये तय्यार हो जाओ" कुर्ता जांघिया उतार कर छोटा जांघिया पहन लिया और हमें भी छिलका पीटने की मुशक्कत पर लगा दिया गया। अहाते में एक जगह लकड़ी के बालों का ढेर लगा था "एक २ लकड़ी उठा लो" सब ने अपनी २ लकड़ी उठा ली, जो बाकी पड़ी रही, हम लोगों ने भी कंधे पर उठालीं। वह लेकर बाकी लोग कोठड़ियों के सामने बरांडे के अन्दर लकड़ी आगे रख कर बैठ गये। हमें लकड़ी लेकर कोठड़ी के अन्दर जाना पड़ा, नये आने वालों को कुछ दिन कोठड़ी के अन्दर काम करना पड़ता है। हमें छः मास तक अन्दर काम करना पड़ा। इतने में मोटी मोटी मुङ्गलियों का एक ढेर लाया गया। इस में से सबने एक एक मुंगली ले ली। हमको भी एक २ दी गई। और फिर हमने छिलका उठाकर अपनी कोठड़ी में रखा। एक एक टुकड़ा लकड़ी पर रख कर ऊपर से लकड़ी से पीटना शुरू हुआ, इसे कुछ मिन्ट पीटने से इस में से रेशे सरीखे निकल आते हैं। उनको निकाल कर एकट्ठा करते गये। इन रेशों का दो पौण्ड अर्थात् सेर भर मुञ्ज हर एक को निकालना पड़ता है। मज़बूत बाज़ुओं वाले और जानकार लोग तीन चार घंटे मुंगली मारने से इतनी मिकदार निकाल

लेते हैं। नये आदमी व दुर्बल अथवा जिन्हें काम करने का अभ्यास नहीं है वे दुगने समय में भी काम पूरा नहीं कर सकते। ऐन्डेमान में नारियल से बड़ा काम लिया जाता है। जङ्गल काटने के अतिरिक्त जिसकी लकड़ी बाहर भेजी जाती है, कैदियों के लिये बड़ी मेहनत प्राप्त कराता है। बाहर के कैदी नारियल के पौदे लगाते हैं, उनसे नारियल तोड़ते हैं। साल भर इसका फल होता रहता है। गाड़ियों में लाद खेंचकर जेल में लाते हैं। जेल में इस का ऊपर का छिलका फाड़ा जाता है। नारियल का सुखाकर कोल्हू में पीस कर तेल निकाला जाता है। एक कैदी पन्द्रह सेर तेल रोज़ निकालता था। अन्दर के सख्त छिलके से हुक्के आदि बनाये जाते हैं। ऊपर के नरम छिलके को कूट कर रेशे निकाले जाते हैं जिन से छोटी और बड़ी २ रस्सियां बनाई जाती हैं, जो कि जहाज़ों के काम आती हैं, क्योंकि वे पानी में रहने से गलने के स्थान में उल्टी मज़बूत हो जाती हैं।

दस बजे एक घंटा खाने के लिये बाहर जाना होता है, और सायंकाल के समान खाना लाकर बांटा जाता है। खाना खाकर फिर अन्दर आ अपने २ स्थान पर बैठ कर काम में लग जाना पड़ता है। हर वक्त वार्डर, पेटी अफ़सर, टंडील ऊपर फिरते रहते हैं। क्या मजाल कि कोई बैठ जाये व बात चीत करे। जेलर व असिस्टैन्ट जेलर भी दौरा लगा

कर काम को देखता है। जब कोई कैदी काम पूरा कर लेता है और पेटी अफसर को तसल्ली हो जाती है कि उसकी मुशक्कत पर एतराज़ न होगा तो उसे अपनी पुस्तक पढ़ने व विश्राम करने की अनुमति भी हो जाती है। इतने में मुशक्कत का समय आजाता है। यह जीवन है, जिस में कि जेल में दिन अठवारा महीना वर्ष और आयु व्यतीत करनी पड़ती है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं, परिवर्तन के अन्दर जीवन का आनन्द है, जो कि जेल में प्राप्त नहीं हो सकता, फ़िर भी जीवन का मोह मनुष्य को जीता रखता है, और मनुष्य इस प्रसन्नता से बिताना सीख लेता है। दूसरे दिन मेरा काम समाप्त हुआ एक भारतीय कैदी मेरे पास आया और कहने लगा "क्यों साहब आप कहां से तशरीफ लाये हैं?" मैं इस प्रश्न पर हैरान सा हुआ और कहा, कि मैं तशरीफ तो नहीं लाया, मुझे तो जबर्दस्ती बेड़ी हथकड़ी डालकर ले आए हैं।

(१५) पोलीटीकल कैदी।

पुराने देसी जेलों में सज़ा के लिये इतना ही आवश्यक है कि कैदी को अन्दर बंद करके स्वतंत्रता छीन ली जावे। अङ्गरेज़ी सरकार के जेलों में इस से बढ़कर एक और बात आवश्यक है, कि प्रत्येक कैदी कुछ न कुछ काम करे। जेल का सुपरिन्टैन्डैन्ट जो कि मैडीकल आदमी होता है, प्रत्येक

कैदी के शरीर और अपराध को देखकर उसके लिये काम नियत करता है।

जेल में कैदी के लिये अपना दुःख प्रगट करने अथवा प्रोटैस्ट करने के दो बड़े उपाय हैं, एक तो यह कि काम करने से इन्कार और दूसरा खाना छोड़ देना। काम से इन्कार जेल में सब से बड़ा जुर्म समझा जाता है और जब कई आदमी मिल कर काम करने से इन्कार करदे तो वह स्ट्राइक हो जाता है।

हमारे दल के जेल में पहुंचने से पहिले कई वर्ष से पोलीटिकल कैदी वहां विद्यमान थे। बंगाल का माणिक टोला षड् यंत्र के कैदी वहां थे। महाराष्ट्र के सावरकर भाई भी वहां थे, पंजाब और यू० पी० के स्वराज्य अखबार के ऐडिटर जो कि एक की सज़ा के बाद दूसरा वहां जाता रहा, कई वहां रह चुके थे। परन्तु हमारे जाने से पहिले भारतवर्ष की जेलों में वापस कर दिये गये थे। यद्यपि किसी समय उनकी संख्या तीस चालीस के लगभग हो चुकी थी, परन्तु इस समय पुराने कैदियों की संख्या कोई दस के लगभग ही थी। हमारे वहां पहुंचते ही कैदियों ने हमें उनके किस्से बता दिये कि किन २ उपायों से नंद गोपाल, लधाराम और राम हरि आदिक जेलर और सुपरिन्टैन्डैन्ट के साथ अपने और दूसरे कैदियों के स्वतत्वों के लिये लड़ते रहे। किस तरह उन्हों ने जेलके सब प्रकार के दण्ड और कष्ट

अपने ऊपर उठाए और दूसरे कैदियों के ऊपर अनुचित हुक्म व अत्याचार को रोकने का प्रयत्न किया, किस तरह उनमें से सावरकर और दूसरे पोलीटिकल कैदियों को कोल्हू पर लगा दिया गया और वे काम करते रहे।

किस तरह महात्मा नन्दगोपाल पहला व्यक्ति था जिस ने काम से इन्कार करने का उपाय निकाला और इन लोगों ने इकट्ठे होकर स्ट्राइक कर दिया, किस तरह एक बंगाली लड़का "ननी गोपाल" "तीन मास पर्य्यन्त" "हंगर स्ट्राइक" पर रहा। उसने न खाना खाया और न कपड़ा पहना। कोठी के अंदर नङ्गा भूमि पर पड़ा रहता था। उसके दुर्बल शरीर में केवल हड्डियां ही रह गईं। यह सब बातें और दूसरी छोटी २ कहानियां वहां के कैदियों को जेल के इतिहास अथवा दन्त कथा के रूप में याद थीं। और हमारे साथ बोलने की मनाही होने पर भी एक दो दिन के अन्दर ही हमें सब बातोंका पता लग गया। जेल में हुक्मों की इतनी भरमार रहती है कि प्रति दिन कई पिछले रद्द किये जाते हैं और नये जारी होते हैं। कैदी लोग केवल वही हुक्म मानते हैं जो कि ज़ोर से उन से मनवाये जाते हैं।

हमारे आने पर जेलर ने पेटी अफ़सरों और टंडीलों को हुक्म दिया कि वे हमारी खास निगरानी करें। हमको न आपस में और न दूसरों के साथ बात करने का अवसर दिया जाय, खाने की परेड में हमको एक दूसरे के बहुत

फासले पर बठाया जावे। हमारी कोठियां एक दूसरे से दूर २ फासले पर हों, और हमारे पीछे खास आदमी लगाकर हमारी बातों को मालूम करने का खयाल रखें और सूचना देते रहें। जेलर ने हमें बताया कि जब इस जेल में किसी की शिकायत होती है तो यहां का नियम यह होता है कि उसे कसूर वार समझा जाता है, जब तक कि वह अपने आपको बे कसूर साबत न करे। इस अवस्था में हमारी शिकायतें पहुंचना कोई आश्चर्य्य की बात न थी, पहले दिन हमने काम किया, एक तरह से यह पहला दिन था जब कि मैंने बाहर अथवा जेल के अन्दर हाथ से इतना सख्त मेहनत का काम किया था, वह काम हम से पूरा कहां हो सकता था, हममें से कइयों का काम थोड़ा था, तीन चार का तो तीसरे हिस्से से भी थोड़ा था; हम सबको उसी दिन जेलर के सामने किया गया, जेलके नियमानुसार नये कैदियों को पहले पन्द्रह दिन कोई रिपोर्ट न होती थी। परन्तु हमारे लिये खास हिदायत थी, इस लिये टंडील के लिये सामने ले जाना आवश्यक था। बारी साहब ने धमकी देनी शुरु की।

"बाबा, यह जेल है। यह काला पानी की जेल है, यहां काम पूरा करना होगा"।

मेरे नामका एक और युवक हम में था, वह ढीला सा बेपरवाह खड़ा हो कर सुन रहा था। उसे बारी साहब बोला

"सीधे खड़े हो" जमादार पास आगया, हाथ से खड़ा होना सिखाने लगा "अच्छा आज ले जाओ, पहिला दिन है" जेलर ने हुक्म दिया और हम अपनी कोठड़ी में वापस आए।

जेल के खुदा की मुरम्मत।

दूसरे दिन इतवार था, इतवार सवेरे उठकर कपड़े धोकर सुखाने होते हैं। कपड़े सूखते हैं और इधर कैदी लोग अहाते में घास आदिक उखाड़ कर सफाई करते हैं। इतवार को गंजी पीने के लिये नहीं मिलती। दस बजे खाना खिला कर फिर सबको कोठड़ियों में बन्द कर दिया जाता है। सायंकाल निकाल कर खाना खिलाया, फिर उसी प्रकार परेड में बैठाकर बंद कर दिया दूसरे दिन उठे। परमानन्द ने काम करने से इन्कार कर दिया। उसने कहा, मुझ से यह काम न होगा। टंडील उसे लेकर दफतर में जेलर के सामने ले गया। जेलर गुस्से से बड़बड़ाने लगा। परमानन्द ने वैसा ही उत्तर दिया। वह कुर्सी से हाथ दिखाने के लिये उठने लगा, परमानन्द ने उसे धक्का दिया। वह कुर्सी पर गिरा कुर्सी गिर गई, वह नीचे जा पड़ा। टंडील और जमादारों ने परमानन्द को पीटा। उसका सिर फट गया। तत्काल सुपरिन्टैन्डैन्ट को टैलीफून किया गया "बारी साहब सुपरिन्टैन्डैन्ट से बड़ा डरता था। उसने हुक्म दिया कि परमानन्द का खून धो दो, कोई निशान बाकी न रहे, और

और इसे एक कोठड़ी में हवालात बन्द कर दो, जिसके अर्थ यह है कि उसे काम करने के लिये कभी बाहर मत निकालो।

सुपरिन्टैन्डैन्ट मेजर मरे बड़ा भलामानस और सम दर्शी मनुष्य था। अपने काम और कर्त्तव्य को पूरा करने में बहुत ही सख्त और नियमबद्ध था। हमने अपनी कोठड़ियों में ही सुना कि वह आते ही बारी साहब को गुस्से हुआ कि उसने आते ही क्यों छेड़ छाड़ शुरु करदी। सुपरिन्टन्डेन्ट और जेलर दोनों परमानन्द के पास गये। वह गुस्से में था— सुपरिन्टैन्डैन्ट ने उसे धमकी सी दी, जेल में मामूली बात है, परन्तु परमानन्द को जेल का नियम पहली बार ही मालूम हुआ था। उसने सुपरिन्टैन्डैन्ट को गुस्से में वैसे सख्त उत्तर दिये।

परमानन्द को तीस बेत की सज़ा।

सारे जेल में शोर मच गया "बारी साहिब" पीटा गया। टंडील और पेटी अफसर चाहे देखने में बारी साहिब से डरते और ठकुर सुहाती करते रहते थे, परन्तु सब उसके पीटे जाने पर हंसते थे, और प्रसन्न थे। वह ऐसा निर्दयी और ज़ालिम था कि हृदय में सारे ही सुखी थे। चार पांच दिन के पश्चात् सुपरिन्टैन्डैन्ट ने मुकद्दमा किया और सब जेलके फाटक आदि बन्द करा दिये ताकि परमान्द को बेत लगाने की सज़ा दी जाय। उसे ३० बेत लगाये गये। उसने

सी तक न की। परन्तु इसकी खबर सुनते ही सबने स्ट्राइक कर दी। स्ट्राइक से जेलके अफसर घबरा जाते हैं। डर यह होता है कि दूसरे कैदियों पर असर होगा और जेल का प्रबन्ध चौपट हो जायगा। बारी साहिब ने सबके पास फिरना शुरू किया और बड़ी नरम २ चापलूसी की बातें करनी शुरु कीं "यह उसका अपराध था, उसने ऐसा अनुचित काम किया, मैंने बिलकुल कुछ न कहा था इत्यादि"।

इस बार तो सब काम करने पर राज़ी हो गये, परन्तु इस शर्त पर कि आगे जेल की ओर से ऐसी कोई सख्ती न हो। भला यह कैसे हो सकता था। बारी साहब ऊपर से मीठा और ठंडा था, परन्तु उसके हृदय में विष भरा था और प्रतिकार की अग्नि से दग्ध हो रहा था। उसने हमारे पुराने कैदियों में से एक दो गुप्त रूप से अपने साथ मिला लिये और शतरञ्ज की चालें चलनी शुरू करदीं।

जेलखाने में भी दलबंदियां।

बाकी सालों की पूरी २ हिस्ट्री बड़ी लंबी है, उसका वर्णन करना तो पाठकों का समय गंवाना है, इतना ही बता देना पर्य्याप्त है कि जेल में भी मुल्की दलबन्दियों की तरह भिन्न २ विचारों के कई दल बन गए, जिनके स्वार्थ अलग २ होने से जेल में एक निराला ही संग्राम जारी रहा। इन सब

चाबी की चाबी बारी साहब के हाथों में थी। उसका प्रयोजन केवल एक था, कि जो नये पोलिटिकल कैदी आए थे, जो कि समय कुसमय उसका अपमान और उद्दण्डता करते थे और जिन्हों ने मार पीट भी कर डाली, उन पर जहां तक हो सके सख्ती करके अपने हृदय को ठंडा करे। इसके लिये एक तो पठान और मुसलमान वार्डरों और पेटी अफसरों को हर वक्त उनके विरुद्ध भड़काता रहता था, और हिन्दु वार्डरों और पेटी अफसरों को जिनकी संख्या बहुत थोड़ी थी, यूं ही धमकाता रहता था कि तुम इन लोगों को रियायत करते हो इनका मुनासिब इन्तज़ाम में नहीं रखते। इसलिये वे डर के मारे मुसलमानों से बढ़कर सख्ती करते थे, ताकि किसी तरह से साहब को प्रसन्न करें, परन्तु सख्ती वह स्वयं न कर सकता था, क्योंकि जेलका अधिकार सुपरिन्टैन्डेन्ट के हाथ में होता है, और सुपरिन्टैन्डैन्ट ऐसा था जो कि छोटी से छोटी बात अपनी आज्ञा से करवाता था। सुपरिन्टैन्डैन्ट स्वभाविकतया एक भला मनुष्य था और वह यह भी जानता था कि जेलर शरारत और फसाद पर प्रसन्न रहता है। इसलिए बारी साहिब चाहता था कि किसी तरह सुपरिन्टैन्डैन्ट के विचार भी उस जैसे हो जांय। इसका केवल एक ही उपाय था कि हम में से कोई मनुष्य इसी प्रकार का अथवा इस से भी सख्त आक्रमण सुपरिन्टैन्डैन्ट पर कर दे, जिस से कि

उसे हम लोगों की शरारत का निज के तौर पर विश्वास हो जाय।

ऐसा आक्रमण कराने के लिए आवश्यक था कि हम में से कुछ आदमी उसके साथ हों जो कि सोच विचार कर किसी न किसी को इस उद्देश्य के लिए भड़काते रहें। जेल में सुख की इच्छा और खाने का लालच दो बड़े बलवान् शास्त्र होते हैं, जिस से सब प्रकार की कार्य्य सिद्धि हो सकती हैं। जहां पर दोनों समय खुश्क उबली हुई हर २ की दाल और सूखी दो रोटियां, थोड़े से कच्चे पक्के चावल और घास के पत्तों और टहनियों की तरकारी ही खाने के लिए मिले, और बरसों तक इसमें कुछ अदल बदल न हो मनुष्य का मन किन किन चीज़ों के खाने पर दौड़ता है। यदि किसी अवस्था में चीनी अण्डे और मछली मिलने का अवसर निकल आए तो इससे बढ़कर सुख संसार में दूसरा नज़र नहीं आता। इनको पाने के लिए आदमी सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। बारी साहिब को इन लालचों से एक पार्टी मिल गई। जो कि उसकी इच्छाऽनुसार सब कुछ करने को तैयार थी। जिनको साथ ही यह भी लालच दिया गया कि इस प्रकार की सेवा करने से उनकी रिहाई की कोई न कोई सूरत भी निकल आएगी। यह लोग अपने अधिकार खाने के पदार्थों का लालच देकर अपनी प्रतिष्ठा को बचा सके, और यद्यपि कईयों ने उनके पदार्थों को छूना तक पाप समझा, परन्तु

साधारण लोगों में उनका प्रभाव ज्यों का त्यों बना रहा, और वे उनको ऐसे काम करने पर उकसाते रहे और तैयार करते रहे। परन्तु उनका भेद कुछ और ही था।

कुछ आदमियों की एक पार्टी थी, जो कि सचमुच अपने आप को पीड़ित समझते थे। उनके विचार में पोलिटिकल कैदी होने के कारण उनके विशेष स्वत्व होने चाहियें। उन को ख़ास खाना पहरावा होना चाहिए। दूसरे क़ैदियों के समान नहीं प्रत्युत उनके साथ विशेष व्यवहार होना चाहिए, परन्तु सब कुछ उनकी इच्छा के विरुद्ध होता था। खाना उनको दूसरे कैदियों जैसा मिलता था, काम उनको वैसा ही करना पड़ता था, यद्यपि दूसरे क़ैदी इस तरह के खाने और काम करने के अभ्यासी घर से ही होते थे। उनके लिए ऐसा दण्ड न था जैसा कि इन पोलिटिकल क़ैदियों के लिए जिन की लौकिक स्थिति उनसे कहीं अच्छी थी। साधारण लोगों की सोसायटी बाहर भी इसी प्रकार के आदमियों के साथ हुआ करती थी, इन सब बातों के होते हुए भी खूनी और क़ातिल वार्डर और पेटी अफ़सर बनकर पोलिटिकल क़ैदियों पर शासन करते और उनको प्रबन्ध के अन्दर रखते थे। इस पार्टी के आदमी जेल में भी वैसी ही एजिटेशन करके अपने स्वत्व प्राप्त करना चाहते थे जैसा कि वह देश में किया करते थे। उनका विचार और जोश जेल में आकर भी ज्यों का त्यों था, इसलिए यह लोग स्ट्राइक आदि के अनुकूल थे। इन में

से कई ऐसे थे जिन्होंने जेलका खाना खाने से इनकार कर दिया और हंगर स्ट्राइक में रह कर अपने प्राण दे दिए, ऐसा एक हुश्यारपुर ज़िले का एक गाओं का रहने वाला रामरखा वाली था जो थिबाई से पकड़ा गया था, पृथ्वीसिंह पांच मास पर्य्यन्त हंगर स्ट्राइक पर रहा, उसका वज़न एक सौ पचास पौण्ड से नव्वे पौण्ड तक आ गया, और फिर सब ने उसे खाना खाने पर बाध्य किया और उसने स्वीकार कर लिया। उनमें से सिख साहिबों को ख़ास शिकायत यह थी कि उनके केस धोने के लिए साबन आदिक कुछ न मिलता था, धार्मिक दृष्टि से सिक्खों पर यह बड़ा अत्याचार था।

जेल में षड्यंत्र।

इसके अतिरिक्त बाकी पार्टी थी, जो कि सुनकर कहना मानने पर तैयार हो जाते थे। उनके पेटी अफ़सरों से प्रायः झगड़े हो जाते थे। जेलर व असिस्टैन्ट जेलर से फ़साद हो जाता था, वे जब देखते थे कि हिन्दु अथवा बरमी बच्चों पर अनुचित कठोरता की जाती है, उन पर दबाव डाल कर तङ्ग किया जाता है अथवा उनका धर्म भ्रष्ट किया जाता है तो वे ऐसी हरकत को देख न सकते थे, और तुरन्त रोकने के लिए दख़ल देते थे और लम्बा झगड़ा खड़ा हो जाता था। इन लोगों को एक पार्टी की दलीलें अपील करती थी, क्योंकि यह समझते थे कि हम देश के काम के

लिए जेल में आए हैं और यहां आकर दूसरे क़ैदियों के लिए काम करना हमारा ऐसा ही कर्त्तव्य है जैसा देश में रह कर देश के लिए काम करना। उनको बारी साहिब और उसके कारिंदों से बहुत ही घृणा थी, और उसे देखकर न वे उसके आगे उठना चाहते थे और न आदर से बात करना चाहते थे जिस से वह सदैव जलता रहता था। दूसरी रसूख़ वाली पार्टी भी यही सलाह देती थी कि जेल अफ़सरों को तङ्ग रख कर ही हम अपना स्वार्थ सिद्ध कर सकेंगे।

कुछ महीने बीत गये, फिर स्ट्राइक शुरू हो गई और अन्त में उन्होंने गुप्त रूप से यह तज़वीज़ फैलाई कि जेल में एक छुरी बनवाई जावे, और उससे सुपरिन्टैन्डैन्ट पर आक्रमण किया जावे। यह तजवीज़ पक्की होती रही। मैं इन पार्टियों में किसी में सम्मिलित न था। वहां कोई अक्ल की बात सुनना न चाहता था। मैंने इस क्रान्तिकारी लोगों की प्रकृति को समझ कर यह परिणाम निकाला कि इनमें से प्रत्येक मनुष्य अपने आप को बाक़ी सबसे बुद्धिमान् समझता था। इन लोगों को किसी ऐसी बात पर निश्चय दिलाना जो उनकी प्रकृति के विरुद्ध हो, असम्भव सा था। एक आदमी यूंही किसी से लड़ पड़ता था और बाक़ी सब उसकी सहायता में स्ट्राइक करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। मैं इसके अर्थ यह समझता था कि हम में से जो सब से अधिक क्रोधी हो व लड़ाका हो, हम सब को उसके पीछे चलना चाहिए।

जिस गढ़े में चाहे वह सबको गिरा दे। जेल में प्रतिदिन लड़ाई करने के सैंकड़ों अवसर निकल आते हैं। मैंने अपने साथियों पर यह बात प्रगट करदी कि मैं उनके साथ उस अवस्था में रह सकता था, यदि वे मेरी सम्मति को कुछ मूल्य वान् समझें। यदि उनमें से हर एक के पीछे चलना आवश्यक था तो मैं उनके साथ न चल सकता था। परिणाम यह हुआ कि मैं एक दर्शक के रूप में उनसे अलहदा रहता था, और देखता था कि वे क्या करते हैं, मेरी सम्मति जब कोई पूछता था बता देता था।

जेल में काग़ज़ का टुकड़ा व पिंसल रखना बड़ा जुर्म है जैसा कि पैसे रख कर जूआ खेलना, परन्तु जेल के क़ैदी सब कानूनों को तोड़ना ही कर्त्तव्य समझते हैं। इसलिए जैसे साधारण क़ैदी गले के अन्दर पैसे छुपा कर जूआ खेला करते थे, पोलिटिकिल क़ैदियों में चिट्ठियों के भेजने का बड़ा रिवाज़ था। वार्डर लोग ही एक अहाते से दूसरे अहाते में चिट्ठियां ले जाते थे। कई सिक्ख वार्डर यह चिट्ठियां ले जाते हुए मुखबरी होकर पकड़े गए और वार्डरी से हटा कर फिर मुशक्कती क़ैदी बनाए गए। एक दिन एक वार्डर एक रुक्का एक "भाई जी" को देने के लिये आया। एक क़ैदी से उसने कहा कि यह रुक्का "भाई जी" को देदो। वह क़ैदी मुझे भाई जी समझता था। वह झट उसने मुझे दे दिया। उसमें किसी चीज़ के बाहर से मंगाने का व जेल में बनवाने का ज़िक्र था।

मैं हैरान हो गया। मैंने उस वार्डर को बुलवा कर पूछा। उसने सब कुछ कह सुनाया कि किस तरह हमारे आदमियों में छुरि बनवा कर आक्रमण करने की तजवीज़ चल रही थी। और किस तरह यह सब बात न केवल वारी साहिब को मालूम थी प्रत्युत वही सब कुछ करा रहा था। मैंने अपने सब आदमियों को बतलाया कि यह एक धोखे का जाल है। उन्होंने यह सुना और उनमें से एक दो ने तहरीक चलाने वाले को गालियां और पहले उसे मार डालने की धमकी दी। दूसरे दिन हम सब लोगों के अहातों की बदली हो गई। यह बदली यूं भी हर तीसरे चौथे महीने हुआ करती थी। बदली हो गई, परन्तु जो जोश फैलाया गया, कम न हुआ।

सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रत्येक मास में एक इतवार प्रातःकाल स्वयं सब कैदियों का वज़न किया करता था। वज़न करते समय "भाई चतरसिंह" ने उस पर ख़ाली हाथ आक्रमण कर दिया और गर्दन को पकड़ने की कोशिश की। सुपरिन्टैन्डैन्ट कुर्सी से गिर गया। भाई चतरसिंह को अफ़सरों और वार्डरों ने बहुत मारा पीटा। सुपरिन्टैन्डैन्ट ने उसे लोगों से छुड़ा दिया। जेलर फाटक में था। जब उसने सुना, एक बार तो मन में हंसा और प्रसन्न हुआ कि उसकी तज़वीज फल ले ही आई।

चतरसिंह को तो कोठड़ी के दरवाज़े और बारी में बारीक जाली लगवाकर दिन रात के लिए अन्दर बन्द कर

दिया गया, और भविष्य के लिए सुपरिन्टैन्डैन्ट के सामने बारी साहिब की बात की अधिक प्रतीत होने लगी। यह स्वाभाविक था कि सुपरिन्टैन्डैन्ट का चित्त भी अधिक कठोर हो जाय। जब अपने पर दुख आ पड़े तो आदमी रवैय्या बदल जाया करता है, और साथ ही इस फ़साद की जड़ सावरकर भाइयों को बता दिया गया, और यह लांछन लगाया गया कि वे हमेशा जेल में अशान्ति फैला कर प्रसन्न होते थे।

बारी का दाओ चल गया। उसके पक्षपाती सुख में हो गए। उसके विरोधियों पर विशेष दृष्टि रखी गई। बाकी के "बम केस वाले" अधिक सख्ती के दिन व्यतीत करने लगे। अधिक सख़्ती होने पर वे अधिक बिगड़ते थे। सुपरिन्टैन्डेन्ट के आने पर खड़े न होते थे। उन्हें कोठड़ी में बन्द किया जाता था। हथकड़ियां लगा कर ऊंचा बान्ध दिया जाता था, ताकि खड़े रहें। पाओं में बेड़ियां डाल दी जाती थीं। कई बार स्ट्राइक हुई, खाने छोड़े गए, पेशियां हुईं, सज़ाएं मिलीं, इसी तरह पर चलता गया, जब कि साल बीत गए और बारी साहिब का काल उसे सदा के लिए छुट्टी पर ले गया।

सुपरिन्टैन्डन्ट छुट्टी लेकर चला गया, बारी साहिब मर गया। जेल से कई आदमी छोड़े गए। नए जेल अफ़सर और सुपरिन्टैन्डैन्ट आगए और नई पालिसी का आरम्भ हुआ।

और सब कुछ सहारा जा सकता था, परन्तु एक बात जो कि हम लोगों के लिये असह्य थी, वह प्रति क्षण अपमान का डर था। इसके सामने खाने की खराबी और पाबंदियां तुच्छ थीं। मुझे अपनी पोज़ीशन की दिक्कत जेल में अजीब सी मालूम हुई। एक ओर तो द्रोह था और दूसरी ओर मूर्खता में यह सोचता रहता था कि इन दोनों में से कौनसी वस्तु बुरी है, और अन्त तक मुझे इसका उत्तर नहीं मालूम हुआ। जहां तक मैं देख सकता हूं, मुझे दोनों ही एक से बुरे भयानक देख पड़ते हैं। एक तो हृदय का दोष है और दूसरे मस्तिष्क का। मस्तिष्क का दोष हम सोच समझ कर क्षमा करने पर तय्यार हो जाते हैं। और हृदय का दोष अर्थात् स्वार्थ वश होकर अपनों को धोखा देना क्षमा के योग्य नहीं देख पड़ता। ऐसे मूर्ख मनुष्य भी थे जो कि मेरी उपेक्षा को कायरता कह कर मुझे बुरा भला कहते थे। यद्यपि मुझे यह समझ न आती थी कि जो मनुष्य कष्ट को सहर्ष स्वीकार करता था वह अधिक दलेर था अथवा वे अधिक दलेर थे जो कि अच्छा खाने का अधिकार पाने के लिये यूं ही अपने आपको दुबधा में डालते थे। जो हो मेरा विचार कायरता और दलेरी के सम्बन्ध में इन से नहीं मिलता था। यदि मेरा स्वभाव और मस्तिष्क इस प्रकार का बना होता और मै उनकी चेष्टाओं में शुरू से ही सम्मिलित होता, मैं इतना कह सकता हूं कि नासमझियों

के होते हुए भी मेरे लिए यह सम्भव था कि मैं उनसे प्यार कर सकूं, चाहे मेरे मन में उनके लिए आदर होना असम्भव था। उनके साथ रह कर गुज़ारा करना बड़ी कठिन सी बात है। उन कमीने आदमियों के साथ जिनसे आदमी घृणा करता है, यदि उनका मन अच्छा हो जाय तो गुज़ारा हो सकता है।

१६—दूसरे कैदी।

छटे हुए बदमाशों के अन्दर।

जिन क़ैदियों के अन्दर हमें रहना पड़ा, वे किस तरह के थे?

भारतवर्ष की सोसाइटी पबलिक गुणों के लिहाज़ से संसार की समस्त जातियों से पीछे है। उस सोसाइटी में बहुत पतित आदमी दण्डित होकर जेल में जाते हैं। इन क़ैदियों में अधिक बुरे होते हैं, वे काले पानी में निर्वासित किए जाते हैं। कालेपानी में जाकर अच्छे चलन वाले क़ैदी बाहर टापुओं में थोड़ीसी स्वतन्त्रता रखते हुए आयु व्यतीत करते हैं, और जो उनमें अधिक बदमाश होते हैं वे दण्ड पाकर फिर जेलमें आते हैं। इसलिए बदमाशी की छलनी में छने हुए सब से मोटी बदमाशी वाले आदमियों के अन्दर हम

रहा करते थे। भारतवर्ष की बदमाशी का सत यह था, जो कि हमारे इर्द गिर्द था, यद्यपि इन लोगों में से छांट होकर बड़े बदमाश एक खास लाइन में रखे जाते थे, इन बदमाशों की विशेषता यह थी, कि वे दिन भर आपस में गालियां देते रहते थे, दूसरों के साथ ज़रा सी बात पर गुस्से हो जाते थे, और लड़ने पर उतर आते थे। जहां घात पाते दूसरों का कपड़ा बर्तन चुरा लेते थे, अकेली कोठड़ी में पड़े हुए दिन रात आपस में जूआ खेलते रहते थे।

इनको दो पैसे दो, किसी को गाली दिला लो, किसी के साथ लड़ाई करा लो।

क्यों बाबू ? अंगरज़ चले जायेंगे।

जेल के प्रत्येक क़ैदी की प्रकृति जेल की पाबन्दियों और दुखों के कारण स्वभावतः जेल अफ़सरों और गवर्नमेंट के विरुद्ध थी। वे दुखी होते थे, उनका क्रोध दुख देने वालों के विरुद्ध होता था। वे लोग पोलिटिकल क़ैदियों का आदर करते हैं, उनसे सहानुभूति रखते हैं। वे समझते हैं, कि इन लोगों ने कुछ सरकार के विरुद्ध कार्य्यवाही की है, और यदि इनके साथी कुछ कार्य्यवाही करेंगे, तो कदाचित् सरकार के बदल जाने से उनको स्वतन्त्रता का भी अवसर निकल आएगा। वे सदैव यही चाहते रहते हैं सरकार के चले जाने से ही उनके छूटने की आशा है, अन्यथा कालेपानी में से ऐसे बदमाशों के छूटने की कोई गुंजाइश नहीं। इसलिए वे जल्दी

विश्वास कर लेते हैं, कि गवर्नमेंट चली जाएगी। मनुष्य जो इच्छा करता है, उस पर शीघ्र विश्वास कर लेता है। जितना समय युद्ध होता रहा, जेल के क़ैदी रात को झूठी ख़बरें बनाते थे और सवेरे उठकर उन्हें फैलाते थे कि जर्मन आया, और अब थोड़े दिन बाक़ी हैं। एक बूढ़ा बरमा निवासी जो कि ३० वर्ष से अधिक क़ैद काट चुका था, बड़ी सञ्जिदगी से मेरे पास आया और पूछने लगा "क्यों बापू? यह सच है, अङ्गरेज़ चले जायेंगे?

मैंने कहा, तुम ही बताओ, वह कहने लगा, "यह सब क़ैदी झूठ बनाते हैं, क्योंकि ३० वर्ष हो गए, जब मैं यहां आया था, तब भी यह कहते थे कि अब अङ्गरेज़ जाने वाले हैं" इसी भरोसे पर जन्म भर के क़ैदी अपने दिन काटते हैं। उन लोगों को क़ैदी बहुत पसंद करते थे, जो झूठ गपोड़ सुना देते थे, बस घबराओ नहीं, थोड़े दिन बाक़ी हैं सच बोलना ऐसा बुरा है कि कोई बोलना ही नहीं चाहता।

इन क़ैदियों की प्रकृति।

परन्तु यह लोग किस तरह के आदमी होते हैं, जिन्हों की छोटी सी बात पर क्रुद्ध होकर दूसरे आदमी को क़त्ल कर डाला। थोड़े से लालच में आकर दूसरों को लूट लिया, उनके बच्चों को क़त्ल कर दिया। थोड़ीसी अफ़ीम व तमाखु के लालच में जेल में जो चाहो करा लो। इन लोगों की प्रकृति

में ही नहीं होता कि दूसरों के सुख दुख का कोई लिहाज़ रखें। वे तो अपनी ही दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को देखते हैं। उनको जेलर कष्ट देता है, वह नष्ट हो जाना चाहिए। वह उनको सुख देता है, उस जैसा कोई भला मनुष्य नहीं। उन का निजका दुख सुख उनकी भलाई और बुराई की कसौटी है। उनकी निजकी इच्छा काम को अच्छा व बुरा बनाती है, ऐसे लोगों में देश की भलाई अथवा दूसरों का प्रेम कैसे हो सकता है। दूसरों की भलाई में अपने आप को कष्ट होता है, वे स्वयं कष्ट उठा कर दूसरों का भला क्यों करेंगे? ऐसे लोग भी देश की स्वतन्त्रता की बातें कर सकते थे, क्योंकि उनकी अवस्था ऐसी थी, जिसमें वे सरकार के शत्रु ही हो सकते थे। हमारे आदमी उन लोगों की बातों में आकर उनको देश भक्ति का उपदेश करने लग जाते थे, कितनी भूल थी! जेलर उनसे भेद लेना चाहता था, ज्यों ही उन्हें थोड़ा सुख दिया वे हंसकर बात कर दी, वह सब बात उसको बता देते थे, थोड़ासा सुख मिलने पर उनकी प्रकृति का रौं बदल जाता था।

उन में से कोई भी अच्छा मनुष्य नहीं था, यह कहना भी ठीक न था। कुछ ऐसे अभागे आदमी भी थे, जिनके विरुद्ध पोलिस ने यूं ही झूठ सबूत बनाये और वे दण्डित होकर वहां भेजे गए। अथवा सम्भव है अनजाने में व जोश में आकर उनसे कोई हत्या हो गई होगी, जिसका फल उन्हें

आयुभर भुगतना पड़ा । कई ऐसे नवयुवक बालक थे जिनसे खेल कूद में कत्ल हो गया ।

बम्बई प्रांत के दो तीन लड़के हमारे सामने आये, जो कि जङ्गल में गोरु चरा रहे थे अदालत बना कर एक उनमें जज बन गया और दो सिपाही बने । एक साथी के ऊपर कोई दोष लगा कर अदालत में पेश किया । उसने फांसी का हुक्म दिया । सिपाहियों ने उसके गले में रस्सी डालकर उसे भैंस पर चढ़ा कर वृक्ष की शाखा से बान्ध दिया और भैंस को नीचे से हांक दिया । जब वह लटकने लगा तो आप भाग गए, ऐसे २ मामलों में वहां गए हुए कई ऐसे आदमी थे, जिनकी भलमंसाहत का नमूना बाहर सोसाइटी में नहीं मिल सकता ।

जेल के जीवन में खास चीज ।

इन कैदियों के जीवन में एक चीज़ है, जिसका ज़िक्र करना अत्यावश्यक है, और वह तमाखु है, जिसे जेल में "सूखा" कहा जाता है । यह तमाखु सूखी पत्तियों के रूप में जेल में लेजाया जाता है । मुल्क के जेलों में लेजाने वाले सरकारी कर्मचारी होते हैं, और ऐंडेमान में वार्डर और पेटी अफसर आदिक होते हैं । इसका जेलके अन्दर लेजाना जेलके नियम के विरुद्ध है, और इसके लेजाने वाले जब तलाशी होकर पकड़े जाते हैं, तो वे टूट जाते हैं, उन्हें कष्ट दिया जाता है । परन्तु सूखे का अन्दर जाना रुक नहीं

सकता, क्योंकि लाने वालों को इसमें खासी आमदनी होती है। दो पैसे का लाकर अन्दर एक आने पर बेचते हैं। जेल में प्रायः सब के सब कैदी इसे मुंह में रख कर चबाते हैं। जो न भी खाने वाले हों, दूसरों की संगत से वे लोग भी झट ही खाने लग जाते हैं। जेल की सोसायटी में सूखे की पत्ती नकदी का काम देती है। इस से आदमी दूसरों से काम कराके आप सुख से बैठ सकता है और तय्यार हुई मुशक्कत खरीद लेता है। इससे रोटी खरीद लेता है। वहां जेल में अठवारे में एक आध बार सब को दही मिलता है। जिनका वज़न बहुत थोड़ा हो अथवा बहुत बीमार रह चुके हों, उनको थोड़ा दूध मिलता है। सूखा देकर आदमी दही दूध खरीद सकता है। जेल में जिसके पास अधिक सूखा हो अथवा जो अधिक मंगवा सके, बड़ा धनाढ्य समझा जाता है। सूखे का व्यापार होता है, इसके कई व्यापारी होते हैं, जो कई बार पकड़े जाते हैं, दण्ड पाते हैं, पर अपनी दुकान चलाये रखते हैं। अहाते के अन्दर भूमि में व कोठड़ी के फर्श के अन्दर अथवा दीवारों में पत्तियां रखने का स्थान बनाया होता है। सूखा खाना जेल में बड़ा ऐश्वर्य भोगना समझा जाता है। बहुत से ऐसे आदमी होते हैं जो अफीम मंगाकर खाते हैं, परन्तु इस पर बहुत रुपया खर्च होता है और यह बड़ा जुर्म गिना जाता है।

एन्डेमान में स्वभाव विरुद्ध जुर्म ।

जूआ खेलना, सूखा चबाना, बदमाशी की बातें करना, अपने किस्से अथवा दूसरे पुराने किस्से एक दूसरे से बताना, बहुत गाना और धार्मिक पुस्तकें पढ़ना कैदियों का बचा हुआ समय गुज़ारने के तरीके हैं। जेलों की सबसे बड़ी आचार सम्बन्धी बुराई स्वभाव विरुद्ध जुर्म है। जो लोग जेलों में जाते हैं, जेलों से बाहर भी वह बड़ी भारी बदमाशी करने वाले होते हैं। जेलों के अन्दर जाकर उनका परहेज़ से रहना असम्भव सा है, इसलिये जेलों में यह बुराई बहुत पाई जाती है। काले पानी में इसका विशेष कारण यह है कि वहां भिन्न प्रदेशों से लोगों को लाया जाता है। जिनमें से कई कठोर चित्त और स्वभाव से ही बदमाश होते हैं। जो लोग सीमा प्रदेश से अथवा पञ्जाब से जाते हैं, वह प्रायः इस प्रकार की बहुत बदमाशी करते हैं। यू॰ पी॰ बम्बई और मद्रास की ओर के लोग प्रायः कोमल प्रकृति के होते हैं, उनमें से जो छोटी आयु के होते हैं, उनको डराकर नई जगह में काम की सख्ती दिखा कर और सूखे का लालच देकर बिगाड़ना बहुत साधारण बात है।

बरमा देश से बहुत से कैदी वहां लाए जाते हैं। उन के आदमी तो बड़ी आयु तक डाढ़ी मूंछ न होने के कारण उन लोगों की दृष्टि में स्त्रियां सी दिखाई देते हैं,

र क्योंकि वह बोली नहीं समझते, उनके अफसर काम लेने वाले कैदी वार्डर और पेटी अफसर बलवान् जातियों से होते हैं, उन्हें तंग करके जल्दी बिगाड़ देते हैं। पञ्जाब मद्रास और बम्बई से भली जातियों के लोग कोई २ देखने में आते हैं, परन्तु यू० पी० की ऊंची जातियां ब्राह्मण और ठाकुर भी अगिणत संख्या में डाकों के जुर्म में काले पानी जाते हैं। इन ओछी डाकों के अन्दर बहुत से लड़के होते हैं, जिनका केवल आचार ही बुरा नहीं होता, प्रत्युत कइयों को धर्म से भी भ्रष्ट कर दिया जाता है। यह बुराई यद्यपि वैसे भी जेलों में पाई जाती है, परन्तु भिन्न २ जातियों और प्रदेशों के अपराधियों को एक ठौर एकट्ठा करने से इसके अवसर बहुत बढ़ जाते हैं। और क्योंकि काले पानी में जेल से बाहर बहुत से आदमियों को स्वतंत्रता भी होती है, बलवानों की स्वतंत्रता निर्बलों को सताना है, इसलिए मेरा विचार है। कि ऐसे अपराधियों को स्वतंत्रता में रखना ही अपराधों को बढ़ाना है।

रात को सोते समय कोई कैदी अपना क़िस्सा दूसरे को सुनाता है, कि मैंने यूं किया, यूं किया, इत्यादि कोई पुरानी अलफ लैला की कहानी ले बैठता है, परन्तु इनके साथ ही कई अनेक तरह के गीत व बैत गाकर अपना दिल बहलाते हैं। मैं चाहता हूं कि एक दो बैत नमूने के तौर पर लिख दूं। कइयों में से एक पञ्जाबी कवि गौहरा के बनाए हुए याद आते हैं जो इस तरह पर कहे गये हैं:—

लाम—लखां करोड़ां दे शाह देखे,
न मुसाफ़रां कोई उधार देंदा ।
दिन रात जिन्हां दे कूच डेरे,
न कोई उन्हां दी थाई इतबार देंदा ।
भौर वंहदे गुलां दी वाशनां ते,
न कोई सप्पां दे मुंह ते प्यार देंदा ।
गौहरा सबे सलूक ज्यूंदियां दे,
मोयां गयां नूं हर कोई विसार देंदा ।
जीम—ज्यूंदियां काहनूं मारना एं,
जेकर मोयां नूं नहीं तूं जुआन जोगा ।
घर आए सवाली नूं क्यों घूरना एं,
हत्थीं खैर जे नहीं तूं पान जोगा ।
मिले दिलां नूं काहनूं वछोड़ना एं,
जेकर विछड़ियां नूं नहीं मिलान जोगा ।
गौहरा बंदियां नूं रख तूं बंद खाने,
जेकर नेकियां नहीं तूं कमान जोगा ।

जेलख़ाने में पुस्तकें ।

कोई २ ऐसे कैदी भी थे जिनको धर्म पुस्तकों से बड़ा प्रेम था, और वह कुछ रहा सहा समय पढ़ाई में लगाया

करते थे। जेलों में पुस्तकें रखने की इजाज़त होती है। जितने पोलीटिकल कैदी थे, उन सब की पुस्तकें एक अलमारी में रखी रहती थीं, और वह प्रत्येक रविवार को अपनी पुस्तक दूसरे से बदल सकते थे, अठवारे में एक दिन सब जेलके कैदियों को परेड होती थी, जिस में बिस्तरा कपड़े और बर्तन आगे रखकर और टिकट हाथ में पकड़ कर खड़ा होना होता था, सुपरिन्टैन्डैन्ट हर एक के सामने से गुज़रता था जिस किसी को कुछ कहना होता था, वह हाथ उठाता था और सुपरिन्टैन्डैन्ट ठहर कर उसकी फरियाद सुनता था, और उसका उत्तर दे देता था। प्रत्येक कैदी का टिकट उसका सार्टिफिकेट होता है, जिस पर उसके सब चाल चलन और पेशी की सूचि लिखी होती है। इसे हिस्ट्री शीट भी कहते हैं।

जेल में जी बहलावे की सामग्री।

जेल में रह कर जी बहलावे की एक ही सामग्री रह जाती है, और वह नये चालान का आना होता है जो कि महाराजा जहाज़ कलकत्ता मद्रास व रंगून से लाता है। कलकत्ते से उत्तरी भारत के देश निकाले के कैदी आते हैं जिनकी संख्या प्रायः एक सौ के लगभग होती है। इनके साथ कुछ स्त्रियां भी होती हैं। मद्रास से पश्चिमी और दक्षिण भारत के और रंगून से बरमा कैदी। आश्चर्य जनक बात है, परन्तु है सच्ची कि, जब नये चालान में से कोई जान

पहचान का निकल आता है, तो मिलने वाले कैदी को इस से विशेष आनन्द प्राप्त होता है। एक तो इसलिये कि वह उसके पिछले हालात की खबर देता है अथवा यह यूं समझिये कि यह मनुष्य का स्वभाव है कि किसी सम्बन्धी को मिलकर मनुष्य का मन प्रसन्न होता है। जो लोग साधारण हत्या के अभियोग में आते हैं उनको जेल में बहुत कम रखा जाता है। उनके दण्ड की अवधि केवल बीस वर्ष समझी जाती है। जिनका जुर्म डाका और कत्ल होता है उनकी अवधि पच्चीस वर्ष होती है, विष देने वाले अथवा आग लगाकर हत्या करने वाले बहुत बुरे समझे जाते हैं, उनके दण्ड की अवधि तीस व पैंतीस वर्ष होती है। सादे कत्ल वालों में से यदि कोई उर्दू पढ़ना लिखना जानता हो उसकी बहुधा मुन्शी के काम पर आवश्यकता रहती है, और उसे सख्त काम नहीं करना पड़ता।

बहुत से कैदी चोरी और ठग्गी के पेशे वाले होते हैं। इन लोगों ने पांच २ सात २ बार पहले जेल काटा होता है। जेल इनका घर होता है, इसके बिना उनका जी नहीं लगता, थोड़ी देर के लिये बाहर निकलते हैं, फिर चोरी करते हैं और अन्दर आजाते हैं। ऐसे कई देखे हैं, जो कि काले पानी से छूट कर गए, रास्ते में ही चोरी की और वापस आगये।

कैदियों के लिये स्कूल।

स्त्रियां जितनी जाती हैं, उनका मामला प्रायः अपने पति को विष देने का सा होता है। वे एक अलग जेल में रहती है, जिसे रंडी बार्क कहा जाता है। पेटी अफसरनी टंडेलनी आदिक बनाई जाती है। उन्हें भी काम करना पड़ता है। तीन वर्ष के पश्चात् यदि वह किसी कैदी को पसंद करें, जिसने दस वर्ष कैद काट ली हो तो उनकी इजाज़त लेकर ब्याह हो सकता है, और यूं भी दस वर्ष कैद काट लेने के पश्चात् यदि कोई सजा व बदचलनी उसके विरुद्ध न हो तो उसे स्वतंत्र किया जाता है। वह अपना शेष समय खेती करके अथवा गौ बकरी रख कर दूध बेच कर मित व्यय से बहुतेरा रुपया बचा सकता है। इन स्वतंत्र लोगों की संख्या बहुत नहीं होती, परन्तु फिर भी उनकी अलहदा छोटी २ बस्तियां हैं, काले पानी की भाषा हिन्दोस्तानी है, जो कि बरमा मद्रास बम्बई आदि प्रदेशों के लोग जल्दी सीख लेते हैं।

कैदी लोगों के और दूसरे उनकी सन्तान के बच्चों के लिए इब्राडीन में एक ऐंग्लोवर्नैकुलर मिडिल स्कूल है, जहां डेढ़ दो सौ लड़के पढ़ते हैं। यहां के पढ़े हुए वहां के दफतरों में थोड़ी तलबों पर काम करते हैं। इन स्वतंत्र स्त्रियों का आचार इतनी बड़ी कैदियों की संख्या में रहने से अच्छा

नहीं रह सका । इन लोगों की खुराक चावल होती है। आटा की यदि किसी को आवश्यकता हो तो केवल कमसरीट से विशेष आज्ञा से मिल सकता है । सारी बस्ती के लिये खाद्य सामग्री जहाज ही लेजाता है, सरकारी भंडार में जमा रहता है, वहां से ही दुकानदार लोग भी खरीद करते हैं ।

१७-जेल का प्रयोजन ।

जेलखाना नर्क है :—

जेल एक निराली सृष्टि है । इसका अनुमान साधारण लोग कभी लगा ही नहीं सकते । मैंने भी अन्दर जाने से पहले जेल का नाम ही सुना था, पुस्तकों में पढ़ा भी होगा, जेल के दण्ड पर विचार किया होगा, परन्तु इस पक्ष से कि जैसे आवागमन के नियम के अनुसार जीवात्मा को क्षुद्र योनियों अर्थात् पशुओं और वृक्षों के अन्दर डालकर इस जीवको विशेष बन्धन में रखा जाता है, ताकि इस से विशेष पापों को दूर करने के लिए उनके मारने की स्वतंत्रता छीन ली जाय और अवसर न मिलने से उन पापों का अभ्यास छूट जाय । उदाहरण रूप से कहा जाता है कि संसार में सोसायटी ने व सरकार ने इस प्रयोजन के लिए बनाया है।

यह कभी खयाल नहीं हो सकता था कि इस तरह का सुधार जेलों द्वारा केवल एक कल्पित सिद्धान्त था, जिसमें

कुछ सच्चाई न थी, यदि जेल केवल इतना होता जैसे कि एक पक्षि पिञ्जरे में होता है, तब तो ऊपर दिया हुआ उदाहरण सत्य कहा जा सकता था, यद्यपि पक्षि किसी दोष के सुधार के लिये नहीं पकड़ा जाता, वह तो एक बिगड़े हुए मनुष्य के स्वाद को पूरा करता है। यदि जेल एक बिगड़े हुए मनुष्य के लिये पाबन्दी करने वाला होता है, तब तो कदाचित् यह प्रयोजन पूरा हो जाता है। परन्तु जेल एक पिञ्जरा तो नहीं होता, यह तो एक बहुत ही गंदी और दुर्गन्धित जगह होती है, जहां का जल वायु, बात चीत, विचार की तरंगे और चेष्टाएं इसे एक तर्फ का नमूना बना देती हैं। यह वह स्थान है जहां मनुष्य समाज के गिरे हुए आदमी इकट्ठे कर दिये जाते हैं, ताकि वे अपने मनके विचारों का एक दूसरे से बदलते हुए उनके अनुसार अपना काल व्यतीत करें। जब कोई अच्छी प्रकृति का मनुष्य इन में डाल दिया जाता है, तो कुछ समय तक तो उसे घृणा सी आती है, परन्तु कुछ समय वहां रहने के पश्चात् वह भी ऐसा ही हो जाता है, जैसा एक मैला उठाने वाले भंगी की सन्तान जिनकी नाक में गन्धि सूंघने की शक्ति ही मर जाती है।

देश के जेलों को कारोबार के तरीके पर लाभ के उद्देश्य चलाया जाता है। हां इस में सन्देह नहीं कि जेल के दारोगे और कर्मचारी क्योंकि साधारण और क्षुद्र जातियों में से लिये जाते हैं वह किसी भले आदमी के विपत्ति में फंस जाने

पर अपना हाथ अवश्य रंगना चाहते हैं। जब कोई नया आदमी जेलमें आ जाता है जो जेलके खुर्राट लंबरदार उसके पीछे लगा दिये जाते हैं जो कि उसे तंग करते हैं। सख्त मेहनत देते हैं, गालियां देते हैं, और पीटते हैं ताकि वह कुछ रुपया घर से मंगा कर जेल अफसरों की पूजा करे। इस प्रकार दारोगे को मासिक रुपया दिया जाता है ताकि उनको इस धींगाधींगी से बचाया जावे। हमें बताया गया, कभी २ रुपया निकालने के लिये बहुत सख्त पीटा जाता है, और लंबरदार आदि कैदी क्योंकि खूनी प्रकृति के होते हैं, वह क्रोध में आए हुए जान से मार डालते हैं और यह मामले यूं ही रफा दफा कर दिये जाते हैं, इसी लिये जेलों में रिवाज़ है कि पठान कैदियों को जिनके अन्दर दया का भाव नहीं होता, अधिक उपयोगी और भलामानस समझ कर लम्बरदार बनाया जाता है।

जेल में दण्ड का प्रयोजन काम।

एण्डेमान में दण्ड का एक प्रयोजन समझा जाता है और वह कैदियों से "काम लेना" है। बस्ती के शासक अधिकारियों और दूसरे अफ़सरों की उन्नति उनके काम पर निर्भर है। उनका काम करना यह है कि कालेपानी की बस्ती को लाभदायक बनाया जावे। बारह तेरह कैदियों की मेहनत से वहां के बड़े २ अफसरों को वेतन मिलता है,

वहां की फौज और पोलीस का वेतन निकलता है, वहां की स्वतंन्त्र आबादी का निर्वाह होता है । उनकी अपनी उदर पूर्ति के लिये सामान लाया जाता है। इसलिए सब के सामने एक ही मोटो "काम" है। होना यह चाहिए कि बरमी कैदियों पर बरमी पेटी अफसर रखे जावें, परन्तु उनके हृदय कोमल होते हैं, काम लेने के लिए सख्ती नहीं करते, इस लिए उन पर पठान अफसर रखे जाते हैं, जो कि काम तो लेते ही हैं, परन्तु इसके साथ उन बेचारों पर क्या २ अत्याचार करते हैं, इसका अनुमान लगाना कठिन है। जितनी बुराइयां होती हैं उन सबको अफसर जानते हैं, परन्तु वह कोई इलाज नहीं कर सकते । इलाज उस अवस्था में हो सकता है, जब कैदियों के सुधार का उद्देश्य रख कर उन से बुराइयां दूर करनी हों, परन्तु काम सिद्ध करना ही जब प्रयोजन हो तो बुराइयों की कोई पर्वा नहीं की जा सकती ।

आचार दया और न्याय की व्याख्या हरबर्ट सैंसर ने अपनी "आचार" नामक पुस्तक में दया और न्याय के गुण पर खूब तर्क किया है । सोसायटी के लिए इन दोनों का बर्तना एक बहुत ही कठिन सी बात है । सोसायटी ने अपने आपको जीवित रखने और अपने मैम्बरों के सुख तथा उन्नति के अर्थ कुछ सांसारिक नियम बनाए हैं, वह यह कि हमको सब कुछ करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है, परन्तु

ऐसा करते हुए हम किसी दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक न हों। इस एक से चार पांच शाखाएं निकलती हैं, कि हम दूसरे की स्वत्वों का ध्यान रखें, दूसरे के शरीर व प्राणों को हानि न पहुंचाएं, दुराचार फैलाकर सोसायटी की जड़ों को खोखला न करें, दूसरे का अपमान करके अपनी बुराई न करें। अपने मन वचन और कर्म्मों में एक समान होकर किसी को धोखा न दें। इन नियमों को तोड़ने के सैकड़ों तरीके हैं, जिनको सोसायटी अपराध कह कर इन नियमों को तोड़ने वालों को दण्ड देती है, ताकि दूसरे ऐसा न करें।

एक मनुष्य तनिक सी बात पर क्रोध में आजाता है, और प्रतिकार की अग्नि में जलता हुआ दूसरे को मार डालता है। एक मनुष्य किसी दुर्व्यसन में फंसा हुआ है, वह रुपया कमा नहीं सकता, दूसरे का घर तोड़ता है, उस की स्त्री व बच्चों को मार डालता है, वह पीछे पछताता है, रोता है, कहता है मुझ से भूल होगई मुझे क्षमा किया जावे। दया तो यह चाहती है कि उसका करुण क्रन्दन सुनकर उसे छोड़ दिया जावे, परन्तु न्याय यह कहता है कि यदि इसे छोड़ दिया गया तो सोसायटी में जो चाहेगा दूसरे को मार कर रो पीट कर अपने आपको क्षमा करवा लेगा। इसलिये दूसरों को शिक्षा मिले और वह भविष्य में ऐसा करने से बचें, आवश्यक है कि उसे कठोर दण्ड दिया जाए अन्यथा सोसायटी में अव्यवस्था फैल जायगी।

परन्तु इसी प्रश्न का दूसरा पक्ष एक और है। वह यह कि उस मनुष्य के ऐसे अपराध करने में सारी सोसाइटी का कहां तक उत्तर दायित्व है। प्रत्यक्षतः तो मालूम होता है कि यदि कोई मनुष्य पाप व अपराध करता है तो इस में दूसरों का क्या उत्तर दायित्व हो सकता है? उत्तर दायित्व इसलिए कि प्रत्येक मनुष्य बहुत करके सोसाइटी की बनावट का ही परिणाम है। यदि एक मनुष्य के अन्दर इतना क्रोध है, तो इसका कारण या तो यह है कि उसने अपने माता पिता से यह स्वभाव प्राप्त किया है, अथवा सोसाइटी ने उसे सद् शिक्षा नहीं दी, दोनों अवस्थाओं में उसकी अनुचित चेष्टा के लिए सोसाइटी ज़िम्मेदार हो सकती है, इसी प्रकार चोरी आदिक अपराध यदि दुष्ट व्यसनों का परिणाम है, तो भी उस ने वे व्यसन दूसरों से सीखे हैं, और दुष्ट व्यसनों के फैलाव का उत्तर दायित्व सोसाइटी पर ही होता है, अथवा वे अपराध भूख और निर्धनता का परिणाम है। इसके लिए भी सोसाइटी का कर्त्तव्य है कि इससे पहले कि वह उन अपराधों के लिए दण्ड सोचे, अपने अन्दर से भूख और निर्धनता के दूर करने का प्रबन्ध करे।

इन सब बातों पर विचार करते हुए यही उचित जान पड़ता है, कि जहां पर किसी अपराधी को दण्ड देने में न्याय का ध्यान रखना चाहिये, वहां सोसाइटी को अपनी त्रुटि को ध्यान में रखते हुए दया से भी काम लेना चाहिए। इसलिए

दण्ड का उद्देश्य यही होना चाहिए कि अपराध के करने वाले को ऐसी अवस्था में रखा जावे कि उसमें पूरा सुधार हो सके, और जब उसे सुधार का निश्चय हो जाए उसे फिर स्वाधीनता का अवसर दिया जावे। मैं समझता हूं कि इसी नियम को सामने रखकर अपराधी लड़कों के लिए रिफ़ार्मेटरी बनाई गई है। परन्तु मुझे यह समझ नहीं आई कि छोटी आयु के बालक कालेपानी में किस प्रयोजन से भेजे जाते हैं। जहां सुधार के स्थान में दिन पर दिन व पक्के मुजरम बन जाते हैं, बेहतर हो कि "रिफ़ार्मेटरी" का नियम उन बड़ी आयु के क़ैदियों पर भी बर्ता जावे जिनका वह पहला अपराध है।

क्रमशः बढ़ने वाली सज़ाओं का ज़िक्र।

जेल के अन्दर जो सज़ाएं दी जाती हैं उन सब का प्रयोजन मेल जोल और स्वतन्त्र गति का रोकना होता है। जब एक आदमी जेल के अन्दर जाता है, तो वह अपनी इच्छानुसार चलने के स्थान में जेल की दीवारों के अन्दर ही चल फिर सकता है, और केवल जेल के अन्दर रहने वालों के साथ ही मेल जोल कर सकता है। जब वहां कोई पाप करता है तो अकेला एक कोठड़ी में बन्द कर दिया जाता है, उसकी चेष्टा और बातचीत केवल कोठड़ी की दीवारों तक ही रहती है। यदि फिर अपराध करता है तो उसकी टाङ्गों में बेड़ी लगाई जाती है, जिस से उसकी हिलने जुलने की स्वतन्त्रता नष्ट हो जाती है और तङ्ग हो जाती है, और अपराध

करने पर उसके दोनों पाओं के बीच में एक आड़ा लोहे का डंडा लगा दिया जाता है जिससे उसकी चेष्टा च्यूंटी के बराबर हो जाती है, और अपराध करने पर हाथों में हथकड़ी लगा दी जाती है, और अपराध करने पर हाथों को पीठ के पीछे लेजाकर हथकड़ी मार दी जाती है। हाथ और पाओं की चेष्टा को रोकना ही सज़ा है, इनके अतिरिक्त किसी बड़े अपराध पर तीस तक बैंत लगाए जाते, हैं, इससे आगे बढ़ कर फांसी की सज़ा होती है।

जेल में आत्म हत्या।

भविष्य के लिए घोर निराशा, जेल की सज़ाओं की तङ्गी और काम की सख्ती से कई मनुष्य जीवन से लापर्वा हो जाते हैं, और आत्म हत्या करने का निश्चय कर लेते हैं। यद्यपि प्रतिदिन सांझ के समय तलाशी ली जाती है, रात को लैम्प हाथ में लिए वार्डर लाइन में फिरता रहता है, फिर भी वह रस्सी का टुकड़ा छिपा कर ले जाते हैं, अपना कुड़ता व जांघिया फाड़ कर छोटी सी रस्सी बना लेते हैं और बारी के जङ्गले से एक सिरा बान्ध कर दूसरे सिरे में एक फंसने वाली गांठ गले में डालकर लटक जाते हैं और दो चार सैकन्ड में काम हो जाता है। जो किसी वार्डर ने देख लिया तो वह शोर करता है, उधर से पहरे वाला सिपाही जेलर को बुलाता है और वे रात को ही आकर लाश को उतारते हैं नहीं तो दूसरे

दिन गिनती में एक आदमी कम होता है और कोठड़ियों में तलाश करने पर लटकता मुर्दा मिल जाता है। इस तरह की कई घटनाएं मेरे होते हुई, जो हृदय पर इतना प्रभाव डालती हैं कि हमारे रहने का स्थान जीवन और मृत्यु के बहुत ही निकट रह जाता है।

रोग आने पर प्रसन्नता।

वे क़ैदी जिन्हे जेल में बार २ जाने का प्रसङ्ग पड़ा है, एक ही इच्छा रखते हैं, कि किसी तरह काम न करना पड़े, चोरी पेशा लोग चोरी इसी लिए करते हैं। कि वे परिश्रम करके कुछ कमांना नहीं चाहते, वह स्वभाव से काम से जी चुराते हैं, इसलिए वे कई ऐसी युक्तियां लड़ाते रहते हैं, जिन से कि वे काम से अपने आप को बचा सकें। सब से पहले तो जब महीने के अन्दर वज़न का दिन आता है, तीन दिन उस से पहले वे खाना घटा देते हैं, और बहुत से तो खाते ही नहीं और उस रात सोते नहीं ताकि उनको वज़न न बढ़ जाए, वे सदैव अपने आप को दुर्बल करके वज़न कम करना चाहते हैं, ताकि उनको हलका काम दिया जाय। परन्तु इससे आगे बढ़कर उन लोगों के अन्दर ऐसे "डाक्टर" होते हैं जो शरीर में रोग बनाना जानते हैं। साधारणतया हम रोग को दुखका बड़ा कारण समझते हैं और इससे जहां तक हो सके बचना चाहते हैं, परन्तु जेल की अवस्था इससे विपरीत होने के

कारण ऐसे आदमी बहुत से पाए जाते हैं जो रोग आने पर प्रसन्न होते हैं, क्योंकि उन्हें हस्पताल में दाखल होकर काम से छूट जाने का अवसर मिलता है और ज्यों २ डाक्टर इलाज करके उनको चङ्गा करने का यत्न करता है। वे उसके विरुद्ध कुपथ्य करके रोग को लम्बा करने का प्रयत्न करते हैं। जेल के डाक्टरों को रोग और रोगी दोनों के विरुद्ध चलकर इलाज करना पड़ता है।

इन लोगों के वास्तविक डाक्टर वे पुराने क़ैदी होते हैं, जो कि वे युक्तियां जानते हैं जिनसे रोग बनता व बढ़ता है। जिन को ऐसा कोई डाक्टर नहीं मिलता और वे काम से बहुत तङ्ग आते हैं तो एक साधारण सा उपाय यह किया जाता है, कि क़ैदी ग्लास के टुकड़े को महीन पीस कर खा जाता है। ग्लास का चूर्ण अन्दर जाकर अन्तड़ियों को फाड़ देता है और अन्दर से लहु जारी हो जाता है। प्रथम तो वह ऐसा घातक सिद्ध होता है कि उसकी जान चली जाती है, नहीं तो कई महीने हस्पताल में पड़ा रहता है। इसी प्रकार कई आंख के अन्दर चूना डाल कर उसमें घाव कर लेते हैं, जिस से या तो अन्धे हो जाते हैं अथवा कुछ समय उन्हें काम से छुट्टी मिल जाती है।

वे "डाक्टर" क़ैदी अपने पास तीन दवाइयां रखते हैं। एक तो लाल रत्ती है जो कि घाव करने में काम आती है। इसे पीस कर धागा इसमें भिगो कर सुखा लिया और एक

सुई से टाङ्गों पर अथवा बाज़ू में किसी स्थान से सूई को गुज़ार कर धागा उसमें डाल दिया। रात के अन्दर बड़ी भारी सूजन और घाव बन जाता है और फिर धागा निकाल लिया जाता है। दूसरी वस्तु "जमालगोटा के बीज" हैं। यह एक दो पीस कर खा लेने से लहु के दस्त आने लगते हैं, और मनुष्य इतना दुर्बल हो जाता है कि कई दिन तक पड़ा रहता है। तीसरी वस्तु "सफ़ेद कनेर की जड़ का छिलका है। इसको पीस कर गुड़ के साथ चने के बराबर गोलियां बनाई जाती हैं। वह गोली खा लेने से दो तीन घण्टे के अन्दर बड़े ज़ोर का बुख़ार आता है, और थर्मामीटर में हरारत बहुत बढ़ जाती है, वह बुख़ार फिर आप ही उतर जाता है। इन तरीक़ों से डाक्टरों को धोखा देने का यत्न किया जाता है। अनुभवी डाक्टर इन्हें तत्काल पहचान लेते हैं, पर कुछ कर नहीं सकते। हां, कई ऐसी हालतें होती हैं कि जब डाक्टर घाव अच्छा करता है और क़ैदी उसे फिर बना लेता है, तो डाक्टरों ने क़ैदियों के पांओं व टाङ्गें काट दी हैं। कई क़ैदी ऐसा यत्न करते हैं कि अन्धे हो जाते हैं। उनकी प्रकृति उन से यह सब तमाशे कराती है, यह कहा नहीं जा सकता कि इस में उनका दोष कहां तक है।

१८--जेल की शिक्षाएं ।

सब से पहली शिक्षा जो जेल में हम सीखते हैं, वह एकोनामिक शिक्षा है, कि प्रत्येक वस्तु का मूल्य उसकी अन्द-रूनी विशेषता के अतिरिक्त उसकी प्राप्ति की कठिनाई पर निर्भर करती है, और प्रत्येक वस्तु का अच्छा व बुरा होना मनुष्य के अपने विचार के अनुसार होता है ।

पञ्जाब में तेल अभी तक भी खुराक का अंग नहीं है । इसका खाना घी का इतना मँहगा होने पर भी बुरा समझा जाता है । परन्तु जेल की दाल तरकारी में ४ ड्राम तेल प्रति क़ैदी के हिसाब से डालने का हुक्म है । कुछ समय तक तेल का स्वाद बुरा लगता है, परन्तु जल्दी ही समय आजाता है जब कि उसका स्वाद भी घी के समान मालूम होता है । और क़ैदी यत्न करते हैं कि उन्हें दाल का ऊपर का हिस्सा मिले जिस में तेल तैरता होता है । बहुतेरे वार्डर और पेटी अफ़सर भण्डारियों को कुछ सूखा दे देते हैं और अपने लिए तेल निकलवा कर तरकारी बनवा लेते हैं । तेल वाली खुराक जेल में बड़ा स्वादिष्ट और एक पदार्थ समझा जाता है ।

दूसरी वस्तु जेल में "गुड़" बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है । तेल तो सरकारी तौर पर भण्डार से मिलता है, परन्तु गुड़ जेल में नहीं आ सकता । चीनी तो अत्यन्त दुष्प्राप्य वस्तु है । परन्तु गुड़ सस्ता होने से कोई २ क़ैदी चोरी से

अन्दर मंगवा लेता है। इसलिए थोड़ासा भी किसी को देकर इतना अहसान करता है, मानों बड़ी जागीर देदी।

हमें वहां जेल में कई महीने बीत गए थे। संयोग से एक क़ैदी मेरे पास प्याज़ का आधा टुकड़ा ले आया। मैंने उस समय तक जेल में प्याज़ नहीं देखा था वह मनुष्य बड़े प्रेम और आदर के साथ उपहार लाया। यद्यपि मैं अपने आप को खाने के लालच में न फंसाना चाहता था, परन्तु फिर भी उसकी सूरत ऐसी प्यारी मालूम हुई कि मैंने उसे ले लिया, मुझे उस समय मालूम हुआ कि परमेश्वर ने जो इतनी तुच्छ सी वस्तु हमारे लिए उत्पन्न की है उसका मूल्य सचमुच हमें तब ही मालूम हो सकता है जब कि कुछ समय तक हमें उससे वञ्चित रखा जाए।

असीम सुख प्राप्त करने का उपाय।

जहां पर कोई वस्तु भी प्राप्त न हो सकती हो, वहां किसी एक वस्तु की प्राप्ति के लिए मन में इच्छा उत्पन्न करना अपने आपको विपत्ति में डालना है। इस अवस्था में विवश हो कर एक नियम बनाना पड़ता है, कि जिन इच्छाओं के पूरा होने की कोई सम्भावना नहीं, वहां उनकी जड़को उखाड़ देना चाहिए। आवश्यकता न रखने से ही आवश्यकताएं पूरी की जा सकती हैं। ऐसी अवस्था में मनुष्य के लिए दो रास्ते होते हैं। एक तो मन में लड्डू पकाता रहे और आवश्यकताओं को फैलाता हुआ अपने हृदय के दुख को बढ़ाता जाए,

दूसरा रास्ता इच्छाओं को मार देने का है। प्रायः! यह हुआ करता है कि जो वस्तु मनुष्य से परे हटाई जाती हैं, बालकों की तरह उसी को पाने के लिए जी करता है, परन्तु यह दुख का रास्ता है। कोई २ भला पुरुष होता है, जो कि दूसरा रास्ता ग्रहण करता है, और कुछ काल उस पर अभ्यास करने पर उसे हिन्दु अथवा बौद्ध शास्त्रों की सच्चाई की क़द्र मालूम होती है, कि किस तरह तृष्णा को मार देने से ही असीम आनन्द को प्राप्त कर सकते हैं।

जब तुच्छ सी सांसारिक वस्तु का मूल्य जेल में इतना बढ़ जाता है, तो वह जीवन जिसे मनुष्य इतना मूल्यवान् समझता है, जेल में उसका मूल्य कहां तक पहुंच जाता होगा, यह अनुमान किया जा सकता है। बात तो यह है कि जिस जीवन के वापस मिलने की कोई आशा न हो उसके दोबारा मिल जाने के मूल्य का कोई अनुमान नहीं लगा सकता। इस जीवन को पाने के लिये मनस्वी कैदी अपने प्राणों को जोखों में डाल देते हैं। जेल के अन्दर से भी जंगला काट और दीवारें फांद कर बाहर निकल जाते हैं। परन्तु जो क़ैदी बाहर टापुओं में काम करते हैं उनके लिये जंगल में भाग जाना बहुत ही आसान है। इन जंगलों में जंगली लोग रहते हैं, जोकि ज्यों ज्यों जंगल कटते जाते हैं, उन से परे हटते जाते हैं। एक बार भाग कर उनके पास चले जाने के यह अर्थ हैं कि या तो वे उसे मार देंगे या वह

उनके पास स्वतंत्रता से रह जायेगा। कई आदमियों ने जंगल में भाग कर अपनी खेती बना ली है, और वहीं पड़े पड़े दिन बिता दिये हैं।

हे परमेश्वर ! एक बार तो स्वदेश की मिट्टी दिखा दे।

इसके साथ एक और भाव जो कैदियों के हृदय में चुटकियां लेता रहता है, वह एक बार फिर अपने देश को देखने का होता है। मैंने देखा, बड़े २ प्रसिद्ध बदमाश कैदी अपने घर और देश की याद में रो पड़ते हैं, और ठंडी सांसे भरते हैं कि उन्हें कभी फिर अपने गाओं की मिट्टी देखने का अवसर मिलेगा। मनुष्य स्वदेश को प्रेम भी तब ही सीखता है जब उसे स्वदेश से अलहदा कर दिया जाता है। जैसे दुख में पड़ने से सुख का मूल्य जान पड़ता है ऐसे ही देश निर्वासित होने से देश की याद आती है। सोए हुए कैदी बड़बड़ा उठते हैं।

"हे परमेश्वर ! एक बार तो स्वदेश की मिट्टी दिखा दे"

इस भाव की सच्चाई हम इस तरह देखते हैं कि एण्डेमान भारतवर्ष से कोई एक सहस्र मील के लगभग दूर हैं, बरमा से भी कई सौ मील समुद्र के बीच में हैं। फिर भी भागे हुए कैदी जङ्गल में से बांस काटकर इनको इकट्ठा बांधते

जाते हैं और इनका एक लम्बा चौड़ा तख्ता बांध कर समुद्र में डाल देते हैं। इसे वे बेड़ा कहते हैं। आटा और जल पास रख लेते हैं। कभी २ एक तरह का बांस रख लेते हैं जिसकी नाली में जल डाला जाता है, वह काट रास्ते के लिए पानी निकाल लेते हैं। यदि वायु का प्रवाह अनुकूल मिल जाय, और उनकी प्रारब्ध अच्छी हो और वह उस ढूंढने वाले जहाज़ से बच जाए जो कि सरकार की ओर से ऐसे भागे हुए कैदियों को पकड़ने के लिए समुद्र में फिरता रहता है, तो वह बरमा व मद्रास के किनारे जा लगते हैं। कई तो इस यत्न में समुद्र के अन्दर डूब जाते हैं, और कई और किनारे पर पहुंचने पर गांओं के लम्बरदारों की रिपोर्ट पर गिरिफतार हो जाते हैं, कदाचित् कोई बच कर निकल भी जाता है। अठवारों और महीनों के लिये अपने आपको बिना किसी साधन के देश जाने के लिए समुद्र में डाल देना आश्चर्य्य जनक साहस का काम है॥

जर जोरु ज़मीन।

साधारणतयः कैदियों की दो बड़ी श्रेणियां कही जा सकती हैं। एक तो वह जहां आपस की लड़ाई अथवा बलवा होता है और उस से खून हो जाता है। इस तरह की लड़ाई की जड़ में प्रायः! ज़मीन का झगड़ा अथवा स्त्री के सम्बन्ध में मामला होता है। इन लोगों के मुकद्दमे के

हालात एक ही तरह के होते हैं। किसी स्त्री के चाल चलन के सम्बन्ध में कोई सन्देह होता है, उस से बदनामी होती है उसे कतल किया जाता है अथवा उसके यार को मार दिया जाता है। ज़मीन के सम्बन्ध में पड़ोसियों के साथ वैमनस्य होजाता है। दोनों ओर से एक दूसरे के पक्षपाती इकट्ठे हो जाते हैं, और लड़ाई में कोई खून होजाता है, कोई घायल हो जाते हैं। इस प्रकार के अपराधों की जड़ एक दूसरे की भूल, क्रोध और ईर्षा होती है। दूसरी तरह के अपराध माल अथवा सम्पत्ति के विरुद्ध होते हैं, इनकी तय में काम करने वाला भाव केवल एक ही लालच का होता है जिस से कि दूसरे का माल मुफत में हाथ आजाए। माल को उड़ाने के लिए इन लोगों ने कई युक्तियां निकाली हैं। सब से सादी युक्ति तो चोरी की है, जिस में एक या दो आदमी मिलकर रात को किसी के घर में छुप रहते हैं, और जो कुछ मिल गया; ले भागते हैं। जब इन आदमियों की संख्या बढ़ जाती है और वह सशस्त्र होकर जाते हैं, और यदि कुछ लोग इनके विरुद्ध उठें तो वह लड़ने के लिए तैयार होते हैं, शस्त्रों से धमकी देकर सब माल का पता कर लेते हैं, और बलात् लूट कर ले जाते हैं, तो वह डाकू कहलाते हैं। यदि इन डाकुओं में कोई असाधारण साहस का आदमी लीडर बन जाता है तो वह पोलीस और सरकार के साथ भी मुकाबला करते हैं, और जङ्गलों में अपने छिपने के ठिकाने बना लेते हैं।

अधिक चतुर आदमी वे हैं जो कि भेस बदल कर फिरते हैं और लोगों को धोखा देकर उनका माल उड़ाते हैं। यह लोग एक तरह के ठग होते हैं। एक आदमी ने मुझे बताया कि वह अपने गांओं में बड़ा रोब दाब वाला सैय्यद था। लोग उसे बड़ा करामाती समझते थे। उसके विषय में एक विशेष बात प्रसिद्ध थी कि वह साधारण धातुओं से सोना बनाना जानता है, और सच्ची बात यह है कि उसके आस पास दो तीन ज़िलों के इलाकों में उसने कोई एक सौ से ऊपर एजन्ट रखे हुए थे। जो कि एक तरह की गुप्त सोसायटी थी। जब कभी उसका कोई एजन्ट चोरी का अवसर पा लेता था, वह उसे खबर देता था। वह उसी रात जाता था और चोरी का माल लेकर प्रातःकाल से पहले ही वापस आ जाता था। दिन भर क्योंकि वह घर में ही रहता था, कभी किसी को संदेह ही नहीं हुआ कि वह रसायणी ही नहीं, प्रत्युत बड़ा भारी चोर है। इसका एजन्ट पकड़ा गया और उसने अपने बचाओ के लिए पोलीस को इस सारे षड़ यन्त्र की खबर दी। एक आदमी ने मुझे बताया कि वह "जैन्टलमैन" चोर था। कोट पतलून अच्छी पोशाक पहन कर रेल में सफ़र करता था। अवसर पाकर सैकन्ड क्लास व डयोढ़े दर्जे में जा बैठता था। उसके पास एक ऐसी तेज फौलादी कैंची रहती थी जो कि लगाते ही कपड़ा आदि काट सकती थी। जेब कतर लेता था अथवा दो स्टेशनों

के बीच सोए मुसाफिर का ट्रंक अथवा बैग गिरा देता था और दूसरे स्टेशन से उतर कर उधर जाकर उसे ले लेता था।

कई आदमी एक मुकदमे में सज़ा भुगत कर आए थे जिन्हों ने ठगों की एक कम्पनी बना ली थी। बम्बई में उनके साथी ने व्यापार के लिये एक कोठी बना ली। वह खयाल रखता था कि कब और किस गाड़ी में कोई आदमी बहुत सा रुपया व माल लेकर जाता है और वह इस बात की सूचना अपने साथियों को दे देता था। वे उस गाड़ी में सवार हो जाते थे, और जहां कहीं अवसर मिलता था वह सामान लेकर चम्पत हो जाते थे। कई वर्षों तक यह ठगों की कम्पनी बड़े २ सौदागरों को लूटती रही। ऐसे तो कई आदमी थे जिनके पास पोलीस की वर्दियां थीं, और कई आदमी मिलकर पोलीस अफसर और कान्स्टेबल बन जाते थे। साहूकार के मकान पर गये, और कहा, तुम्हारे मकान पर चोरी के माल का पता मिला है। तलाशी लेनी शुरू की, ज़ेवरों को लिया और चलते बने।

साधु के वेष में ठगियां।

बहुत से ऐसे आदमी हैं, जो कि साधु का वेष बना लेते थे और जाकर घरों के पास रहते थे या तो उनका पेशा विष देने का था, मालिक मकान को ज़हर दिया और माल

लेकर चल दिये, और जो बहुत ठग हुए तो गांओं में ठहरे रहे किसी विधवा अथवा जवान लड़की को बहकाकर साथ ले गये, और कहीं जाकर किसी के पास बेच दिया। एक साधु था जो कि अपने झोले में एक बर्तन रखता था। उस बर्तन पर लाल और पीला कपड़ा चढ़ाए था। किसी न किसी को अपने जाल में फंसा लेता था कि वह चांदी को सोना बना सकता है। कहता था कि इस तरह का बर्तन लो, इस पर लाल और पीला कपड़ा चढ़ा दो। सब चांदी के गहने बर्तन में डालकर ले आओ। उस बर्तन को भूमि में गाड़ कर उस पर अग्नि आदिक जला कर मन्त्र पढ़ता था। परन्तु भूमि में दबाते समय अपने झोले वाला बर्तन उसकी जगह बदल देता था और वह बर्तन अपने झोले में डाल लेता था। रात को लेकर चल देता था। तीर्थों के ऊपर साधु बने हुए यात्रियों के माल पर दृष्टि रखते थे। एक साधु स्थान स्थान पर बड़ा हवन कराता था, और हवन की आग में "दुर्गा" सिंह पर चढ़ी हुई का प्रत्यक्ष दर्शन करा देता था, जिस से देखने वाले आश्चर्य्य चकित रह जाते थे। और लोगों से देवी को प्रसन्न करने के लिये रुपया ठगता था। उसने उंगली में एक अंगूठी रखी थी। उस अंगूठी के अन्दर शीशे में एक अत्यन्त महीन मूर्ति दुर्गा की बनी थी। वह शीशा सामने करने पर उसका बड़ा सा प्रतिबिम्ब अग्नि की शिखा पर पड़ता था।

तीर्थों पर ठगों के दल थे। जिन में दो चार आदमी एक को महन्त बनाकर बैठ जाते थे, और उनके दो तीन साथी आने वाले रास्ते पर बैठ जाते थे। यात्रियों का समूह आता देखकर उनके साथ मिलकर उस साधु की बड़ाई करने लगते थे। जब उसके पास पहुंचते तो स्वयं जाकर उसके पाओं पर गिर जाते थे और कुछ रुपया फेंक देते थे। शेष यात्री भी उनकी देखा देखी कुछ न कुछ भेंट करते थे। ऐसे ठगों का रहस्य एक ही है, वह दूसरों को साथ मिलाकर लोगों को धोखा देने के लिये गुप्त साजिश में मिलाता है। पंथ चलाने वालों ने भी इस युक्ति को काम में लिया है।

यात्री चले आते, वह फिर सड़क पर दो मील जाकर खड़े हो जाते। इन्हीं लोगों में जाली नोट और चैक बनाने वाले और जाली रुपया बनाने वाले भी हैं। खास कीड़ों की सूराख की मिट्टी लेकर उसमें गोंद फल मिलाकर उसका रुपया और पौण्ड आदिक सांचा बना लेते हैं। इन सांचों में मिली हुई धातें डालकर झूठे सिक्के बना लेते हैं। इन्हीं लोगों में बच्चों को बहकाने वाले भी सम्मिलित हैं, जो बड़ी २ सुन्दर कांच की गोलियां और लड़कों के खेलने वाले गेंद अपने पास रखते हैं। गाओं में व गली में जाते हैं। बच्चों को दिखा २ कर अपने साथ २ अकेली जगह में लेजाते हैं और गहना आदि उतार कर चम्पत हो जाते हैं।

सुनार और सराफ़ नहीं रहने चाहियें ।

प्रायः सब प्रकार के चोरों और ठगों से पूछने पर एक शिक्षा जो मुझे मिली, वह यह थी कि इन सब अपराधों का आरम्भ प्रायः गहने बनाने वाले सुनारों और अन्त में खपत या तो सुनारों द्वारा या सराफ़ों द्वारा होती है। केवल यह दो सोसाइटी का रक्त चूसने वाली श्रेणियां हैं, जो कि रुपये पैसे वाले लोगों की चाबी जानते हैं। पैसे वालों से उनकी आमदनी और आजीविका चलती है और उन्हीं को ही यह चोरों और डाकुओं के शिकार बनाते हैं। सम्भव है सोश्यलिज़्म धन को बराबर बांटकर इन अपराधों को दूर करने का उपाय सिद्ध हो। परन्तु जब तक सोश्यलिज़्म का राज्य आता है, पैसे वाले लोगों का बचाओ इसमें है कि दोनों श्रेणियों को सोसायटी से बाहर निकाल देवें।

(१९) युद्ध की समाप्ति।

(जेल में समाचार पत्र)

पोलिटिकल क़ैदियों के लिये एक मेहरबानी चीफ़ कमिशनर की ओर से अथवा सुपरिन्टैन्डैन्ट की ओर से की गई, और वह यह थी कि युद्ध काल में उनको लण्डन का साप्ताहिक पत्र टाइम्स पढ़ने के लिये मिलता था। मैं समझता

हूं कि चाहे यह अकेली रियायत थी तो भी जेल में और युद्ध का तमाशा होते हुए यह इतनी बड़ी थी कि इस में सारे दुःखों का बदला चुक जाता था। जेल की पालिसी के विचार से यह आवश्यक था कि हमको अपने देश के हालात का कुछ पता न लगे। इस लिये देश का कोई समाचार कदाचित् ही कभी देखने में आता था। यद्यपि देश के सम्बन्ध में मोटे मोटे हालात का पता किसी न किसी तरह यदि जल्दी नहीं तो समय पाकर हमें लग जाता था, देश में कोई न कोई समाचार पत्र स्वतंत्र लोगों के हाथ में आजाते थे, और बाहर से कोई न कोई कैदी जेल में आते रहते थे। इन लोगों के बयान बड़े २ चढ़े और अपने विचारों के रंग में रंगे हुए होते थे। कुछ समय हमें वहां रहने पर कैदियों की बातों में से सच और झूठ में पहचान करने का अभ्यास होगया था। इसके अतिरिक्त हमारे किसी न किसी आदमी की चिट्ठी प्रायः आती रहती थी उससे भी कुछ हालात मालूम हो जाते थे।

एक ही इच्छा शेष थी !

मैं पहले कह चुका हूं कि मुझे यदि जीने के लिए कोई इच्छा शेष थी। तो केवल इसलिए कि युद्ध का तमाशा देख सकूं। यह युद्ध मानव इतिहासका में लासानी हुआ। हमने सुना है कि महा भारत के युद्ध में सारे जगत् के राजाओं ने एक ओर व दूसरी ओर हिस्सा लिया था, वह तो दूर

की बात है, पुरानी है, उस समय कदाचित् संसार में मनुष्यों की संख्या थोड़ी थी। परन्तु जगत् की वर्तमान अवस्था में, जब कि मनुष्य ने भूमि के चप्पा २ भाग पर अपना स्वत्व जमा लिया है, और भूमि को छोड़ कर जल और वायु पर भी अपना प्रभुत्व बैठाने का यत्न किया है। इस अवस्था में जब कि उन्नत जातियों का आपस में मुकाबला हो, तो समस्त संसार का इस में सम्मिलित होना आवश्यक था ऐसा ही हुआ भी। संसार का कोई देश न रहा, जिसने इस युद्ध में कुछ २ साथ न दिया हो। इस संग्राम की जड़ जिस में बड़ी जातियां अपने विनाश के भय से कांपती रही, के सम्बन्ध में साफ़ कहा जा सकता है कि युरोपियन सभ्यता की पराकाष्ठा थी। युरोप की जातियों का आदर्श एक ही रहा है, कि जिस किसी तरह हो सके दूसरों से धन दौलत लूट कर अपने आपको आगे बढ़ाया जावे। इस दौड़ के मैदान में कुछ जातियां आगे बढ़ गई। जर्मनी को इससे दुख हुआ, कि वह पीछे रह गया। जर्मन लोगों ने संसार की विजय में अपना आसन बनाना चाहा। पिछले इतिहास के अनुसार उनका नियम यही था कि संसार में "बल" की जीत है, और युद्ध शक्ति के भरोसे उन्हों ने संसार में एम्पायर स्थापन करना चाहा। इसका मुकाबला करने के लिये इङ्गलैण्ड आदि जातियों ने संसार में आत्म निर्णय और जातिय स्वतंत्रता के नियम को सामने

रखा और अपने संग्राम की नींव इसी नियम पर खड़ी की।

युद्ध का एक परिणाम

बोलशेविज़म!

युद्ध के पीछे की अवस्था यहां तक स्पष्ट ही दिखाई देती है कि संसार के पोलीटिकल चित्र में कुछ छोटी २ बातों के सिवा कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। जर्मनी अपने प्रयत्न में सफल न हुआ और वही पुरानी शक्तियां अपनी अवस्था में विद्यमान हैं। केवल एक ही परिवर्तन हुआ है जो कि युद्ध का एक ही परिणाम है, और जिसका प्रभाव सम्भव है संसार के भविष्य पर बहुत पड़े। वह रूस की क्रान्ति और रूस में "बोलशेविज़म" की उन्नति है।

मेरे हृदय की अवस्था।

निजके तौर पर मुझे दुःख होना चाहिये था कि अङ्गरेज़ी सरकार ने अथवा उस के प्रतिनिधियों ने हम पर व मुझ पर जुल्म और घोर अन्याय किया है, इसलिए हृदय से हमारी सहानुभूति युद्ध में इङ्गलैन्ड के विरुद्ध हो। परन्तु मैं सदैव अपने मन में यह समझता था कि जिस अवस्था में कोई स्टेट (गवर्नमैन्ट) खतरे में हो, वहां साधारण नियम बस हो जाता है और स्टेट की दृष्टि में किसी एक व्यक्ति के जीवन का मूल्य कुछ बड़ा नहीं रहता। अपनी रक्षा के लिये अथवा दूसरों के सामने उदाहरण रखने के लिए भी केवल सन्देह

पर स्टेट किसी मनुष्य के प्राण ले सकती है। जातियों अथवा गवर्नमैन्ट के इतिहास "व्यक्ति" की कुछ पर्वा नहीं की जा सकती।

जातियत्व की दृष्टि से मेरे हृदय में यह विचार था कि यद्यपि अङ्गरेज़ जाति ने हमें नीचे रख कर हमारे अधिकारों को दबाया हुआ है, परन्तु यदि इनके स्थान में जर्मन जाति आ जायेगी तो उनका अत्याचार किसी अवस्था में इन से कम होने की आशा न थी। हां, यदि दो जातियों के अन्दर भारत में आकर संग्राम हो जाता तो उस अवसर पर कदाचित् हमारे उठने का कोई सामान बन जाता। परन्तु युद्ध के अन्तिम चरण में जब इङ्गलैन्ड की ओर से भारत सरकार के सुधार की घोषणा की गई, तो हमारे मन में बड़ी आशा बंध गई कि युद्ध किसी न किसी तरह से भारत के लिये उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसलिए इसके साथ ही अपने लिए भी हमको आशा की एक झलक दिखाई देने लग गई। फिर रौलट कमिशन आया। उसकी रिपोर्ट में इस आशा को तोड़ दिया। फिर खयाल यह था, कि देखिए, क्या होता है।

युद्ध समाप्त हो गया। हमें जेल में घोषणा सुनाई गई कि शेष क़ैदियों को साल सज़ाके पीछे एक महीना माफ़ी का मिलेगा, और पोलिटिकल क़ैदियों के लिए अभी विचार किया जा रहा है। इसमें फिर कुछ आशा का स्थान निकल

आया। इतने में मालूम हुआ कि देश में रौलट ऐक्ट के विरुद्ध बड़ी एजिटेशन है और विशेषतया पंजाब में बड़ा उत्पात हुआ है। हिन्दु मुसलमानों ने एकता करली है। फिर समाचार मिला कि पञ्जाब के ज़िलों के लीडिंग वकील सब जगह गिरिफ़तार हैं और बहुत से मुकामों पर मार्शलला हो गया है।

देशके अन्दर आश्चर्य्य जनक परिवर्तन देख हम चकित हो रहे थे कि इतने में मार्शलला के कैदियों का एक दल तीस आदमियों का वहां पहुंचा। उन्हों ने आकर अमृतसर लाहौर गुजरांवाला वज़ीराबाद आदिक की घटनाएं सुनाईं। यद्यपि यह मालूम होता था कि देश के लोगों में जागृति सी उत्पन्न होगई है, परन्तु सरकार की पालिसी दबाने वाली थी और यह नज़र आता था कि हमें अब शेष आयु जेल में काटनी होगी।

मेरे हृदय में हलचल, अब जीने का क्या लाभ। मेरे हृदय में एक विशेष बेचैनी सी उत्पन्न हो रही थी। मैं प्रति क्षण यह सोचता था कि अब अधिक समय जीवित रहना चाहिये अथवा जीवन का अंत कर देना चाहिये। जेलके बंधन में जीवन को बनाए रखना जीवन के अनुचित मोह को प्रगट करता है। केवल यही एक मनुष्य का भाव था जिस से लाभ उठाकर इतने आदमियों को पशुओं से भी बुरी दशा में रखा जाता है और वे रहना पसन्द करते थे।

तो फिर जीवित रहने की आवश्यकता क्या थी ? पहले तो युद्ध का तमाशा देखने का विचार था, वह खेल तो समाप्त होगया । अब शेष क्या था । कई यह कहते कि देश में बहुत शीघ्र परिवर्तन हो रहा है, इसे देखना चाहिये । यदि इसे देखना उचित था तो इस तरह तो प्रतिक्षण संसार में कोई न कोई बात होती ही रहती है, और यही तरह २ की बातों की इच्छा ही जीवन की ममता है । मैं अपने आपको इस मोह से मुक्त करना चाहता था, इतने में खबर आई कि मार्शलला के अत्याचारों की पड़ताल करने के लिए जो कमेटी नियुक्त हुई थी, उसके सामने एक सच्चे अङ्गरेज़ जनरल डायर ने सच २ बयान दे दिया है । और इस पर इङ्गलैन्ड में एक हल चल सी मच गई है । ऐसा मालूम होता था कि इङ्गलैन्ड के अन्दर अङ्गरेज़ों का एक दल ऐसा भी था जो समझते थे कि जर्मनी के प्रथम आक्रमण के अवसर पर यदि भारतीय सेना सहायता को न पहुंचती और वीरता से जान न देती तो फ्रांस का बचाओ कठिन था । वह सचमुच भारत के प्रति कृतज्ञता के भाव रखते थे । उनके हृदय जनरल डायर की बातों से चिहुंक उठे । और उन्हों ने भारत के साथ इस वर्ताव पर संसार में मुंह दिखाने का कोई स्थान न देखा । सर माईकल ओडवायर की सब करी कराई कूपं में पड़ गई । माईकल ओडवायर ने पांच वर्ष पर्य्यन्त जो कि युद्ध का ज़माना था पञ्जाब में लोहे का सिक्का जमाया था ।

उसके हृदय में एक ही विचार था कि पञ्जाब के लोग केवल भय से दबाए जाकर अच्छी तरह राज भक्त रह सकते थे। अपने शासन काल में वह उचित अनुचित बड़े गौरव से कहा करता था कि उसके समय में पञ्जाब जैसा सूबा कोई लायल नहीं रहा और पञ्जाब की भर्ती ने एम्पायर को बचा लिया। यह सब कुछ सत्य हो, परन्तु धमकी और दबाव की भी कोई मर्य्यादा होती है। जहां पर वह दावा करता था कि मैं पञ्जाब के लोगों के करैक्टर को खूब पहचानता हूं, वास्तव में उसने अपने कुछ जी हुजूरियों को ही पञ्जाब का प्रतिनिधि समझा हुआ था, जिनको साधारण जनता हृदय से घृणा करती थी। वह एक बड़ा "हीरो" और योग्य शासक की स्थिति में वापस चला जाता, यदि वह एक वर्ष और ठहरने की अनुमति न लेता। उसने इसका सब कुछ बना बनाया नष्ट कर दिया। शासन के आरम्भ में ही उसकी पालिसी क्रोध और डाह से भरी हुई थी। उसकी पराकाष्ठा मार्शलला में हो गई। और जनरल डायर के सच्चे बयान ने इसे पबलिक में प्रगट करके उसके गौरव और दावों पर धूल डाल दी।

मृत्यु के लिये तय्यार होने वाली घटना।

जिन दिनों पञ्जाब के विषय में यह हो रहा था, मेरे सम्बन्ध में जेल में एक घटना हुई जिसने मुझे अंतिम निश्चय करने पर विवश कर दिया। ऐन्डेमान की गवर्नमिन्ट चीफ

कमिश्नर के हाथ में है। हमारे समय में एक साहब कर्नल 'डग्लास' इस अधिकार पर रहे। पोलिटिकल क़ैदियों के सलूक का सब मामला उनकी अपनी आज्ञा से होता था। यह साहब पञ्जाब में डिप्टी कमिश्नर रह चुके थे और सर माईकल के बड़े मित्र थे। तीन महीने की छुट्टी पर वह लण्डन गये। उसके पीछे मेजर मरे सुपरिन्टैन्डैन्ट ने जो कि मुझ पर दया दृष्टि रखते थे अपने अधिकार से मुझे हस्पताल में कम्पौन्डरी के काम पर लगा दिया। चीफ कमिश्नर हर तीसरे महीने जेल में दौरे पर आया करता था। वापसी पर वह जेल में आए और मुझे हस्पताल में देख कर आग वगूला हो गये। इस विचार से कि उनकी आज्ञा के बिना इतना अंधेर क्यों किया गया है। साथ ही मुझे संदेशा दिया कि सर माईकल ओडवायर मुझे याद करते थे। उन्हों ने पूछा था कि "क्या अभी वह जिन्दा है? वह तो वहां...... होना चाहिये था कुछ दिन पीछे मेजर मरे छुट्टी पर चले गये और पञ्जाब के ट्रिब्यून अखबार में मेरी भेजी हुई चिट्ठियों में से कुछ लेख किसी मज़मून में छाप दिया गया। चीफ कमिश्नर साहब को यह रिपोर्ट पहुंची और इस बहाने पर उन्हों ने हुक्म दिया कि मुझे हवालात में बंद कर दिया जावे। अचानक सायंकाल को ज़ेलर हवालदार और जमादार आदिक इकट्ठे होकर आए। मेरी सब तलाशी ली और मुझे हवालात बंद कर दिया। मुझे कुछ मालूम न था,

और न बताया गया कि ऐसा क्यों किया जाता है। मैं मन म आगे ही सोच रहा था, मैंने अपने विषय में निश्चय कर लिया कि अब समय आगया है मुझे अपने पुराने संकल्प को पूरा करना चाहिए।

उपवास का आरम्भ।

वह संकल्प यह था कि खाना पीना छोड़ कर अपनी जीवन लीला को समाप्त कर दिया जावे। मेरा विचार कोई धमकी देने का अथवा डराने का नहीं था। वह केवल इतना ही था कि अधिक जीने की आवश्यकता नहीं। सात दिन रात उसी तरह पड़ा रहा। पहले दो दिन सारे शरीर के अन्दर विचित्र सी गति उत्पन्न हुई। टांगों के अन्दर नाड़ी और नसों में कुछ रेंगता सा अनुभव होता था। ऐसा प्रतीत होता था कि शरीर के इस भाग से कुछ निकल रहा है। हृदय में एक ही विचार था। मनुष्य की विचार शक्ति बड़ी विचित्र शक्ति होती है। उसके सामने सब प्रकार के दुख मात होजाते हैं। मैं समझता हूं जिन शहीदों के अङ्ग २ काटे गये उन्हें कुछ भी पीड़ा न होती होगी। कैसे वह भी दर्द और दुख से ऊपर हो जाता है जिसके सिर पर आरा रखे शरीर के दो टुकड़े कर दिए जाते हैं। एक संकल्प कर कर लो कि बस अब जीवित नहीं रहना है, सारे दुख दर्द अपने आप इसके आगे मंद पड़ जाते हैं, यह शेअर याद आते थे :—

(१)

ज़िंदगी अपनी फसाना है ज़माने के लिए ।
गुम हुए हैं हम यहां से याद आने के लिए ॥

(२)

मर गए लेकिन ज़िमीं पर नाम पैदा कर गए ।
जान जाने के लिए है मौत आने के लिए ॥

ऐसा विचार किए थोड़े ही दिन हुए थे कि जेल में सम्राट् की उस घोषणा की ख़बर आई कि सब पोलिटिकल क़ैदी छोड़ दिए जायेंगे। कुछ आदमियों ने मुझे कहला भेजा कि मैं अपना विचार छोड़ दूं। मैं अपने ऊपर मख़ौल कराना नहीं चाहता था। जीना और मरना कोई बच्चों का खेल नहीं। मेरा उत्तर था, यदि ऐसा होगा तो इतनी देर में बिना खाए पीए जीता रह सकता हूं। इन दिनों में दोनों समय खाना मेरे पास रखा जाता था और एक वार्डर दिन रात मेरी निगह-बानी करता था। जब छः सात दिन बीत गए तो डाक्टर को हुक्म मिला, और ट्यूब आदि सामान लेकर नाक के रास्ते दूध पेट में डालने के लिए आ कूदे। हाथ पाओं पकड़ कर नाक में से एक लम्बी रबड़ की नाली अन्दर डाल दी गई और पाईप के रास्ते दूध अन्दर डाल दिया गया। इसमें कष्ट होता था, परन्तु यह तो जेल का नियम है, बल से किया

जाता है । आठ सप्ताह तक ऐसा होता रहा । यह दो महीने मेरा मन संसार से सर्वथा विमुख रहा । मैंने एक दो महीने फांसी की कोठड़ी में गुज़ारे थे और दूसरा यह समय मृत्यु की तैयारी के लिए गुज़ार रहा था । मैं इन दोनों को असीम आनन्द समय समझता हूं । वह आनन्द एक रस रहने में था जब कि मन के अन्दर कोई विकार उत्पन्न न होता था । संसार की चिन्ताएं और झमेले सब पीछे रह गए और मैं अपने आप को उन से दूर आगे पाता था और सारा ध्यान एक ही बात पर जमता रहता था ।

क्या आत्म हत्या पाप है ?

इस अवसर में नया सुपरिन्टैन्डैन्ट आकर प्रायः मेरे साथ तर्कना करके मुझे यह विश्वास दिलाना चाहता था कि आत्म-हत्या पाप है ? और मुझे यह पाप नहीं करना चाहिए ।

मैंने उस से कहा आत्म-हत्या का पाप होना उस अवस्था में कहा गया है जब कि मनुष्य स्वतन्त्र जीवन गुज़ारता हो और अपनी उन्नति करने के लिए अथवा अपने कर्त्तव्य पूरे करने के लिए उसे अवसर और स्वतन्त्रता प्राप्त हो । जो बात कि बाहर संसार में पाप पुण्य है वह जेल के जीवन के लिए पाप व पुण्य नहीं हो सकता दूसरे शरीर के त्याग को पाप समझना आर्य्य जाति में नहीं पाया जाता । यहां

तो शरीर को कभी बड़ा मूल्य नहीं समझा गया। लड़कियां हंसती हुई अपने पति के साथ चिता पर चढ़ जाती थीं। कुमारिल भट्ट ने केवल एक पाप के प्रायश्चित्त के लिए अपने आप को तुष की अग्नि में जला दिया था। कालानूस एक ब्राह्मण केवल इसलिए चिता पर चढ़कर जलमरा कि उसके शरीर को ८० वर्ष के पश्चात् ज्वर आ गया और वह शरीर इतना मलिन हो गया कि रहने के योग्य न रहा।

इस प्रकार का वाद विवाद और बात चीत जब कभी वह दौरे पर आता था, होती रहती थी, कि इतने में मार्शल लाके कैदियों और चार बङ्गाली कैदियों की रिहाई का हुक्म आ गया। इन बङ्गालियों में से एक बनारस के षडयन्त्र के मामले में से था जो कि हमारे अभियोग की एक शाखा समझी थी। इसके पश्चात् कई लोगों ने मुझे कहला भेजा, कि अब मुझे हठ छोड़ देना चाहिए और साथ ही यह कि बाहर किसी समाचार पत्र में देखा गया था कि मेरी रिहाई का भी हुक्म हो गया है। फिर थोड़ीसी आशा उत्पन्न हो गई, जिस से संसार के साथ बन्धन की ज़ंजीर पड़ने लगी। फिर भी मैं यही चाहता था कि अन्तिम क्षण तक प्रतीक्षा करूं, कि एक दिन सुपरिन्टैन्डैन्ट ने इशारे से यह कहा कि "तुम्हें अब ऐसा न करना चाहिये। कई आदमी रिहाई हो गए हैं, मुमकिन है तुम्हारे लिए भी हुक्म आया हो, अगर तुम ऐसी हालत में रहोगे तो तुम्हारा वापस जाना मुमकिन नहीं होगा"

यह एक तरह से साफ़ इशारा था और मैंने यही उचित समझा कि यदि फिर अवसर मिलता है तो एक बार और इस शरीर से कुछ लाभ उठा लिया जावे। अंततः मैं खाना खाने पर राज़ी हो गया सुपरिन्टैन्डैन्ट ने चाहे दया से चाहे किसी और विचार से खाने का ऐसा विशेष प्रबन्ध किया कि तीन चार सप्ताह के अन्दर मेरे वज़न की हालत भी वैसी ही हो गई। मेरे जेल में जाने के पश्चात् प्रत्येक मास मेरा एक आध पौण्ड वज़न घट जाता था। खाना छोड़ने के समय कोई १४२ पौण्ड होगा। दो महीने के अन्दर १०० से कम हो गया। फिर कोई १२० पौण्ड तक पहुंच गया।

२०—जेल से रिहाई।

एक दिन प्रातःकाल उठकर नीचे उतरा था कि अचानक एक वार्डर बुलाने को आया। हमारे मुकदमें के १४ और आदमी भी वहां बुलाए गए। हम फाटक के पास खड़े वाट देखते थे कि सुपरिन्टैन्डैन्ट और जेलर दोनों आए। उनके हाथ में कुछ फ़ार्म थे। उन्होंने मुझे यह कहा कि पञ्जाबी ज़बान में इन लोगों को यह हुक्म सुनादो कि नीचे लिखी शर्तों पर उनकी रिहाई पञ्जाब गवर्नमिंट ने मंज़ूर की है। अगर उन्हें मंजूर है तो वे इकरार करें इन शर्तों पर अमल करेंगे वे शर्तें यह थी, कि सरकार के विरुद्ध कुछ न करना होगा। अपने ज़िले से बाहर डिप्टी कमिश्नर की इजाज़त से जाना

होगा जब तक कि पञ्जाब गवर्नमेंट उन्हें पूरी आज़ादी न देदे। यदि वे इनके विरुद्ध करेंगे तो उनको बाक़ी की सज़ा फिर दी जाएगी। उनके फ़ार्म छपे हुए थे जो मियादी थे अर्थात् कुछ एक नियत वर्षों के लिए थे। उनके लिए कोई शर्त न लगाई गई।

इसके पश्चात् एक टाइप की हुई चिट्ठी मेरे लिए थी कि मैं किसी ग़दर वाली अथवा अनारकिस्ट सोसाइटी में योग न दूंगा और सरकार की दया का कृतज्ञ हूंगा। मुझे इस प्रतिज्ञा में कोई उज्र न था, क्योंकि मेरा तो शुरू से बयान था कि मैंने किसी ऐसी सोसाइटी के काम में योग नहीं दिया। हम सब अपने २ अहाते में अपने कम्बल और कपड़े लाने गए, ताकि हम सब को उसके पश्चात् एक अहाते में रखा जाय।

इधर खुशी।

हमारे साथियों को इस घटना की सूचना मिल चुकी थी, वे सब दौड़े २ मिलने के लिए आए। वे तो सब खुशी से फूले न समाते थे। उनके मुख पर एक अलौकिक आनन्द बरस रहा था। परन्तु मेरे हृदय की अवस्था बहुत ही विचित्र थी। इस बात की खुशी थी कि यह एक नया जन्म हुआ। परन्तु नया जन्म होने से भी एक बात अधिक थी, कि नया जन्म लेने वाला जीवात्मा उस अवस्था में आता है जो कि

उसके लिए नितांत नवीन होता है, और उनके देखने में कोई विशेष आनन्द नहीं आता। पता नहीं, यह क्यों ऐसा है परन्तु मनुष्य का एक स्वभाव यह बन गया है कि उसके अपने पुराने ऐसोसिएशनज़ अर्थात् सम्बन्धों को देख कर विशेष आनन्द प्राप्त होता है, प्रत्युत यही इच्छा रहती है कि एक बार फिर उन स्थानों को देखना मिले, जहां पर कभी मैं फिरा करता था। उन आदमियों के चेहरे और उनसे बात चीत करने का अवसर मिले, जिनसे कि कभी मैं मिला करता था। इन सम्बन्धों की स्मृति ही वियोग को दुखदायी बनाती है, और उनको पाने का अवसर न केवल नया जीवन था प्रत्युत नया जीवन सुखों के अम्बार के साथ मिला हुआ था।

उधर शोक।

परन्तु एक शोक भी था, और वह यह था, कि उन मनुष्यों से वियोग था जिनके साथ कुछ काल से जीवन और मृत्यु, दुख और सुख, आशा और निराशा सांझी हो चुकी थी। इस विचार ने कि वह पीछे रह जायेंगे, मेरे आंसु बहा दिये, मैं उनकी ओर आंख उठा कर देख न सकता था। केवल उन्हीं लोगों के विषय में, जो मेरे मुकद्दमे के साथी थे, मेरी यह अवस्था न थी, प्रत्युत वहां के दूसरे बहुतेरे कैदियों के साथ भी जिनके साथ मेरा मेल जोल होगया था। इन लोगों में बहुत तो गिरे हुए आदमी थे, परन्तु कई उन में भी

ऐसे थे, जैसे गंदगी के ढेर में रत्न पड़ा हो। उनके अन्दर भी सेवा और प्रेम का भाव और अत्यन्त नम्रता पाई जाती थी, इनको छोड़ दो। उन कोठड़ियों और दीवारों को छोड़ते समय थोड़ी सी हसरत आती थी। फ्रांस की क्रान्ति के समय जब "बास्टील" का जेल तोड़ा गया तो उस में से एक कैदी निकाला गया, जो कि बीस पच्चीस वर्ष एक अंधेरी कोठड़ी में पड़ा हुआ चूहों के साथ खेला करता था। उनके साथ उसका प्रेम हो गया था। वही उसके पास आते थे। खाने में शामिल होते थे और उसका जी बहलाते थे। उसकी आंखें सूर्य्य का प्रकाश सहन नहीं कर सकती थीं और उसे अपनी दशा से इतना प्रेम हो गया था। कि वह दौड़ २ कर उस अंधेरी कोठड़ी में जाना चाहता था।

अपने साथियों के दूर से व पास से दर्शन करके मुझे गुरु हरगोबिन्द की बात याद आती थी। वह कितने उदार हृदय थे। वह समय भी इस समय से कितना निराला होगा जब कि हमारे अपने जैसे मनुष्यों के हाथ में अधिकार था। जब जहांगीर ने नाराज़ होकर एक अवसर पर हुक्म दिया कि गुरु हरगोबिन्द को ग्वालियर के किले में क़ैद कर दिया जावे। वहां और भी कई राजे क़ैद थे। गुरु का आदर और प्रतिष्ठा और लोगों की श्रद्धा और सादगी इतनी थी कि सैकड़ों चेले ग्वालियर जाते थे, और बाहर से किले की दीवारों को चूम कर, जिनके अन्दर उनका प्यारा गुरु था,

वापस चले आते थे। संयोग वश बादशाह बीमार होगया। उसकी बीमारी का कोई इलाज न होता था। उसको बताया गया कि उसकी बीमारी का कारण यह है कि उसने एक वली (परमेश्वर के प्यारे) को निरपराध कैद में डाल रखा है। उस ने उसी समय हुक्म दिया कि गुरु हरगोबिन्द को छोड़ दिया जावे। जब हुक्म मिला, तो गुरु हर गोबिन्द ने कहा कि वह तब किले से बाहर जावेंगे जब उनके सारे साथी जो कि इस क़िले में कैद थे रिहा कर दिये जायेंगे। बादशाह ने स्वीकार कर लिया और सब को छोड़ दिया गया।

पूर्वी रीत नीत में जहां कुप्रबन्ध और कुढंगापन सा पाया जाता है वहां इसमें अपना एक विशेष सौन्दर्य्य भी विद्यमान है। हमारी इस प्रकार की प्रार्थना आज कल कोई अर्थ ही नहीं रख सकती। केवल इतना संतोष था कि मैंने यह विचार किया कि यदि मुझ से हो सकेगा तो अपने साथियों की रिहाई के लिये मैं भी हाथ पाओं मारूंगा, और जिन उपायों से मैंने उचित समझा है उनके अनुसार काम काम करने का यत्न किया है।

फिर उसी जहाज़ पर।

दो दिन न बीते थे कि वही पुराना 'महाराजा' जहाज़ मद्रास जाने को तय्यार हुआ। हमको जेल से निकाल कर इस जहाज़ में लाया गया। बहुतेरे वहां के दुकानदार और

बाहर के कैदी थे, जिन्हों ने कभी हमें देखा न था और देखने का चाव रखते थे। आप और दूर से ही देखकर व हाथ जोड़ कर चले जाते थे। वहां के बाज़ार के लोगों ने चन्दा करके हम लोगों के लिए धोतियां कुर्ते और साफ़े दिये। और फल फुलवारी का टोकरा रास्ते के लिये पहुंचा दिया। यह भी करते हुए डरते थे। क्योंकि कैदी के देश में डर लगा ही रहता है। कोई बात भी जुर्म कही जा सकती है, परन्तु हमारी अवस्था अब दूर हो गई थी।

फिर भारत में।

दो मद्रासी डाक्टर वहां से छुट्टी पर जहाज़ में आ रहे थे। रास्ते में उनके साथ भेंट हुई। उन में से एक कुछ समय के लिए जेल में रह चुका था, मद्रास के लिए मेरे हृदय में चिरकाल से असाधारण प्रेम चला आता था, मद्रासियों को मैंने अफ्रीका में देखा, बरमा में देखा, मद्रास में देखा, ऐन्डेमान में देखा, भारत के सारे प्रान्तों में से मैं मद्रासियों को समझता हूं, जिनके अन्दर दूसरे प्रान्तों के लिए प्रेम का भाव सब से बड़ा है। मद्रास बङ्गाल की अपेक्षा दूसरे दर्जे पर है। मैंने आगे भी कई बार समुद्र यात्रा की थी। अफ्रीका, अमरीका, यूरुप, बरमा आदि देशों में मैं जा चुका था। ऐन्डेमान रहता था, तीन दिन के पश्चात् जहाज़ किनारे पर आ पहुंचा, ऐण्डेमान की पोलीस ने हमें विशेष चौकस के

साथ मद्रासी पोलीस के हाथ दिया, और नगर के एक थाने में लाए गए। रात्रि भर हम वहां रहे, खाने के लिए सामान दे दिया गया दूसरे दिन प्रातः काल पोलीस कमिश्नर के दफतर में हाज़र हुए, वहां से हमें प्रत्येक मनुष्य का खर्च खुराक दिया गया, और दूसरे दिन सवेरे पोलीस इन्सपैक्टर स्टेशन पर आए, और लाहौर और अमृतसर के तीसरे दर्जे के टिकट खरीद कर हमारे हाथ दिए, मद्रास के सी० आई० डी० के अफ़सर अपने इलाके तक हमारे साथ आते रहे और अपनी ओर से हमें सब प्रकार का सुख देने का यत्न किया।

खुफ़िया पोलीस हमारी शत्रु नहीं।

मेरी सम्मति अब खुफ़िया पोलीस के सम्बन्ध में बदली हुई थी। पहले मेरा विचार था कि हमें उनके साथ घृणा का बर्ताव करना चाहिये। बम्बई से आते हुए हमने ऐसा किया था। अब मेरा विचार है कि ऐसा करना भूल है। वह भी मनुष्य हैं। ऐसी चेष्टा करने से हम जान बूझ कर उनको शत्रु बनाते हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने अनुभव से ही सम्मति बना सकता है और वैसी ही रिपोर्ट करता है। हम कभी नहीं खयाल कर सकते कि कोई मनुष्य भी अपना कर्त्तव्य पूरा करने में मनुष्यत्त्व को परे रख सकता है।

रास्ते में हम बम्बई प्रान्त, सी० पी० यू० पी० देहली और पञ्जाब के इलाकों में से होकर गुज़रे। इलाकों २ की

अपनी २ पोलीस हमें देखने के लिए आती रही और देख भाल कर गिनती करके चली जाता थी, और दूसरे इलाके को रिपोर्ट कर देती थी। हम केवल लोकल ट्रेनों में यात्रा कर सकते थे, इतनी लम्बी यात्रा में हमें कोई ६ दिन लगे, और बड़ी मुश्किल से तीन आने रोज़ की जगह जो कि पोलीस का खर्च देने का दस्तूर था छः आने रोज़ खर्च का मिला था। हमें आवश्यकता हुई, कि जब गाड़ी मिलने में कुछ घण्टे की देर हुई तो दो दिन हमारे आदमियों ने अपना आटा सीधा ख़रीद कर उस दिन खाना खा लिया और दूसरे दिन की रोटियां तय्यार कर लीं।

रेलवे का सफर अति दुखदायी।

मुझे रेलवे का सफ़र देख कर बहुत दुख हुआ। यद्यपि हमने सुना था कि देश के अन्दर जातीय जागृति सी उत्पन्न हो रही है, रेलवे सफ़र ने मेरे हृदय से इस विचार को सर्वथा दूर कर दिया। प्रत्येक स्टेशन पर प्रत्येक गाड़ी में एक विशेष दुखदायी दृश्य देख पड़ता था। अन्दर बैठे हुए लोग स्टेशन पर अन्दर दाख़ल होने वालों को धक्के देते थे। वे स्वभावतः सवार होने का यत्न करते थे, और सर्वत्र बलवा सा दिखाई देता था। बहुतेरे स्त्री और पुरुष अन्दर दाख़ल होने के लिए बड़ी अधीनगी और मिन्नत खुशामद करते थे, पर अन्दर के लोग अपने सुख के लिए दिल पत्थर कर लेते थे। मुझे रेलवे

यात्रा से विशेष घृणा हो गई। मैं तो इसे न केवल जातिय रोग का चिन्ह प्रत्युत जाति के अन्दर घृणा का एक बड़ा कारण समझता हूं। निस्सन्देह रेलें थोड़ी हैं और उन में जगह तङ्ग है। पर अनुमान लगाइये, जिस देश के सहस्रों स्टेशनों पर प्रतिदिन, दिन रात में कई वार, प्रत्येक गाड़ी में एक ही देश में रहने वालों की लड़ाई होती रहती हो, उनके अन्दर सहानुभूति का भाव कहां से आ सकता है। इस यात्रा ने हमारे दिलों से स्त्रियों के लिए आदर का भाव कम कर दिया है, परदेसी के साथ प्रीति का भाव नष्ट कर दिया है। मैंने देखा, यात्री स्त्रियों को धक्के देते थे। एक स्त्री जब उसकी गोद में बच्चा होता है, देवी के सदृश पूजने के योग्य होती है। स्टेशनों पर स्त्रियां गोद में बच्चे लिए इधर उधर दौड़ती जगह तलाश करती हैं, दरवाज़े के पास जाती हैं, कोई अन्दर नहीं आने देता। न रेलवे कर्मचारी यात्रियों से कोई सहानुभूति रखते हैं कि इसका प्रबन्ध कर दें। मैं तो जब यात्रा करता हूं, अन्दर दखल होते हुए दूसरे यात्रियों के मुंह देख कर मेरा जी जलने लगता है। मैं चाहता हूं कि फिर कभी रेलवे में यात्रा के लिए न आऊं।

हमारे शील का रेलवे ने नाश कर दिया।

इस से हमारे जीवन से सारा "डिसिप्लिन" अर्थात् शील का नष्ट हो गया है। प्रत्येक मनुष्य दौड़ २ कर आगे बढ़ना

चाहता है, ताकि आराम से जगह लेले । दूसरों के लिए उसे कोई लिहाज़ नहीं । दूसरे के स्वत्व का विचार न करके अपने सुख और इच्छा को पूरा करना ही सारे आचार और शील की जड़ उखाड़ रहा है । मुझे तो अपने देश और जाति में सब से बड़ी बुराई यही मालूम होती है, कि जलसों में, तमाशों में, रेलवे सफ़र में इनके अन्दर दूसरों के स्वत्व का विचार नहीं पाया जाता ।

अङ्गरेज़ी पबलिक में जीवन का एक सब से बड़ा गुण यह है कि सहस्रों मनुष्य तमाशा देखने जाते हैं । टिकट ख़रीदना होता है, सहस्रों की कतार खड़ी रहती है । बराबर दो दो बारी के सामने आ जाते हैं । टिकट ख़रीद कर आगे जाते हैं । कोई किसी को धक्का नहीं देता । कोई दूसरे का स्थान नहीं लेना चाहता । चाहे घण्टों तक उसे खड़ा रहना पड़े । रेलवे की यात्रा में नया यात्री आता है । सब अपने २ स्थान पर चुप चाप बैठ जाते हैं । ख़ाली जगह पड़ी रहती है । एक शब्द तक सुनाई नहीं देता । वह आता है, बैठ जाता है । जगह ख़ाली नहीं वह चला जाता है । खड़े होने की जगह है, वह चुपचाप खड़ा हो जाता है । हम इस "डिसिप्लिन" का ख़याल भी नहीं कर सकते ।

अंततः लाहौर स्टेशन पर ।

मेरे साथी कुछ लुधियाने में, कुछ अमृतसर में उतर गए, मैं अकेला लाहौर स्टेशन पर पहुंचा । सायङ्काल सात

बजे का समय था। अप्रैल की ३० तारीख़ थी। अभी सूर्य छिपा नहीं था। मैं अपना कम्बल कपड़े लपेटे हुए बाहर निकला, और जा रहा था। मैंने देखा, एक सी० आई० डी० सब इन्स्पैक्टर जिनकी शक्ल से मैं पहचानता था, गाड़ियों में ग़ौर से तलाश कर रहे थे। मैंने समझ लिया और उनको बुलाया "आप किसे देखते हैं ?"

उसने मुझे पहचान लिया, और कहा कि "आप को तो पहचानना नामुमकिन हो गया है" मैंने कहा "ऐसी ही जगह रह कर आया हूं" वे मुझे एक साहिब के पास ले गए, जो कि वहां ही मुझे देख रहे थे। वे डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पोलीस थे, मुझ से उन्होंने पूछा "आप कहां पर जाकर रहेंगे ?" मैंने कहा "मेरी स्त्री यहां पर रहती है, मकान का पता लेकर वहां जाऊंगा, अगर आप को मालूम हो तो वहां ले चलिये" उन्हों ने अफ़सोस किया, और कहा कि, हमें मालूम नहीं और हाथ मिला कर एक दूसरे से हम बिदा हुए।

क्या यह स्वप्न तो नहीं देख रहा।

मैं बाहर निकला। टांगे पर बैठ कर लोहारी दरवाज़े आकर उतर गया। शाम के वक्त अनारकली के इस हिस्से में बड़ी रौनक होती है। लोग आते जाते थे, मैं कम्बल का बिस्तरा बग़ल में दबाए खड़ा था, मैं सोचता था कि जाऊं तो कहां जाऊं। इस समय का लाहौर का दृश्य अपनी आंखों देख कर मैं तो आश्चर्य्य चकित रह गया, मैं सोचता था कि यह

सब स्वप्न तो नहीं, जो मैं देख रहा हूं। क्या इतनी देर में स्वप्न तो नहीं देखता रहा। कितनी देर तक मैं संज्ञाहीन खड़ा रहा, आंखों के सामने तस्वीरें जितातीं थी। मेरा हृदय और ही विचारों से भरा था, क्या बताऊं। कोई ऐसी हालत में से गुज़रा हो, किसी ने इतने आश्चर्य्य जनक परिवर्तन और जीवन व मृत्यु के ऊंच नीच अनुभव किए हों, वह अनुमान कर सकता है। मेरी लेखनी में शक्ति नहीं है कि वर्णन कर सके, कि मैं किस विस्मय के समुद्र में लहरा रहा था मैं नहीं कह सकता, आश्चर्य्य था, आनन्द था, स्वप्न था अथवा मूर्छना था व केवल एक नाटक आत्मा के सन्मुख हो रहा था।

आर्य्य समाज अनारकली की ड्योढ़ी में।

यह एक मंज़िल थी जो कि स्वप्न और वास्तविक अवस्था के मध्य में होती है, जीवन ने स्वप्न से निकल कर दूसरी अवस्था में आना आरम्भ किया, बीच का समय लोहारी दरवाज़े के चौक के एक कोने में खड़ा हुआ गुज़ार रहा था, मैं चौंक सा उठा। मैंने कहा समाज में चलूं। समाज की ड्योढ़ी में खड़ा रहा, मैंने इशारे से एक आदमी को बुलाया, उन से पूछा कि आप भाई परमानन्द की स्त्री का घर बता सकते हैं? वे मेरे साथ चले आये, और उस मकान पर पहुंचा दिया, जहां पर बैठा हुआ मैं अपने आप को यह लिखता हुआ पाता हूं, अन्धेरा सा हो गया था, लोगों को

पता लग गया, मुझे मिलने वाले या देखने वाले आने शुरू हो गए।

धर्मपत्नी से मुलाकात ।

मेरी स्त्री ने मुझे देखा, हैरान हो गई, वह मुंह से कुछ न बोली, उसके हृदय पर क्या बीती होगी, मैं नहीं बता सकता, मुझे मालूम हुआ कि मेरी अनुपस्थिति में उसने बहुत दुख और कष्ट उठाए । थोड़े वेतन पर स्कूल में पढ़ा कर अपनी लड़कियों को पालती रही, लाहौर में एक तङ्ग और गन्दे मकान में रहती रही, पहले पहल लोग मिलने से भी डरते थे, वह लाहौर रह कर यत्न करती रही कि मुझे वापस बुला सके। महात्मा गान्धी और मिस्टर ऐन्ड्रयूज़ जैसे पवित्र पुरुषों को मिल कर उसने मेरे लिए यत्न किया। दो तीन मेरे मित्र हर वक्त उस की सहायता के लिए तैयार रहे जिन के प्रति उसका हृदय कृतज्ञता से भरा हुआ था, कदाचित् इस देवी की बदौलत है कि मैं फिर एक वार इस संसार पर आया कि उसके दुख और सुख में सम्मिलित हो सकूं।

विदा होते समय जेल के सुपरिन्टैन्डैन्ट ने मुझे पूछा कि मैं अब क्या काम करूंगा ? मैं कहता रहा कि मैं कुछ नहीं जानता, मेरा कुछ निश्चय नहीं। जब उसने बार २ पूछा तो मैंने कहा "मेरी स्त्री स्कूल में पढ़ाया करेगी, और कदाचित् मैं उस की जगह घर का काम करूंगा"।

२१—आकर क्या देखा।

मद्रास से चल कर लाहौर देखा, लाहौर की खूबी मुझे कभी २ जेल में याद आया करती थी। कितना, पुराना शहर, जिसे कहते हैं, रामचन्द्र के बेटे 'लव' ने बसाया, वही शहर जहां कि किसी ज़माने में जयपाल राज करता था और जो पराजय का अपमान सह न सका, और राज अपने पुत्र को सौंप कर आप चिता पर चढ़ गया। वही लाहौर जहां की स्त्रियों ने गहने बेचकर और चर्खे कात कर सेना को सहायता दी।

वही लाहौर जहां जहांगीर और शाहजहान आकर रहा करते थे और जिसकी गलियों में गुरु अर्जुन खेला करते थे। जहां कि गुरु अर्जुन और फ़क़ीर मियांमीर आपस में ज्ञान गोष्ठि किया करते थे। जहां गुरु हरगोबिंद ने आकर मियांमीर से मित्रता जोड़ी। जहां भगत छज्जु हुआ, जिसको अब्दालियों से जस्सासिंह (बड़ा) ने जीता। जिस पर महाराजा रणजीतसिंह ने राज किया और सिख एम्पायर की नींव डाली, जहां महाराजा की मृत्यु पर क्या उलट फेर हुए। जहां पर गुलाबसिंह एक सिपाही ने गुलाब दासी पंथ निकाला जिसे मिलने के लिए महाराजा रणजीतसिंह आप जाते थे। जहां पर जल्ला पण्डित, राजा दीनानाथ और बख्शी भगतराम

जैसे साहसी और निडर उत्पन्न हुए, हां वही लाहौर जहां पर स्वामी दयानन्द ने आर्य्य समाज की पक्की नींव रखी, और जहां से आर्य्य समाज ने अपनी अग्नि से न केवल हिन्दुओं को वरं सिख और मुसलमानों को जगा दिया मुझे इसी लाहौर की कभी २ याद आया करती थी। और देखने को जी तरसता था।

लाहौर से अपने गाओं में।

वहां से मैं अपने गाओं को गया। बचपन के हृदय पर संस्कार ऐसे गहरे होते हैं कि वह कभी दूर नहीं होते। जिन गलियों में बालक शुरु में दौड़ता फिरता है, जिन दोस्तों के साथ खेलता है वह गहरे तौर पर हृदय में घर कर जाते हैं और जीवन में बारबार उनकी स्मृति जाग उठती है। उनकी याद हृदय में दुःख उत्पन्न करती है। इसी को वियोग का दुःख कहते हैं। जीवात्मा की अवस्था भी यही है। अपनी वास्तविक अवस्था "आनन्द" से अलग होकर और संसार के बन्धन में फंस कर जब यह आवागमन में भटकता है, तो वास्तव में यह अपनी असली अवस्था को पहुंचने की इच्छा और उस इच्छा के पूरा न होने से दुःख उठाता है। "सत् चित् आनन्द" अवस्था को पुनः प्राप्त कर लेना ही मुक्ति है।

मैंने कुछ देर वहां ठहर कर अपना गांओं देखा। उस की ऐतिहासिक विशेषता केवल इतनी हैं, कि उसका संस्थापक

हमारा बुजुर्ग "बाबा परागा" बाबा नानक के समय से लेकर गुरु हरगोबिन्द के समय तक गुरुओं के साथ रहा। जब गुरु हरगोबिन्द ने शाहजहां के विरुद्ध झंडा उठाया तो बाबा परागा सात जत्थेदारों में से एक था। उसका बेटा मणिदास गुरु तेगबहादुर के साथ, और देहली में गुरुतेगबहादुर के बलिदान से पहले उसका शरीर आरे से चीरा गया। उनकी सन्तान गुरु हरगोबिन्द के साथ रहकर लड़ते और लड़ाई में काम आते रहे।

कश्मीर की यात्रा।

वहां से मैं रावलपिण्डी गया। पिण्डी के मित्रों ने मेरे शरीर को अति दुर्बल देख कश्मीर भेज दिया कश्मीर की यात्रा मैंने पहले भी १९०३ ई० में की थी। इस से पहले कदाचित् सैर करने वालों में स्वामी राम ही जम्मू से पैदल कश्मीर गये थे। मैंने भी केवल एक और साथी के संग केवल एक कंबल लेकर जम्मू से पैदल श्रीनगर और श्रीनगर से मुज़फराबाद और वहां से एबटाबाद की यात्रा की थी। वह सैर बिलकुल साधुओं की सी थी। रास्ते में नाले वर्षा के कारण चढ़ गए थे और हमें बड़े खतरों से गुज़रना पड़ा था। इस बार की यात्रा पिण्डी से मोटरकार पर शुरु हुई। मोटरकार का ड्राईवर बिलकुल नया आदमी था। उसने यह पेचदार सड़क कभी न देखी थी। झूठ बोलने पर कि वह

आगे इधर हो गया है, उसे ले लिया गया। एक अज्ञान को हमने ड्राइवर बना अपने जीवन को उसके पास सौंप दिया। कई बार उसने ठोकरें खाईं! एक और गम्भीर जेहलम नदी दूसरी ओर ऊंचे पर्वत सौ सौ गज़ पर मोड़, तंग सड़कों पर मोटर चलाना बड़ा जोखिम का काम था।

अंतत! वह एक स्थान पर पहुंचकर मोटर न रोक सका और मोटर को टकरा कर तोड़ दिया, इतना शुक्र है कि प्राण बच गए। स्वयं अकेले जाने में भी खतरा था! उनका तो मनुष्य बुद्धि के साथ मुकाबला कर सकता है, परन्तु दूसरे को अपना लीडर बना लेने से वह स्वतंत्रता हाथ से जाती रहती है, और यदि वह लीडर अज्ञान अथवा अयोग्य हो, तो वह अपने आपको और दूसरे साथियों को गढ़े में गिरा देता है। चार पांच दिन हमको रास्ते में एक मुकाम पर ठहरना पड़ा। जब कि दूसरी मोटर मंडी से आई, और हम कश्मीर पहुंचे। कश्मीर प्राकृतिक सौन्दर्य्य में संसार में अपने जोड़ का आप ही है, और न केवल स्विटज़रलैन्ड आदि युरोपियन देशों का मुकाबला करता है, प्रत्युत कई बातों में उन से बहुत बढ़ चढ़ कर है। कश्मीर के भिन्न २ मुकामों की मोटर द्वारा सैर बड़ी तेज़ी और दिलचस्पी से भरी थी। मुझपर तो एक ही बातने गहरा प्रभाव डाला, और वह कश्मीरी ब्राह्मणों की स्त्रियां और उनके बच्चों के मस्तक पर तिलक और गले में यज्ञोपवीत थे।

इन ब्राह्मणों की संख्या कश्मीर में आटे के अन्दर निमक रह गई है। परन्तु किन कष्टों और विपत्तियों में से गुज़र कर इन थोड़े से ब्राह्मण परिवारों ने अपने धर्म की रक्षा की थी, अत्यन्त आश्चर्य जनक था । यूं तो हिन्दुओं पर धर्म की खातिर बहुत अन्याय किया था, परन्तु कश्मीर देश में हद हो गई थी।

हर एक कश्मीरी ब्राह्मण लड़के के मस्तक पर तिलक देख कर मेरा हृदय पूजा के लिए झुक जाता था। और मुझे गुरु तेग बहादुर के बलिदान की याद आती थी। साथ ही गुरु गोबिन्द सिंह का श्लोक याद आता था।

"कीनो बड़ो कलु में साका, तिलक जंजु राखा प्रभु तांका"

वहां पर हमने सुना, कि किसी को तार आई थी कि तिलक महाराज स्वर्ग लोक पधार गये।

कलकत्ता कांग्रेस में।

वहां पर मालूम हुआ कि कलकत्ते में खास कांग्रेस होने वाली है। मुझे शौक था, कि देखूं देश के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ है। मैं वहां से वापस चला और लाहौर से कलकत्ते कांग्रेस देखने के लिए गया। बीस वर्ष के पश्चात् मुझे आंख से कांग्रेस देखने का सौभाग्य मिला। इस कांग्रेस से मालूम होता था कि देश में सचमुच नया जीवन आगया है। और मैंने वह जोश और जीवन के आसार देखे जिनकी

सौ वर्ष तक देखने की आशा न थी। इस परिवर्तन का जन्म दाता महापुरुष स्वर्गवास हो चुका था। उसके शरीर के बराबर चित्र प्लेटफार्म के सामने लटकता था वह पुरुष था, जिसका जीवन कांग्रेस को इस अवस्था तक लाने में खर्च हुआ। कांग्रेस को एक जातीय सभा की पदवी उसने दिलाई कांग्रेस का दुर्भाग्य था, कि वह उसका प्रधान न बनाया गया। जब यह कांग्रेस इस योग्य हुई कि उसकी प्रधानता को अंगीकार कर सकें तो वह इस संसार से चल दिया।

महात्मा गांधी पर सारे देश की दृष्टि।

इस समय जिस मनुष्य पर कांग्रेस की और देश की आंखें लगी थीं, वह महात्मा गांधी था। पंद्रह वर्ष हुए, मैंने महात्मा जी के दर्शन अफ्रीका ट्रांसवाल में अतिथि रूप में किए। एक महीना मैं उनके मकान पर उनके परिवार में रहा, उस समय उनके जीवन के गुण वही थे, जो इस समय सारे संसार के सामने हैं। वहां उनका कार्य्य क्षेत्र संकीर्ण था, परन्तु अफ्रीका के अन्दर थोड़ी सी भारतीय आबादी उन के लिए एक ट्रेनिङ्ग स्कूल थी, जिस में उन्होंने इतने वर्ष साधन और तप करके अपने आपको इस महान् यज्ञ के लिए तय्यार किया। इस कांग्रेस पर गांधी का सिक्का उनकी "ना मिलवर्तन" की तहरीक से लग गया। कांग्रेस यह प्रगट करती थी। कि सारा देश महात्मा गांधी की आवाज़ के साथ था। यदि इस समय को आशा है तो वह केवल महा-

त्मा गांधी पर है। केवल उस के पास भविष्य के लिए संदेश है इस देश के धनवान् और निर्धन, स्त्री और पुरुष, बाल वृद्ध, शहरों के दुकानदार और गांवों के किसान गांधी के नाम पर मस्त हैं। यह निःशङ्कतया कहा जा सकता है, इस समय में कोई ऐसा पुरुष नहीं जिस का लोगों के हृदय पर इतना काबू हो, जितना महात्मा गांधी का; न पिछले समय में कोई ऐसा हुआ है। हिन्दुओं के अवतारों में भी कोई ऐसा नहीं हुआ, और हिन्दु लोग विना किसी झिझक के अवतारों की संख्या एक और बढ़ा सकते हैं। कदाचित् वे उन को कल्की अवतार की पदवी देने पर तय्यार हो जाएं।

महात्मा गांधी में क्या गुण हैं।

प्रश्न हो सकता है, कि उन के अंदर कौनसा गुण है, जिस ने उन को इस पदवी पर पहुंचा दिया; उन की सफलता का रहस्य क्या है?

मैं तो वह रहस्य यह समझता हूं कि पहले दिन से उन का हृदय इतना उदार हो रहा है कि उन्हें सदा से मुसलमानों के साथ विशेष प्रेम रहा है, हम में से बहुतेरे मनुष्य ऐसे हैं जो अपने प्राणों से बढ़ कर कुटुम्ब को प्यार करते हैं, बहुतेरे हैं जो अपनी विरादरी से प्रेम करते हैं और इसी निमित्त मुसलमानों से द्वेष रखते हैं। महात्मा गांधी हैं जिन के हृदय में हिन्दुओं के साथ प्रेम है, परन्तु उन की

मुसलमानों के साथ प्रेम उन से बढ़ कर है। गीता में ज्ञानी की पहचान ही यही कही गई है, कि वह सब को प्रेम की दृष्टि से देखे। महात्मा गांधी इस दर्जे पर पहुंचे हैं, और वे न केवल हिन्दु मुसलमान नकि प्रत्युत मनुष्यमात्र के भ्रातृ भाव के जीवित जागृत उदाहरण हैं।

महात्मा ऐन्ड्र्यूज़ के दर्शन।

मैंने एक बे नजीर अङ्गरेज़ श्रीमान् ऐन्ड्र्यूज़ के बोलपुर शान्ति निकेतन में जा कर दर्शन किये उन्होंने मेरी स्त्री और बच्चों से सहानुभूति दर्साई, मेरे विषय में यत्न किया। अङ्गरेज़ जाति में ऐन्ड्र्यूज़ बे नज़ीर इस लिए हैं कि उन को अपनी जाति और देश का सच्चा प्रेम है। वे हृदय से नहीं चाहते कि अङ्गरेज़ों के विषय में यह कहा जाए कि सारे के सारे अङ्गरेज़ ही अपनी जाति के लिए सत्य और न्यायकी पर्वा नहीं करते। ऐसे उदाहरणों को देख कर चाहे हम नौकर शाही को कितना ही बुरा समझते हों, अङ्गरेज़ जाति से हमारा प्यार वैसा का वैसा बना रहता है।

आर्य्य-समाज पीछे हट रहा है।

मैंने देखा कि आर्य्य-समाज देश के अन्दर पीछे रहता जाता है, आर्य्य-समाज ने इस देश में पब्लिक जीवन का नेतृत्व किया, जब कि सब लोग सोए थे उन को जगाने का

प्रयत्न किया। जब लोग जाग उठे तो देखा कि आर्य्यसमाज पीछे रहा है। स्वामी दयानन्द के हृदय में देश हित था, उन को अपनी जाति की सभ्यता और धर्म से प्यार था; स्वामी दयानन्द जानते थे कि इस देश में की भलाई के रास्ते में नाना मत और पन्थ बड़ी रुकावटें हैं। उन के समय में धर्म के अर्थ यह थे कि मनुष्य विशेष धार्मिक चिन्ह पर चलता रहे, तो वह धार्मिक लीडर बन कर सकता है; चाहे वह साथ साथ देश के साथ कितना ही द्रोह करता हो, देश हित का धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। वे इन धर्मों और मतों के स्थान में एक "धर्म" को लाना चाहते थे, जो नेकी और सचाई का जीवन है, उन्होंने देहली में कैसरी दर्बार अवसर पर सर सैय्यद अहमद और दूसरे हिन्दु लीडरों की एक कांफ्रेंस करके परस्पर एकता की कोई युक्ति निकालनी चाही-चांदापुर के मेले के अवसर पर खुले शास्त्रार्थ द्वारा सत्य का निर्णय करना चाहा। जब देखा कि वे लोग बुद्धि के पीछे चल कर मतों के छोड़ने पर तय्यार न थे तो उन्होंने लाहौर चर्च "आर्य्य-समाज" को स्थापन किया। ताकि नियम-पूर्वक प्रचार करके लोगों को धर्म की सच्चाई का विश्वास दिलाया जावे।

वे देश में एक धर्म स्थापन करके एकता की नींव डालना चाहते थे, महात्मा गांधी मतों को नीचे छोड़ कर केवल "प्रेम" पर एकता बनाना चाहता है।

आर्य्य-समाज के पीछे रह जाने का एक विशेष कारण है, वह यह कि आर्य्य-समाज लीडरों ने.........[फौटी] लाभ की ख़ातिर नियमों को निछावर कर दिया, जिन में सिद्धान्तों को ढीला कर देना पड़ता है; धर्म यह कहता है कि सिद्धान्तों को कभी न छोड़ो, चाहे कितना ही लाभ क्यों न दिखाई दे, मनुष्य का ज्ञान सर्वथा एक देशी है। वह किसी आन्दोलन का प्रभाव नहीं जान सकता, इसीलिए कहा है कि काम करना तुम्हारा अधिकार है, फल का विचार करना तुम्हारा काम नहीं। किसी वस्तु को हम जान कैसे सकते हैं, क्या मालूम है, हम जो एक ख़याल फैला रहे हैं, उस का कल क्या परिणाम होगा; ख़याल धूएं की तरह सुलगता रहता है, अचानक चिङ्गारे निकल आते हैं, और अग्नि का अनुमान नहीं लग सकता; संसार में सारी ख़याल की शक्ति है, ख़याल का राज है; हम भूलते हैं, यदि ख़याल को छोड़ कर हम सांसारिक धन दौलत व भोग ऐश्वर्य्य के पीछे पड़ जाते हैं, जब फ्रेञ्च फ़िलास्फ़र "रूशो" ने एक छोटीसी पुस्तक लिखी उस में बताया कि मनुष्य स्वाभाविक जङ्गली अवस्था में एक दूसरे के बराबर थे, और प्रसन्न थे। सभ्यता फैलाने के साथ यह ना बराबरी फैली और ग़रीबी अमीरी होने से सारे दुःख फैले, अमीर लोग इस ख़याल पर हंसते थे; कारलायिल दूरदर्शी था, उस ने कहा कि जो लोग इस छोटी पुस्तक के ख़याल पर हंसते हैं,

उन के पोतों को चमड़े इस पुस्तक की जिल्दें बांधने के काम आवेंगे, क्रान्ति में यह भविष्य-वाणी सत्य सिद्ध हुई ।

गुरु अर्जुन का लाभ तो इस में था कि जहांगीर बादशाह कथनाऽनुसार ग्रन्थ साहब में हज़रत के लिए कुछ स्तुति के वाक्य दर्ज कर देता, परन्तु ऐसा करना सिद्धान्त से पतित होना था, गुरु अर्जुन ने सिद्धान्तों की रक्षा की। और न केवल लाभ से ही वंचित रहा प्रत्युत प्राण तक दे दिए । जीवन शक्ति सिद्धान्तों में हैं, ख़याल में है, लाभ और सुख में नहीं है, जिसे हमारे चर्म चक्षु देख सकते हैं, और जो हमारी आंखों के सामने आकर अन्धेरा फैला देता है, और हम आगे नहीं देख सकते ।

रक्षा आर्य्य समाज ही करेगा ।

मैं इतना देखता हूं कि मुसलमान देश के पोलिटिकल संग्राम में पक्के मुसलमान बन कर भाग ले रहे हैं । सिख लोग भी पक्के सिख बन कर युद्ध क्षेत्र में आ रहे हैं । उन में जितने काम करने वाले अथवा अपने आप को निछावर कर देने वाले हैं सब अपने २ मत के प्रेमी हैं, केवल हिन्दु हैं जो कि पोलिटिकल काम करते हुए धार्मिक विचार को परे रख देते हैं, मैं चाहता हूं कि हिन्दू जाति के लोग मुसल्मानों से और दूसरों से अपना जाति से बढ़ कर प्रेम करें, परन्तु साथ यह

भी आवश्यक है कि अपने अस्तित्व को भी जीवित रखे। अपने आप को मिटा कर अथवा कमज़ोर करके दूसरों से क्या प्यार करेंगे और उन के लिए अथवा देश के लिए क्या करेंगे ?

मैं समझता हूं कि हिन्दु जाति की सभ्यता और धर्म जो उसका आत्मा है, आर्य्य समाज ने जीवित किया है, और आर्य्य-समाज ही उसकी रक्षा कर सकता है।

॥ इति ॥

हमारे महान पुस्तकालय से मंगावो।

स्त्री शिक्षा की पुस्तकें—हमारी माताएं १॥), सच्ची देवियां ।॥), सच्ची स्त्रियां ।॥), राजस्थानकी वीर रानियां ।॥), वीर और विदुषी स्त्रियों के काम ॥), मैत्री याज्ञवल्क्य संवाद ॥), राजपूतनी का विवाह ।), चित्तोड़ का शाका ।), राजस्थान का इतर २॥), रामायण २॥, प्रेम प्रभाकर १।), हनुमान १॥)

पं० आर्य्य मुनि कृत भाष्य—न्यायार्य्य भाष्य ४), वैशेषिक ३), सांख्य ३), योग १॥), वेदान्त ४), मीमांसा ६), उपनिषदें ६), गीता २॥), बाल्मीकि रामायण ८), महाभारत प्रथम भाग ३), महाभारत द्वितीय भाग ४), मानवार्य्य भाष्य ३।), आर्य्यमन्तव्य प्रकाश १॥=)

भक्ति मार्ग की पुस्तकें—देश पूजा में आत्म-बलिदान, गीतामृत (भाई परमानन्दजी) २), मेरा सन्देश (भाई परमानन्दजी) छप रहा है। सत्स उपदेश माला १), आनन्द संग्रह १), भक्ति दर्पण ॥), कल्याण मार्ग ≡), अथर्ववेद का स्वाध्याय १।), सन्ध्या-योग ।), सन्ध्या-रहस्य ।-), हमारे स्वामी ।-), सीता बनवास ।॥), गुरुदत्त लेखावालि २), पुष्पाञ्जलि॥-) सच्ची शांतिका उपाय ॥), ईशोपनिषद का स्वाध्याय ।॥=), कंवल =)॥, आर्ष-पितृ यज्ञ ॥)

वैदिक धर्म सम्बन्धी सब पुस्तकें मिल सकती हैं।